CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपति शिवाजी

ले० पञ्जाबकेसरी स्व० ला० लाजपत राय

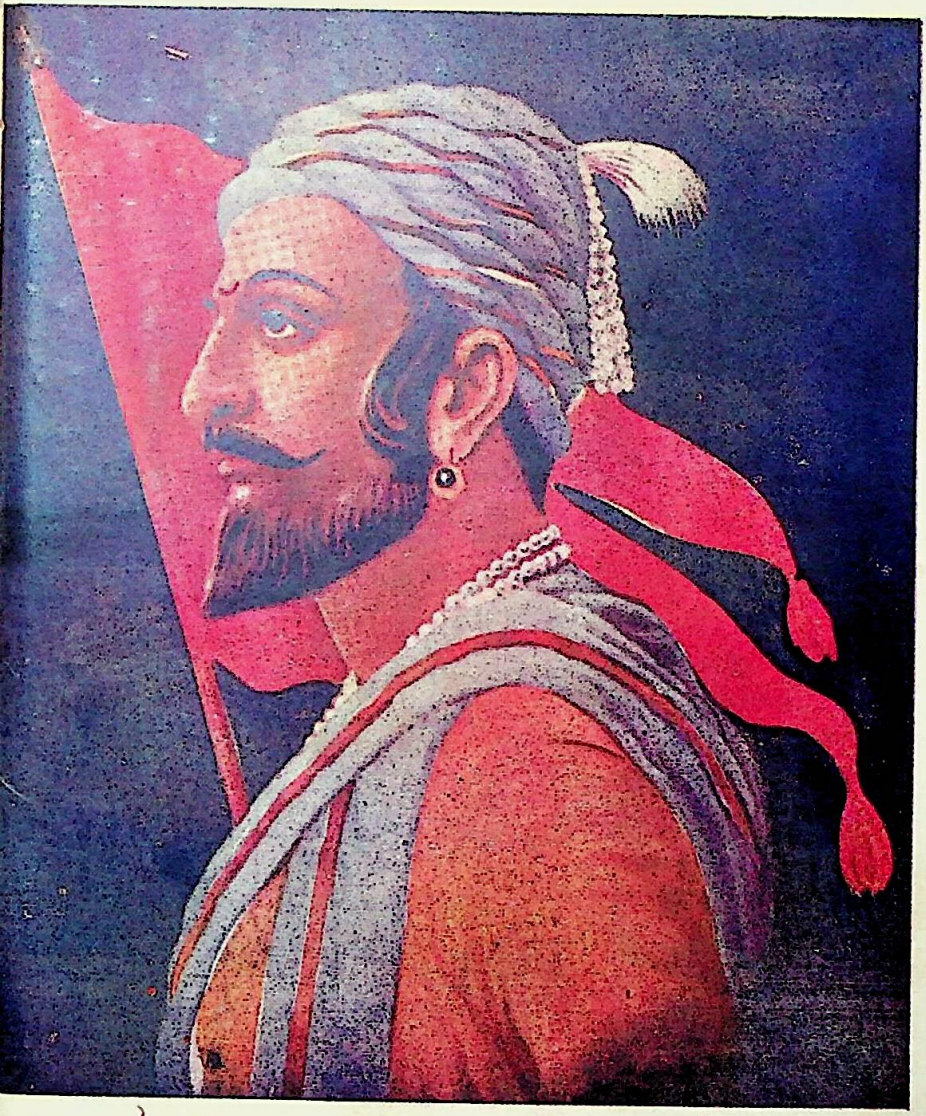

मूल्य १॥) डेढ़ रुपया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपति शिवाजी

लेखक—
स्वर्गीय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

सोल एजेण्ट —
जय भारत साहित्य मण्डल,
नई सड़क, दिल्ली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक
आर्य पुस्तक भण्डार,
नई सड़क, देहली।

मूल्य (॥)

मुद्रक
श्री भानु प्रिण्टिङ्ग वर्क्स,
धरमपुरा, देहली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवेदन

पंजाब केसरी स्वर्गीय लाला लाजपतराय को कौन नहीं जानता ? प्रस्तुत पुस्तक आपकी लेखनी की कृति है, जो वर्षों से उर्दू-हिन्दी में लाखों पाठकों को ज्ञानसामग्री देती रही है। परन्तु फिर भी देश-भक्ति की जो भावना पंजाब केसरी के इन शब्दों में प्रकट की गई है, उसका घर-घर प्रचार होना आवश्यक है। यह विचार कर ही इस उपादेय पुस्तक का यह हिन्दी संस्करण शुद्ध और संस्कृत रूप में पाठकों की सेवा में उपस्थित किया गया है। आज तो प्रत्येक भारतीय, विशेषतः हिन्दू सभ्यता-अभिमानी को अपने पूर्व पुरुषाओं के चरित्र का अध्ययन इसी दृष्टिकोण से करना आवश्यक है। पंजाब केसरी ने इस पुस्तक की भूमिका में जो विचार प्रकट किये हैं, वे आज भी नये हैं। इस विचार धारा को जागृत करने के लिए प्रकाशक का विचार है कि इस माला में अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित की जायं। आशा है कि पाठकों के सहयोग से हम इस उद्योग में सफल होंगे और घर-घर देश-भक्ति का नाद गूंज उठेगा।

जयहिन्द !

विनीत—

लक्ष्मीनारायण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय सूची

सं०	विषय	पृष्ठ
१	भूमिका	५
२	वंश-परिचय	४२
३	शाहजी की कैद और छुटकारा	६०
४	शिवाजी को बांधने का यत्न	६४
५	मुगल साम्राज्य का विरोध	६६
६	अफजलखान की घटना	७३
७	मुगल वंश का सामना	८८
८	राजा जयसिंह को शिवाजी का पत्र	१०५
९	शिवाजी का अभ्युदय	१२६
१०	बीजापुर और गोलकुण्डे की अधीनता	१३०
११	पुनर्विजय और अभिषेक	१३२
१२	कर्नाटक पर धावा	१५३
१३	मृत्यु	१६२
१४	शिवाजी का चालचलन	१६३
१५	शिवाजी का राज्य-प्रबन्ध	१६८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

बुल बुल की चमन में हमज़बानी* छोड़दी ।
बज़्म शायरा† में शेर ख्वानी× छोड़दी ।।
जबसे दिलजिन्दः× तूने हमको छोड़ ।
हमने भी तेरी राम कहानी छोड़दी ।।

किसी जाति के लिये उसके अपने इतिहास से अधिक बढ़कर कोई विषय अध्ययन योग्य नहीं होता और विशेष करके उस जाति के लिए जो उन्नति के उच्चशिखर से लुढ़क कर अवनति के गढ़े में पड़ी हो किन्तु हो अवनति में भी अद्वितीय।

पूर्व समय में जितनी सभ्य जातियां थी, कि जिनमें से अब कुछ ही दिखाई देती हैं। कोई पूछे कि कहां है अब वह जाति जिसकी सभ्यता के चिन्ह काबुल और बेनवा में दिखाई देते हैं, तो इतिहास इसका कुछ उत्तर नहीं देता। यदि पूछा जाय कि कहां है वह जाति जिसने मिस्र के मीनार बनाये और जिसकी सभ्यता मिस्र के खन्दकों और ग़ारों से निकल रही है तो भी कुछ उत्तर नहीं मिलता। कहां हैं वे ईरान निवासी जिनपर केखुसरों कैकवाद आदि शासन करते थे। प्राचीन समय की सभ्य जातियों में यदि कोई जाति इस समय भी अपनी सभ्यता की रक्षा किये हुए स्वतंत्र है तो वह चीन है, माना कि उसकी अधोगति की सामग्री भी तैयारी दीखती है। यूनान और रूम

---

* वार्तालाप †कविसभा × कवितापाठ × वीरहृदय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरकर संभल गये। प्राचीन मैक्सिकों के निवासियों का कुछ पता नहीं। इसी प्रकार कदाचित् और भी अनेक जातियां थी जिनके खण्डहर भी इस समय दिखाई नहीं देते और जिन जातियों के कुछ चिन्ह मिलते हैं फिर वे स्वयं संसार में दृष्टिगोचर नहीं होती। इन जातियों के अतिरिक्त एक और जाति थी जो अति सभ्य होकर गिरी, वह समस्त संसार में उस समय शिरोभूषण थीं। यह उस समय का जिक्र है कि जब वर्तमान सभ्य जातियों का पता भी न था, जिसका शास्त्र पूर्ण, जिसकी वाणी अत्यन्त शुद्ध, जिसका धर्म अतिशय पवित्र, जिसकी फिलासफी बड़ी गहरी, जिसका शील महाशीतल जिसकी वीरता अद्वितीय और जिसकी राजनीतिक योग्यता नितान्त स्वार्थ से शुद्ध थी। जहां तक इतिहास से ज्ञात होता है यह जाति बहुत प्राचीन है। इतिहास का कोई अङ्ग ऐसा नहीं जिसमें इसकी सभ्यता और उन्नति का वृत्तान्त न लिखा हो।

इस जाति की भाषा से समस्त भाषायें जो इस समय साहित्य की मूर्ति हैं निकली। इस जाति से संसार ने धर्म्म सीखा, इसी जाति से संसार ने विद्या पढी, शिल्प सीखा इसके पश्चात् बहुत सी जातियां उत्पन्न हुई और नष्ट हुई किन्तु इन सब जातियों की वह दयालु माता अब तक बहुत से परिवर्तनों के होते हुये भी जीवित है, माना कि बहुत ही जीर्ण हो चुकी है। कुछ लोग इस दावे को लचर समझते हैं किन्तु स्मरण रहे हमारा दावा हमारे धार्मिक विश्वास पर निर्भर है और प्रसन्नता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कि पाश्चात्य विद्वानों की जांच (अनुसंधान) हमारे धार्मिक दावे की पुष्टि करती जाती है। यदि संस्कृत या सस्कृत जैसी अन्य भाषा समस्त इण्डोआर्य्यन की आविष्कर्त्री (माता) मानी जा चुकी है जिसमें योरुप की सब भाषायें और फारिस जिन्द पश्तो आदि भी सम्मिलित हैं तब कदाचित वह समय भी आजाए जब शेष अन्य भाषायें भी इसी की सन्तान सिद्ध हो जायें। भारत से समस्त मत फैले, यह बात स्वयं संसार के बड़े बड़े मतों की पुस्तकें देखने से स्पष्ट होती है। बौद्धमत जिसके मानने वाले अधिक मनुष्य हैं, इस भूमि में उत्पन्न हुआ और यहीं से अन्य देशों को गया, वैदिक धर्म और वैदिक फिलासफी की मुहर उसपर लगी हुई है। जर्दश्त का मत भी वैदिक धर्म से बहुत कुछ मिलता है, यहां तक कि इस मत की प्रधान धर्मपुस्तक में आर्य जाति की पवित्र पुस्तकों का वर्णन है। ईसाई धर्म की आरम्भिक दशा के निमित्त अनुसन्धान किया गया है उसका मिलान भी इसी ओर है, वह भी इसी भूमि से गया है। डाक्टर हेयर साहिब की सम्मति जो अनुसन्धान पर निर्भर है यदि सत्य है तो वह लिखते हैं कि इस्लाम धर्म के नेता ने सबसे पहले सीरिया की धार्मिक सभाओं में धार्मिक वादविवाद में मनोरंजकता प्रकट की। कुछ ईसाईयों का यह दावा है कि बौद्धधर्म और ईसाई धर्म में इतनी समानता है कि बौद्ध धर्म ईसाई धर्म से निकला है परन्तु यह भली प्रकार सिद्ध हो चुका कि बौद्धमत आर्य्यावर्त में उस समय से पहले उत्पन्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ था जबकि संसार को ईसाई धर्म का वहम भी न था। इस लिये यह फल निकलता है कि बौद्ध धर्म से ईसाई धर्म ने जन्म ग्रहण किया। संसार की सब से पहली पुस्तक जिसका आजतक पता चलता है हिन्दुओं के पास है, संसार की सबसे पुरानी और पूर्ण भाषा जिसका पता चलता है हिन्दुओं के पास है। अस्तु इससे बढ़कर और कौन से प्रमाण की आवश्यकता है कि यह जाति सब से प्राचीन जाति है कदाचित् आर्य्य जाति को सबसे प्राचिन होने का गौरव प्राप्त न होता जब तक कि वह इसके साथ यह भी कह सकते कि उनकी जाति केवल सबसे पुरानी ही न थी, प्रत्युत प्राचीन जातियों में सबसे अधिक सभ्य, सबसे अधिक विद्यावाली और धार्मिक जाति थी। इसी जाति ने गणित विद्याका आविष्कार किया और इसी ने ज्योतिष विद्या को प्रकट किया। परन्तु इससे क्या ? आज वही जाति अधोगति को प्राप्त हो रही है !

ऐसी जाति के लिए अपने इतिहास से बढ़कर कोई और पाठ्य विषय नहीं हो सकता। शोक है कि वह जाति इतनी सभ्य थी किन्तु इसके पास कोई श्रेणीबद्ध इतिहास नहीं। कुछ विद्वानों का कथन है कि इसने इतिहास लिखने की ओर ध्यान ही नहीं दिया। कुछ कहते हैं कि इस जाति के पुस्तकालय पोलीटिकल परिवर्त्तनों में नष्ट होगये। कदाचित् दोनों प्रकार की सम्मतियां किसी किसी अंश में ठीक हों किन्तु यह सब होते हुये भी हिन्दू जाति इतिहास सामग्री और ऐतिहासिक जिन्होंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपरिचित नहीं है और यदि हिंदू विद्यार्थी अपनी पवित्र भाषा (संस्कृत) को अवलोकन करके इन ऐतिहासिक चिन्हों की ओर ध्यान दें तो कुछ संशय नहीं कि हम अपनी जाति का इतिहास पा सकते हैं। उन्नति के इतिहास के लिये तो हमें संस्कृत का अवलोकन आवश्क है परन्तु अधःपतन की कहानी कहां से मिले ? जबतक हम संस्कृत के पुस्तकालयों का निरीक्षण कर उन्नति का इतिहास लिखें तब तक हमारे भाई क्या ? ये दो प्रश्न हैं, जिन्होंने प्रायः मुझको और मेरे भाइयों को चिन्ता में डाला है। वास्तव में यह बात है कि आज कल जो इतिहास हिन्दू बालकों को पढ़ाया जाता है वह अत्यन्त अविश्वसनीय और पक्षपात से पूर्ण है। उन्नति के इतिहास की सत्यता के मार्ग में तो वे कठिनाइयां हैं जो अन्य जाति के मनुष्यों को संस्कृत जैसी क्लिष्ट भाषा के अध्ययन में होनी चाहिये। संस्कृत में अनेक परिवर्त्तन हुए और विश्वसनीय अनेक संस्कृत ग्रन्थ नष्ट हो गये इसी कारण हमदर्द से हमदर्द लेखक ने भूल की, और उन लोगों का तो कहना ही क्या है जो कि संस्कृत को पढ़ने से पूर्व ही यह समझ बैठते हैं कि यह एक अशिक्षित जाति की भाषा थी और जिसने कभी किसी प्रकार की उन्नति नहीं की।

उन्नति के इतिहास (अर्थात हमारे उन्नति समय के इतिहास) के लिये हमारे पास अनेक पाश्चात्य विद्वानों के लेख हैं क्योंकि मुसलमानों ने इस ओर बहुत कम ध्यान दिया। इतिहास की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खोज करने वालों में दो प्रकार के पाश्चात्य विद्वान् हैं जिनका मैंने ऊपर जिक्र किया है। पहले अनुसन्धानकर्त्ता जिन्होंने बिना किसी पक्षपात के उन्नति का इतिहास लिखा है बहुत कम हैं और अनुसन्धानकर्त्ता तो बहुत ही कम है! शोक यह है कि इन अन्तिम इतिहास लेखकों की लिखी हुई पुस्तकों तक हमारे विद्यार्थियों की पहुंच बहुत कम है। जो इतिहास आजकल पढ़ाया जाता है ऐसा दुरंगा है कि उसका सिर पैर नहीं मिलता। कुछ हमारे देश के विद्वानों ने भी देश के प्राचीन इतिहास लिखने की ओर ध्यान दिया है, परन्तु शोक है कि उन्हों ने स्वयं अनुसन्धान करने के बजाय पाश्चात्य विद्वानों की ही सम्मति पर अपना मत निर्धारित किया है। निदान हमारा उन्नति का इतिहास अभी तक अधूरा ही पड़ा हुआ है। हिन्दू विद्यार्थियों का धर्म है कि वे इस कमी को पूरा करें। जबतक इतिहास हमारे हाथों से लिखा जाय उस समय तक हमारे लिए आवश्यक हैं कि वर्तमान अनुसन्धान पर ही अपनी जाति के नवयुवकों के लिए ऐसा इतिहास लिखें जिसमें पक्षपात रहित न्यायप्रिय और बेलगांव लेखकों के परिश्रम के फल भरे हुए हों। जिसको पढ़कर हमारे बालक और कुछ नहीं तो उस उच्च-शिखर का अनुमान ही लगा सकें जहां से उनके पुरखा गिरे थे।

उन्नति के इतिहास का अध्ययन जितना आवश्यक है उतना ही यह भी आवश्यक है कि अधोगति के इतिहास की ओर ध्यान दिया जाय। यह इतिहास तो बहुत ही निकृष्ट ढंग से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिखा गया है। ये इतिहास प्रायः मुसलमानों द्वारा लिखे गये हैं और उनमें स्थल स्थल पर पक्षपात और तरफदारी के प्रमाण मिलते हैं। इसमें लेखकों का अपराध नहीं, जिन दरबारों में रहकर वे पारितोषिक पाते थे, जिन लोगों को प्रसन्न करने के लिये वे इतिहास लिखे जाते थे, जिस अभिप्राय से वे वृत्तान्त लेखनीबद्ध किये जाते थे, वे कारण थे जो उनको खुशामद से भरे इतिहास लिखने के लिए विवश करते थे। स्थल स्थल पर उन इतिहासों में आत्मश्लाघा और पक्षपात के चिन्ह मिलते है और म्लेच्छों की बीरता, उनकी हिम्मत और विजय के वृत्तान्त अत्यन्त जोरदार शब्दों में लिखे गये हैं। जहां कहीं हिन्दुओं ने जय भी पाई है वहां उसे चालबाजी और अन्याय कारणों पर निर्भर किया है। अनेक स्थल पर हिन्दुओं को 'डग' (कुत्ता) 'काफिर तथा भीरु शब्दों से याद किया गया है। कहीं वीर एव जाति के निमित्त प्राण देने वाले को डाकू लुटेरा बताया, गया है निदान जिस प्रकार बना है हिंदुओं की वीरता को भीरुता में परिवर्तित किया गया है। मुसलमान लेखकों का क्या अपराध है जबकि वर्तमान समय के पश्चात्य विद्वान् भी इस दोष से मुक्त नहीं हैं। योरोपियन जातियों के युद्ध में जो युद्ध-समाचार संवाददाता अपने देशों को भेजते हैं, वे भी इसी प्रकार अत्युक्तियों और पक्षपात से भरे होते हैं। प्रायः अंग्रेज लेखकों ने अरबी पाशा को अन्यायी एवं बरमा के वीरों को डाक शब्द से याद किया है। यदि अंग्रेज जैसी सभ्य जाति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन लोगों की जो अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये प्राण दें डाकू आदि कहने के दोष से लिप्त हो सकती है तब बेचारे मुसलमान लेखकों का क्या अपराध है। देशप्रिय सज्जनों को दोहरी लड़ाई करनी पड़ती है, प्रथम अपनी जाति और देश के बाहरी शत्रुओं से और दूसरे अपने ही में देशद्रोहियों तथा अन्य प्रकार के शत्रुओं से। संसार में कोई जाति दूसरी जाति के आधीन नहीं हो सकती जब तक कि उसने ट्रेटर (देश घातक) न हों। इन देशघातकों की उपस्थिति देशोद्धारकों के मार्ग में अधिक कठिनाइयाँ उपस्थित कर देती हैं, विवशतया देश सेवकों को दोहरा काम करना पड़ता है। उनकी सफलता के लिये आवश्यक है, कि वे इन देशघातकों का बल न बढ़ने दें, जब वे सिर उठावें तभी उनका बल नष्ट करदें। निदान उनको ऐसे घातक लोगों और शत्रुओं को तंग करने के लिये नाना प्रकार के ढंग रचने पड़ते हैं। यदि वे लूटमार भी करते हैं तब इसलिये नहीं कि वे लूटमार के धन से स्वय धनवान् बनें प्रत्युत इस अभिप्राय से कि अपने शत्रु को बलहीन करें, उनके सामान को लूट ले जायं और जहां से उनको सामान मिल सकता हो उस स्थान को सामान से रिक्त करदें। योरपियन जनरलों में इस प्रकार की कार्यवाही सिपाहियों का कर्त्तव्य या फन समझा जाता है लेकिन दूसरों की यही कार्यवाही डाकूपन के नाम से प्रसिद्ध की जाती है, जबकि आजकल की सभ्य जातियों में इस प्रकार की युद्ध सभ्यता है तब हम मुसलमान लेखकों पर क्या शोक प्रकाश कर सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसंगवश हमको इतना लिखना पड़ा। वास्तव में प्रश्न यह है कि हम अपनी अवनति का इतिहास कहां से पढ़ें क्योंकि हमारे लिये आवश्यक है कि हम उन कारणों पर विचार करें जिनसे हम इस अधोगति को प्राप्त होगये और विशेषकर उसके बाद के वृत्तान्तो पर भी ध्यान दें जिनके कारण हम इतने समय तक अवनति के गढ़े में पड़े रहे, इस विषय का हमारे लिये खोज निकालना बहुत जरूरी है। दुर्भाग्य से मुसलमानों की लिखी हुई पुस्तकों के अतिरिक्त बहुत कम सामग्री हमारे पास उपस्थित है, एतत्कालीन इतिहास की समस्त पुस्तक जो हमारे बालकों के हाथ में दीजाती हैं इन्हीं मुसलमानी इतिहासों की नींव पर चुनी गई हैं। इन मुसलमानी इतिहासों में हमें एवं हमारी जाति को अत्यन्त डरपोक सिद्ध करने की चेष्टा की गई है। जहां कहीं हमारी जाति ने विजय भी पाई है उसको भी दगाबाजी और बेईमानी की बदौलत बतलाया है जो भीरुता से भी बढ़कर है कुछ योरोपियन विद्वानों ने इस बात को स्पष्टतया खोलकर लिखा है और हिन्दुओं की वीरता की प्रशसा की है। कुछ अंगरेज लेखकों ने मुसलमानी इतिहास ही को सच समझ कर उसका अनुकरण किया है। किन्तु यह विलक्षणता है कि जहां घर में लगी है वहां तत्काल उन इतिहासों को अविश्वसनीय ठहराने के लिये तैयार हो गये हैं। ग्रांटडफ साहब एक प्रसिद्ध लेखक हैं उन्होंने प्रसिद्ध महाराष्ट्र जाति का इतिहास लिखा है। उन्होंने अनेक स्थलों पर उन आक्षेपों को जो मुसलमान लेखकों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने हिन्दुओं पर लगाये थे सच माना है किन्तु जहांपर फरिश्ते का लेखक लिखता है कि 'सन् १८७१ ईसवीं में पुर्तगाल निवासियों ने धोके से विजयपुर और अहमद नगर के बादशाहों पर विजय प्राप्त की और पुर्तगाल निवासियों ने मुसलमान सेना के नायकों को शराब पिला पिलाकर उन्मत कर दिया' वहां पर मि० ब्रान्टडफ साहब इससे सहमत नहीं हैं और कहते हैं कि प्रायः मुसलमानों ने जब कभी हार मानी है तब ऐसी शिकिस्त को दगाबाजी के सिर मढ़ दिया है। फरिश्ता कितना विश्वसनीय है इसके लिये एक योग्य अंगरेज लेखक की यह सम्मति पर्याप्त होनी चाहिये। खाफीखां एक और लेखक हुआ है जिसके इतिहास से बहुत सहायता ली जाती है वह तो प्रायः हमारे बहादुरों को 'सग' (कुता) ही लिखता है। क्या ऐसे आदमयों के लिखे हुए इतिहास हमारे बच्चों को हमारी अवनति का सच्चा इतिहास बतला सकते हैं? शोक कि जो इतिहास आजकल पढ़ाये जाते हैं किसी स्वतन्त्र लेखक के अनुसन्धान द्वारा नहीं लिखे गये हैं और आवश्यकता है कि हिन्दू अपनी अवनति के इतिहास को स्वयं लिखें, अब इतिहास लेखकों की पुस्तकों से सहायता लें और हिन्दुओं की लिखी हुई इतिहास पुस्तकें खोजें, यद्यपि मुझको बहुत सन्देह है कि कुछ हिन्दुओं के लिखे हुए इतिहास मुसलमानी इतिहासों से भी गिरे हुए होंगे क्योंकि जो लेखक किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ लिखता है यह कभी सत्य की ओर ध्यान नहीं देता प्रत्युत पारितोषिक की ओर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी दृष्टि लगी रहती है, तो भी ऐसे इतिहास मिलेंगे जो किसी इनाम के लोभ से नहीं लिखे गये, इस काम में अङ्गरेजी इतिहास वेत्ताओं ने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया है इसके लिये हम उनके चिरकृतज्ञ हैं। कौन हिंदू है जो टाड साहब के राजस्थान को पढकर उनकी विद्वता के लिये कृतज्ञता प्रकाश न करेगा ? यदि प्रत्येक राजा महाराजा अपने अपने इलाके का इतिहास टाड साहब के राजस्थान से चुनले तब आशा है कि हिंदू बालकों को अपने पुरखाओं की वीरता की कहानी पढ़ने को मिल जाय जो वीरता उन्होंने विजय शील जाति के सम्मुख अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिये दिखलाई।

दक्षिण में एक और जाति है जो सदैव अध्ययन शील रही और जिसके पास अनेक भागों में अपना और अपनी जाति का इतिहास प्रस्तुत है। मेरा सकेत मरहठा जाति की ओर है, मुझे आशा है कि इसी प्रकार हिंदुस्तान के अनेक भागों में अन्य हिंदू जातियों के पास भी अपनी अपनी अवनति के इतिहास किसी न किसी अश में मौजूद होंगे यदि इन सबको एकत्र किया जाय तो इस विशाल किंतु गिरी हुई जाति का इतिहास तैयार हो सकता है। आजकल प्रायः यह देखा जाता है कि जिसका जी चाहता है वह हिंदुओं पर बुजदिली का दोष आरोपित कर देता है, हमारे शासक हमको बुजदिल कहें तो हानि नहीं क्योंकि उनका मतलब है, मुसलमान भाई भी यदि हमको बुजदिल बतावें तो भी कुछ हानि नहीं क्योंकि उनको हमपर आक्षेप करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभीष्ट है किंतु विलक्षणता यह है कि स्वयं हिंदू जाति को अपनी भीरुता का कुछ विश्वास सा होगया हैं क्योंकि प्रथम तो मकतबों में मुल्लाओं ने, तत्पश्चात् स्कूलों में वर्नाकुलर टीचरों ने यहाँतक कि कालिजों में भी अङ्गरेजी इतिहासकारों ने हमको यही सिखाया है कि हमारी जाति परोक्ष का बिचार करने वाली होने के कारण से कायर रही है, परन्तु परोक्षदर्शिता एवं कायरता पर्यायवाची शब्द नहीं है। यदि अंगरेज जाति हर्बर्ट स्पेंसर एवं डार्विन आदि फिलास्फर (दार्शनिक) उत्पन्न करके बहादुर तथा दिलेर रह सकती है, यदि जर्मनी शोपनहार जैसे फिलास्फर उत्पन्न करके सबसे बड़ी लड़ाका जाति संसार में हो सकती है, एवं अन्यान्य जातियां भी सुकरात, अफलातून, अरस्तु, हैगल, डनी, शिलर, गेटे, मिल्टन जैसे दार्शनिक और कवि उत्पन्न करने पर भी शूर रह सकती हैं, यदि ईसाई जातियां ईसा की इस शिक्षा के होते हुए भी कि यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ लगाए तब दूसरा गाल सामने करदो वीर हो सकती हैं, यदि मुसलमान जातियां भी सूफियों की अद्वैतवाद की शिक्षा प्रचारित होते हुए और विशेषतः—

"सब काम अपना रखना तक़दीर के हवाले।
हिम्मत जो हैतो यह है तदवीर है तो यह है॥"

शूरवीर रह सकती हैं तब हमें कोई कारण नही दीखता कि हिंदू क्यों अपनी दार्शनिक विद्वता के कारण अपनी शूरता खो बैठें? यह तो केवल हेत्वाभास है। वह इतिहास जिसके विश्वसनीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होने के वृत्तान्त मैंने ऊपर बतलाये क्या साक्षी देता है ? विपक्षी की साक्षी जितनी हमारे (हक़) में हो उतनी ही सब से उत्तम साक्षी है जो हमारे लिये लाभदायक हो सकती है क्योंकि उसपर हमारे पक्षपाती होने का आक्षेप नहीं हो सकता। जो जाति गिरे हुये दिनों भी राजा कर्ण, भूराबादल, राणा सांगा, प्रताप, जयमल, फत्ता, दुर्गादास, शिवाजी, गुरु अर्जुन, गुरु तेगबहादुर, कुरु गोविन्दसिंह, नलुआ, फूलसिंह आदि २ सहस्रों शूरवीर उत्पन्न कर सकती हैं वह जाति कभी कायर कहलाने योग्य नहीं, जिस देश की स्त्रियों ने आरम्भकाल से आजतक अनेक अवसरों पर केवल उत्तमोत्तम उदाहरण ही नहीं दिलाये किन्तु जाति का महत्व दिखाकर हिन्दू जाति की वीरता का परिचय दिया है, सैकड़ों ने अपने हाथों से अपने पति, बान्धव और पुत्रों की कमर में शस्त्र बांधे और अपने सम्मुख उनको युद्धक्षेत्र में काल का ग्रास बनता हुआ देखा किन्तु उन वीर रमणियों की आंखों से अश्रुपात नहीं हुआ। अनेक वीर बनिता स्वयं पुरुषों का वेष धारण कर अपने धर्म और जाति की रक्षा के निमित्त युद्धक्षेत्र में लड़कर सफल मनोरथ हुई और लाखों ने अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा के लिये दहकती हुई प्रचण्ड अग्नि में प्रवेश किया।

हिन्दुओं की अवनत दशा का इतिहास भी उनकी धर्म-पवित्रता एवं शूरता का पर्याप्त प्रमाण है। इसमें संदेह नहीं कि इस जाति ने इस समय अनेक कायर देशघातक, जाति के शत्रु, अधर्मा, विश्वासघाती उत्पन्न किये जिन्होंने अनेक बार धर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और जाति को सत्रुओं के हाथ बेचा किंतु ऐसी दशा में, इस अधर्म की मझधार में, ऐसी विपत्तियों में, इस्लामी तलवार के नीचे भी यदि हमारी जाति इस प्रकार शूरवीर उत्पन्न करती रही और अधिकतया अपने धर्म कर्म पर स्थित है तब यह सबसे बड़ा प्रमाण इसकी शूरता का है जिसकी उपमा संसार में दृष्टि-गोचर नहीं होती। क्या कोई दूसरी जाति भी मुसलमानों के धार्मिक जोश, उनकी वीरता, उनकी हिम्मत और उनकी तलवार के सम्मुख ठहर सकती थी? एक सहस्र वर्ष पर्य्यन्त ऐसे कठोर शासकों के शासनकाल में रहते हुए भी आज २० करोड़ हिन्दू अपने बाप दादा के धर्म पर स्थित हैं, मुसलमानी आबादी का बहुत बड़ा भाग भी उन्हीं हिन्दुओं की संतान है जो तलवार के जोर से या और किसी प्रकार के लोभ से या अपनी अनिष्ट इच्छा पूरी करने के लिये मुसलमान बनाया गया था। हिन्दुओं की शूरता या कायरता के निमित्त कुछ सम्मति स्थिर करनी हो तो हिन्दोस्तान और योरोपीय इटली के इतिहास का मुकाबला करना चाहिये, इतनी और ऐसी जबरदस्त लड़ाका शक्तियां जिनसे संसार कांपता है, अपनी सहधर्मिणी ईसाई प्रजा की सहायता के लियें तय्यार है और चिरकाल से उनकी सहायता कर रही है परन्तु फिर भी आज हजार वर्ष से ऊपर हुए एशिया तक और योरोपियन टर्की के ईसाई तक तुर्कों के पंजे से नहीं निकले। सौ वर्ष पहिले समस्त एशियाई और युरोपियन टर्की में कोई भाग भी ईसाई आबादी का ऐसा न था जो स्वतन्त्र हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सैकड़ों वर्षों तक टर्की में कोई स्वतन्त्र ईसाई राज्य दिखाई नहीं दिया था, निस्सन्देह उन्नीसवीं शताब्दी में अन्य योरोपियन शक्तियों की सहायता से कुछ टर्की के हिस्से स्वतन्त्र होगये, किंतु फिर भी इसे टर्की के ठीक मध्य में कभी कोई स्वतन्त्र ईसाई राज्य दिखाई नहीं दिया, यह दृश्य हिन्दोस्तान में भी दिखाई देता रहा कि कठोर से कठोर शक्तिशाली से शक्तिशाली मुसलमान बादशाह के शासनकाल में भी कभी समस्त हिन्दू मुसलमानों की प्रजा नहीं हुए। ठीक मुसलमानी राज्य के उन्नत काल में भी हिन्दोस्तान के मध्य में, उत्तर में, पश्चिम में, स्वतन्त्र राज्य मौजूद रहे हैं जिन्होंने इस्लामी शमशेर के सम्मुख अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रक्खा है।

यह बात तो मुसलमानी इतिहासों से भी स्पष्टतया सिद्ध है कि आरम्भिक मुसलमानों को अपने पहले ही हमलों में ज्ञात होगया था कि उनका मुकाबला एक बलशाली जाति से है, यद्यपि आपस की फूट और धर्म की हानी होजाने के कारण हिन्दू एक सूत्र में नहीं थे जो उन हमला करने वालों को नीचा दिखाते, तथापि ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त तक मुसलमान लुटेरों की तरह देश में आते और माल असबाब लूटकर चले जाते थे। महमूद गजनवी के समय में कुछ ही किलों में मुसलमान अधिपति थे और वे भी कई बार छीने गये थे। सबसे पहला हमला करने वाला, जिसने हिन्दुओं की स्वतन्त्रता का नाश किया और मुसलमानी राज्य की हिन्दोस्तान में नींव डाली, शहाबुद्दीन गोरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था और सबसे पहला मुसलमान बादशाह जो देहली के सिंहासन पर बैठा वह कुतुबद्दीन एबक था जो गुलामों के खानदान का पहिला बादशाह हुआ है। गुलामी खान्दान का समय १२०५ या १२०६ ई० से है।

बारहवीं शताब्दी से लेकर सोलहवीं शताब्दी के कुछ भाग तक जब अकबर देहली के तख्त पर बैठा असंख्य हिन्दू राजा स्वतन्त्र थे। भारत के मान चित्र में राजपूताना एक बहुत विशाल क्षेत्र है जो पहले इससे भी अधिक था जितना कि अब है। सबसे पहला मुसलमान बादशाह जिसने राजपूताने पर प्रथम वार आक्रमण किया शहाबुद्दीन खिजली था, जो १२७५ ई० में देहली के तख्तपर बैठा और जिसने चौदवीं शताब्दी के आरम्भ में चित्तौड़ वंशपर आक्रमण किया परन्तु बादशाह के लौटते ही चित्तौड़ फिर स्वतन्त्र होगया और इसके पश्चात् अकबर से पहले किसी बादशाह का यह साहस न हुआ कि चित्तोड़ की ओर दृक्पात करे। अकबर के साथ युद्ध करने में महाराणा प्रताप ने जो वीरता दिखाई वह समस्त संसार जानता है। प्रताप की जैसी हार हुई ईश्वर ऐसी हार प्रत्येक वीर को प्रदान करे, कौन हिन्दू है जो राणा प्रताप की वीरता के वृत्तान्त को पढ़कर गौरव नहीं करता होगा। भाग्यवश राणा सांगा अपने ही एक सेनाध्यक्ष के कारण बाबर के मुकाबले में अशक्त रहा, वरन् कुछ असम्भव न था कि मुसलमान राज्य की उसी समय इतिश्री होगई होती, विधि के विधान में किसी की शक्ति नहीं, जो हेरफेर कर सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राणा सांगा की पराजय ने देहली के सिंहासन पर मुगल खान्दान वालों को ला बिठाया। इधर यह मुगल वंशधारियों के राज्य का आरम्भ हुआ उधर पंजाब देश में एक भक्त ने जन्म लिया जिसके धर्मोपदेशकों ने पंजाब में एक ऐसा बलवान पक्ष उत्पन्न कर दिया जिसने मुगलवंश को नष्ट करनेमें एक बहुतबड़ा भाग लिया। बाबर ने मुगलवंश के राज्य की नीव डाली और उसके शासनकाल में बाबा नानक ने हिन्दुओं के धार्मिक विषयों में कुछ परिवर्त्तन किया, जिसका फल गुरु गोविन्दसिंह और उनके मतानुयायी वीर हुए। अन्यान्य राजपूत जातियां भी अकबर से पहले पूर्णतया परतन्त्र नहीं थीं, परन्तु राजपूताना ही देश का इतना बड़ा खण्ड नहीं था जो मुसलमानी राज्य के आरम्भ होने के बाद भी बहुत दिनों तक बल्कि ३०० या ३५० वर्ष तक प्रायः स्वतन्त्र रहा, प्रत्युत उधर एक और बड़ा देश का भाग था जो ४०० मील चौड़ा और प्रायः ३०० से ४०० मील तक लम्बा था जो चौदवीं शताब्दी के अन्त तक स्वतन्त्र रहा और किसी म्लेछ को उस ओर मुंह करनेका साहस नहीं हुआ। यह इलाका उड़ीसा का था, इसके अतिरिक्त चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल तक दक्षिण का पश्चिमी भाग बिल्कुल स्वतन्त्र रहा।

तेरहवीं शताब्दी में दक्षिण पर सबसे पहला आक्रमण अलाउद्दीन खिजली ने किया। अलाउद्दीन पहला मुसलमान जनरल था जिसने नर्मदा को पार किया और खानदेश होकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवगढ़ के द्वारों पर आ निकला, उस समय अलाउद्दीन का चचा जलालुद्दीन खिजली देहली के तख्त पर विराजमान था। अलाउद्दीन में यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह चचा से क्रुद्ध होकर पनाह लेने दक्षिण को जाता है किन्तु मनमें इसने देश विजयकी ठानली थी।

दक्षिण के सबसे बड़े राज्य की राजधानी देवगढ़ था। देवगढ़ का राजा रामदेवराव जो कि प्राचीन राजवंश का प्रतिनिधी था बेसुध बैठा हुआ था, उसकी सब सेना बाहर गई हुई थी यहां तक कि उसकी स्त्री और पुत्र भी यात्रा के लिये बाहर गये हुये थे, राजा को जब समाचार मिला कि राजधानी को अलाउद्दीन ने घेर लिया तब बेचारे ने निज के नौकर एकत्र करके बचाव करना आरम्भ किया परन्तु इन बेचारे नौकरों की क्या शक्ति थी जो इन लड़ाकू मुसलमानों का मुकाबला कर सकते, लाचार कुछ सामग्री एकत्र करके पहाड़ी किले में जा घुसे, अलाउद्दीन तत्काल शहर में घुस आया और खूब लूटमार करके किले को घेरने के काम में लग गया और साथ ही यह प्रसिद्ध कर दिया कि अलाउद्दीन के पास तो सेना का एक थोड़ासा ही भाग है, बादशाह सेना सहित पीछे आरहे हैं। जिस समय राजा को यह समाचार मिला उसने संधि करना ही ठीक समझा। संधि की बातचीत हो रही थी कि राजा का बेटा इस आक्रमण की सुध पाकर कुछ समूह के साथ नगर के बाहर आ उपस्थित हुआ और कायरता से बिना दो हाथ किये पराधिन हो जाना लज्जा की बात समझ कर युद्ध के लिये कटिबद्ध हो गया और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलाउद्दीन को चेलेंज दिया। अलाउद्दीन ने इस अवसरपर एक और चाल चली। सेना का अधिकतर भाग लेकर तो राजकुमार के सम्मुख आडटा और कुछ हिस्सा पीछे छोड़ आया कि वह दुर्ग पर दृष्टि रक्खे और यदि आवश्यकता हो तो ठीक मंझधार में युद्धक्षेत्र में आपड़े, जिससे कि लोगों को यह धोका होजाय कि बादशाह स्वयं आगये, अलाउद्दीन की यह युक्ति उसके लिए बड़ी लाभदायक प्रतीत हुइ। वीर राजकुमार खूब वीरता से लड़ा जब मुसलमानों के पराजित होने का समय निकट आया तब सेना का वह भाग जो किले के करीब था, आपड़ा और हिन्दुओं ने यह समझा, कि बादशाही मदद आगई, मुसलमानों का विधाता दाहिने था, राज की वीरता कुछ काम न आई और मुसलमानों ने जय लाभ की। दुर्भाग्य इसे कहते हैं कि रसद की सामग्री जो किले में शीघ्रता में भेजी गयी थी उसमें गेहूँ के आटे की बजाय नमक के बोरे डाल दिये गये थे। इस दुर्भाग्य का क्या उपाय था।

विवशतया राजा ने बहुतसा धन और कुछ इलाका मुसलमानों की भेंट करके उनको प्रसन्न किया। इसके पश्चात् अलाउद्दीन खिजली के शासन काल में स्वयम बादशाह ने तीन बार दक्षिण पर आक्रमण किया और बहुत लूटमार करता रहा। अन्त में जब देहली का राज्य सिंहासन स्वयम् सङ्कट में पड़ गया तब दक्षिण के हिन्दू स्वतन्त्र होगये और दक्षिण में देवगढ़ के किले के अतिरिक्त और कोई भाग दक्षिण भूमिका मुसलमानों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के अधिकार में नहीं रहा। इस अवसर पर हिन्दुओं की शक्ति दक्षिण में इतनी बढ़गई कि उन्होंने देवगढ़ के किले को घेर लिया, जिसपर शंहशाह अपनी सेना सहित देवगढ़ को बचाने के लिये स्वयल गया। दिनराव, जो हिन्दू राजाओं में एक नामी रईस था पकड़ा गया, मुसलमानों ने अपनी मामूली कृपा से उसको जिन्दा ही दिवार में चिनवा दिया। सन् १३१३ ई० तक फिर दक्षिण में शान्ति रही। अन्ततः शंहशाह मुहम्मदशाह तुगलक फिर अपने दल सहित उनपर चढ़ा और समस्त दक्षिण में लूटमार मच दी, हिन्दू राजधानी तिलंगाना नितान्त उजड़ गई, लोगों ने मुसलमानी प्रजा बनने की बजाय देश निकाला स्वीकार किया, दस वर्ष के पश्चात् तिलंगाना के लोगों ने फिर एक नगर बसाया, जिसका नाम बिजयनगर रक्खा। बाद को यह नगर एक शक्तिशाली हिन्दू की राजधानी बना। बहुत दिनों तक यह राजधानी मुसलमानों से नितान्त स्वतन्त्र रही यहां तक कि सन् १५६४ ई० में प्रायः २०० वर्ष बाद दक्षिण के समस्त मुसलमानी राज्यों ने विजयपुर गोलकुण्डा (अहमदनगर) आदि पर ऐक्यभाव से आक्रमण किया और नीलकाट की प्रसिद्ध लड़ाई में हिन्दू राज्य को छिन्न भिन्न कर न केवल बिजयरनगर का बल तोड़ दिया बल्कि उसका कुछ राज्य भी ले लिया। इस समय तक समस्त कर्नाटक और हिन्दोस्तान का पश्चिमीय भाग पूर्णतया हिन्दुओं के अधिकार में था। केवल दक्षिण के उत्तर भाग में मुसलमानों का जोर था। अकबर के राज्यभिषेक से लेकर १७वीं शताब्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तक जो प्रायः ५० वर्ष का समय होता है, मुसलमानी राज्य की सबसे अधिक उन्नति हुई। अकबर सबसे पहिला मुसलमान बादशाह था (यदि उसको मुसलमान कह सकते हैं) जिसने समस्त भारत की बादशाही का ध्यान किया और अपनी बुद्धि से यह फल निकाल लिया कि बिना हिन्दुओं की सहायता और प्रसन्नता के इस विचार का पूर्ण होना असम्भव है। यद्यपि उसने धार्मिक पक्षपात को छोड़कर उन युक्तियों से हिन्दुओं को जीता जो युक्तियां किसी पराजित जाति को गुलाम रखने के लिये सबसे अधिक सफल होती है। जीती हुई जाति के लिये ये युक्तियाँ अपने राज्य को सुदृढ करने वाली हैं, पराजित जाति को इन बंधनों से निकालना असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है। अकबर जैसे धीर राजा ही का काम था जो प्रेम से सबको जीत लिया। कोई इतिहास ले लीजिये चाहे किसी लेखक का लिखा हो इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मुसलमान राज्य की उन्नति हिंदुओं की दिलजोई और अधिकतर हिन्दू तलवार की सहायता से हुई, अकबर की लड़ाईयों में राजपूत शूरवीरों ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया। अकबर बड़ी बड़ी लड़ाइयों में हिन्दू जनरलों से काम लेता था। बीरबल मुसलमान जातियों से लड़ता हुआ मारा गया। अकबर के समय में राजपूतोंने काबुल को विजय किया। कुछ समय तक अकबर की तरफ प्रतिनिधित्व रूप एक राजपूत ही काबुल का अध्यक्ष रहा इसी प्रकार अकबर की अन्यान्य चढाइयों में भी राजपूतों ने बहुत सहायता दी और उसके समय में कई सूबे राजपूतों के आधीन रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकबर के पश्चात जहांगीर ने भी यही नियम रक्खा। शाहजहां को स्वयं हिन्दुओं की सहायता से राजसिंहासन मिला और यद्यपि उसने अपने दादा की नीति को बहुत कम बदला परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि शाहजहां के समय में इस्लामी पक्षपात के चिह्न उत्पन्न होगये थे। इन बादशाहों के दरबार में राजपूत सरदारों का बड़ा अधिकार था और कोई उनका अपमान नहीं कर सकता था। शाहजहां के समय में महाबतखां सबसे बड़ा मुसलमान रईस था क्योंकि वह बादशाह का सम्बन्धी भी था, उसने एक बार राजा अमरसिंह राठौर का अपमान करना चाहा था, अभिमानी और दिलचले राठौर ने दर्बार ही में बादशाह के समक्ष महाबतखाँ का सिर धड़ से अलग कर दिया। बादशाह को भी डरके मारे अन्तःपुर में छिपना पड़ा। औरंगजेब ने अपने बाप को कैद करके और अपने भाइयों के रक्त से हाथ रङ्ग कर फिर मुसलमानी धर्मान्धता को जगाया, जिसका फल हुआ कि हिन्दुओं ने उसको उम्र भर चैन से नहीं बैठने दिया। चारों ओर हिन्दू जाति ने सिर उठाना आरम्भ किया। औरङ्गजेब से लेकर गदर के समय तक मुगलवंश का इतिहास हिन्दुओं की पोलीटिकल उन्नति का इतिहास है और योरोपियन शक्तियों के जोर पकड़ने का।

दक्षिणी भारत में भी यही नक्शा खिचा रहा। हम कह चुके हैं कि तेरहवीं शताब्दी के अन्त में पहले पहल मुसलमानों ने विन्ध्याचल के पश्चिम की ओर कदम रक्खे। मुहम्मदशाह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुगलक वह बादशाह था, कि जिसके मनमें यह समाया कि देहली को उजाड़कर दौलताबाद, जो देवगढ़ के नाम से दक्षिण की राजधानी थी, बसाये। इस शहंशाह के समय में बहुत सी बगावतें हुई, मुसलमान अक्सर स्वयं बागी होगये यहां तक कि दक्षिण में समस्त हिन्दू मुसलमानों ने इत्तफाक करके षड्यन्त्र रचा और उसकी राजधानी दौलताबाद को उससे छीन लिया। इन बागियों ने अपनी रक्षा के लिये एक व्यक्ति जाफरखां नामी को जोकि किसी समय में एक ब्राह्मण का सेवक रह चुका था और जिसने उस ब्राह्मण की बदौलत बहुत उन्नति की थी नियत कर लिया था। यह व्यक्ति (जाफरखाँ) दक्षिण के बाहमनी राज्य का अधिपति हुआ, इसने अपने स्वामी के स्मारक निज स्वरूप अपने वंश का नाम बाहमनी रक्खा और खजाने का प्रबन्ध भी उसी के आधिन रक्खा। बाहमनी वंश ने हिन्दूओं साथ प्रायः अच्छा बर्ताव रक्खा। उसके समस्त पहाड़ी किलों में हिन्दू सेना रहती थी, आर्थिक प्रबन्ध भी हिन्दुओं के हाथ में था, हिन्दुओं की सेना में बड़े बड़े पद दिये जाते थे और उनपर बहुत विश्वास किया जाता था, जब कभी किसी बादशाह ने जुल्म किया तभी हिन्दुओं ने सिर उठाया। उस राज्य के एक उत्तराधिकारी सुल्तान अलाउद्दीन (द्वितिय) के सेनापति मलिक इन्तजार ने सिर्के के राजा को पराजित कर उसको मुसलमानी धर्म ग्रहण करने के लिए विवश किया तब वहां के हिन्दुओं ने मुसलमानी धर्म ग्रहण करने के स्थान पर प्राण छोड़ने पर कमर कसी और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुसलमान सेनापति का, उसके ७००० साथियों सहित बध करके अपने धर्म की रक्षा की। उसी समय से बाहमनी राज्य का पतन आरम्भ होगया, इस बाहमनी राज्य के खण्डहरों पर चार पाँच और मुसलमानी राज्य स्थापित हुए। बीजापुर गोलकुण्डा बरार और बीदर कुछ,समय बाद तीन राज्य रह गये,अर्थात् बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर। बीजापुर का राज्य आदिलशाही के नाम से प्रसिद्ध है, और अहमद नगर का निज़ामशाही से। इस निज़ामशाही राज्य का प्रारम्भ भी एक हिन्दू के हाथ से हुआ। इस वंश का कर्त्ता एक अहमद नामी व्यक्ति था जिसका बाप ब्राह्मण था और बीजापुर में रहता था। बेचारा बाप एक वार लड़ाई में बीजापुर वालों के हाथ पड़ गया। फिर क्या था मुसलमान बना लिया गया। मुसलमान बनकर इस को बड़ा ऐश्वर्य मिला, यहां तक कि बीजापुर की रियासत का सबसे बड़ा पद भी इसे मिला, उसके बेटे अहमद ने बीजापुर के बादशाह से बगावत करके एक और रियासत बनाई और अपनी राजधानी का नाम अहमदनगर रक्खा। बीजापुर और अहमदनगर की नीति प्रायः अकबर के समान थी। दोनों रियासतों का सारा प्रबन्ध हिन्दुओं के हाथ में रहा। पहाड़ी किले हिन्दुओं के हाथ में रहे और वैसे भी हिन्दुओं को बहुत विश्वसनिय समझा गया और बड़े बड़े पद उन को दिये गये। आदिलशाही के वंशधरों के राज्यकाल में एक हिन्दु रईस बारह हजारी के पद पर नियुक्त हुआ और इन्हीं वंशधारियों ने पहले पहल यह आज्ञा दी कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरकारी दफ्तरों में फारसी के बजाय मरहठी भाषा लिखी जाय अर्थात् उसी दिन से समस्त सरकारी दफ्तर मरहठी भाषा में हो गये। इस राज्य में बराबर हिन्दुओं का जोर रहा! निजामशाही खान्दान भी प्रथम अपनी इस नीति का अवलम्बन करता रहा और हिन्दुओं की प्रतिष्ठा करता रहा। बुरहान बादशाह (द्वितीय) अपने शासन काल में अपने प्रधान मन्त्री कुंवरसेन को पेशवा का खिताब दिया परन्तु बाद को इस वंश के बादशाहों ने शिया और सुन्नी धर्म के विषयों पर जोर डाल कर अपने राज्य का नाश कर लिया। गोलकुण्डा की रियासत में भी हिन्दू नौकर रहे। इन के अतिरिक्त इस समय एक बलशाली राज्य विजयनगर का था जो कभी किसी और कभी किसी मुसलमान से लड़ता रहा। अन्ततः सब मुसलमान रियासतों ने एकत्र होकर जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ इस राज्य को पराजित किया।

इस समय दक्षिण में एक और जाति वीरता में नाम पैदा कर रही थी जिसको फरिश्ता अपनी भाषा में वर्गी कहता है। स्वयं फरिश्ते के इतिहास से ज्ञात होता है कि वह जाति मुसलमानों को प्रायः दिक करती रही। कई बार तो म्लेछों ने केवल हिन्दू देशघातकों की सहायता से इनको हराया। सन् १५७८ में एक ऐसी घटना हुई। सालभर की चेष्टा के उपरान्त बादशाह का सेनाध्यक्ष यह रिपोर्ट लिख चुका था कि इन लोगों (वर्गी) को वश में रखना असम्भव है। परन्तु अन्त में एक विश्वास-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घाती देश शत्रु व्यक्ति के द्वारा उनको कूटनीति से हराया। जो काम तलवार से असम्भव था वह धोखे से किया गया।

निदान इसी प्रकार दक्षिण में खिचड़ी पकती रही। मुगल वंशधारी, हिन्दू राजपूतों की सहायता से दक्षिण पर चढ़े। इन आक्रमणों को सब से अधिक भयङ्कर औरङ्गजेब ने बनाया, मानों ठीक उसी समय जबकि इस्लामी झण्डे ने प्रायः समस्त हिन्दोस्तान में हलचल डाल रक्खी थी दक्षिण और पंजाब में दो जबर्दस्त शक्तियां उत्पन्न हो रही थीं। अन्ततः मुसलमानी शक्ति की अन्त्येष्टि हुई। इन दोनों शक्तियों के भीतर धार्मिक सुधार की भावना काम कर रही थी।

पंजाब में बाबा नानक ने हिन्दुओं को बतलाया कि अब वे जाति पांती, छूतछात के झमेले में न पड़ें। सब देवी देवताओं से मुंह मोड़कर एक सच्चे परमेश्वर की भक्ति करें।

कि है जात बाहद हवादत के लायक,
जबां और दिलकी शहादत के लायक।
इसके हैं फरमान इताअत के लायक,
इसकी है सरकार खिदमत के लायक।
लगाओ तो लौ अपनी इससे लगाओ,
झुकाओ तो सिर इसके आगे झुकाओ।

इस शिक्षा ने हिंदुओं की धार्मिक अवस्था पर बड़ा प्रभाव डाला क्योंकि वह समय के अनुकूल थी। इस कारण जहां हिन्दू मजबूत बने वहां मुसलमानों का कट्टरपन भी बहुत ढीला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पड़ गया। इस मत के अनुयायियों ने पवित्रात्मा बाबा नानक के प्रचार को बराबर जारी रक्खा, यहां तक कि वह प्रतिदिन मजबूत होता गया और उसने हिन्दुओं के चित्त पर विजय प्राप्त की। जब मुसलमान अफसरों ने देखा कि यह मत बराबर फैलता जाता है और लोग इसमें प्रेम करते हैं तब उन्होंने इनको सताना आरम्भ किया यहां तक कि केवल उपासना और भक्ति से काम चलता न देखकर सिक्ख गुरुओं ने अपनी रक्षा के लिए तलवार उठाई। सिक्खों का तलवार छूना था कि मुसलमानों का रक्त उबल उठा और वे आपे से बाहर होगये। सिक्खों को सताया जाने लगा, यहांतक कि कुछ सिक्खों के गुरु बड़ी बुरी तरह मारे गये। किंतु जो चिनगारी सुलग चुकी थी वह इन बातों से बुझने वाली न थी, प्रत्युत प्रतिदिन प्रचण्ड होती जाती थी। गुरु अर्जुन ने बड़ी बड़ी कठिनाइयां झेली, परन्तु अपना धर्म त्यागना स्वीकार न किया। मतीसिंह जी आदि अनेक सिक्ख हुए हैं जिनको धर्म की खातिर अगणित दुःख पहुंचाये गये जो उन्होंने हंसते-खेलते सहन कर लिये।

निदान गुरु तेग बहादुर की बलि ने इस चिनगारी को प्रचण्ड भीषण रूप धारण करा दिया। उनके प्यारे पुत्रों ने, जिन्होंने स्वयं अपने पूज्यपाद पिता को जाति और धर्म के लिये सिर भेंट करने का संकेत किया, अपने जीवन को यज्ञ से आरम्भ किया और धर्म की जलती हुई लाट को सम्मुख रखकर उसके गिर्द चक्कर लिये। कौन नहीं जानता कि इनका समस्त जीवन इस धर्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यज्ञ में ही व्यतीत हुआ, जो यज्ञ उनके पिता के बलिदान से आरम्भ हुआ था उस यज्ञ में उन्होंने अपने चारों बेटों की आहुति दी। गुरु गोविंदसिंह जी ने भक्ति और प्रेम का प्याला पीकर तलवार हाथ में ली और ऐसी घुमाई कि बिजली का काम करने लगी, उस तलवार ने वह जौहर दिखाये कि मानों स्वयं परमात्मा ने अपने हाथ से उस तलवार को बनाया था।

गो शरक[1] में खुरशैद की मानन्द अयां[4] थी।
गो ग़रब[5] में मिसले मैं नौ[6] जलवा फ़ुना[7] थी॥
गो चरख[8] पर रोशन सफ़क हक्शां[9] थी।
यह तेग़ का पर तो था मग़र खुद वह कहां थी॥

सिक्ख धर्म जो काम पंजाब में कर रहा था वही काम अनेक रूप से दक्षिण में और विशेषकर उस भाग के निकट जहां स्वा० दयानन्द सरस्वती ने जन्म ग्रहण किया था* अर्थात् महाराष्ट्र में हो रहा था। पंजाब में जो काम गुरु नानक जी और उनके बाद के अन्य गुरुओं ने किया वही काम दक्षिण में तुकाराम, रामदास, एकनाथ और जयनाथ स्वामी ने किया। लोगों को छूतछात के बंधनों को ढीला कर देने की आज्ञा दी और सच्ची भक्ति और प्रेम का बीज बोया।

---

१ पूर्व। २ सूर्य। ३ समान। ४ जाज्वल्यमान्। ५ पश्चिम। ६ नया चाँद। ७ चमकदार। ८ गगन। ९ आकाशगंगा।

* स्वामी दयानन्द का जन्मस्थान गुजरात काठियावाड़ की मौरवी रियासत में निश्चित हुआ है (अनुवादक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगों के चित्तों में देशभक्ति और जाति सेवा की अग्नि उत्पन्न हुई। ज्योंही मुगल बादशाहों की सेना ने दक्षिण की मुसलमानी रियासतों का नाश किया, औरंगजेब के पक्षपात और कट्टरपन का चित्र लोगों के सम्मुख रखा गया हिन्दुओं ने सोचा कि मुगल सफलता के अर्थ हैं कि कोई व्यक्ति अपनी धार्मिक रीतियों के पालन में स्वतन्त्र न होगा। अनेक प्रकार के हिन्दुओं के धर्म को भ्रष्ट करने के अतिरिक्त हिन्दुओं को बेतरह सताया जायगा। हिन्दू कवि और भाटों ने इन्हीं विचारों को कविता के रूप में लोगों में फैलाना आरम्भ किया, सच्चे प्रेम और सच्ची भक्ति के विचारों के साथ २ आनेवाली इस दुःख-मयी अवस्था का चित्र खींचा, यह भजन और गीत लोगों में फैलने लगे, यहां तक कि समस्त देश इस सेवा के लिए प्रस्तुत हो गया था जोकि शिवाजी के हाथों से हुई।

अब हिन्दुओं ने देखा, कि एक परमात्मा की उपासना और सच्ची भक्ति भी मुसलमानों के हाथ से सुरक्षित नहीं रह सकती तब उनके मनों में एक असाधारण धार्मिक लहर जोश मारने लगी जिसके सम्मुख मुगल बादशाहों की तलवार भी कांपती ही दिखाई दी।

शिवाजी और गुरुगोविन्दसिंह जी के वृत्तान्त को लिखते समय बड़ा अन्याय होगा यदि हम एक शूरवीर की सेवा को भूल जांय और मुगलवंशधारियों के अधःपतन में जो भाग उसने या उसके अन्य कुटुम्बियों ने लिया उसे बिल्कुल भुलादें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम ऊपर कह चुके हैं कि राना सांगा का उत्तराधिकार राना प्रताप के कन्धों पर था। मानाकि अकबर की शहंशाही शक्ति ने और स्वयम् राजपूतों ने भी राना को बहुत दिक किया यहां तक कि वह रोटी से भी लाचार हो गया। किन्तु मुसलमानों के अधीन होने का विचार उस पुरुषसिह के मनमें कभी नहीं आया, राजपूतों के अनैक्य (नाइत्तफाकी) का हम इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि स्वयम् राना प्रताप के भाई अकबर की सेना में नौकर थे और कई बार राना के विरुद्ध लड़े थे। इन लड़ाइयों में कई बार यह दृश्य दिखाई दिया कि यदि एक भाई इस ओर है तो दूसरा उस ओर।

तन टूटता था यहाँ तो तड़पता था सर उधर।
जख्मी पिदर[1] इधर था तो बेजां[2] पिसर[3] उधर॥
इक बेहवास इस तरफ इक बेखबर उधर॥
दरिया लहू का बहता था दिनमें इधर उधर।

चित्तौड़ तो अकबर के अधीन हो चुका था, किन्तु राजपूताना अभी स्वतन्त्र था, न उस (राजपूताना) ने उसके अधीन होना चाहा, शोक कि प्रताप के बाद उदयपुर के वंश ने फिर प्रताप सा कोई वीर उत्पन्न नहीं किया। माना कि उदयपुर ने कभी मुसलमानों से सम्बन्ध करके कलंक नहीं लगाया और न अन्यान्य राजपूत रियासतों के समान मुसलमानों के अनुचर बने तथापि उदयपुर बहुत दिनों तक अपनी स्वतन्त्रता को स्थिर

१ पिता। २ मृत। ३ बेटा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न रख सका। कभी स्वतन्त्र और कभी परतन्त्र बस यही ताना बाना लगा रहा।

राजपूतों के पिछले इतिहास में एक और पवित्र नाम है जिसने औरङ्गजेब को अपने राजपूती रक्तका पूरा प्रमाण दिया यह नाम दुर्गादास राठौर का है। दुर्गादास महाराज यशवंतसिंह जोधपुर नरेश के भाइयों में से था और जब यशवंतसिंह के मारे जाने के बाद औरङ्गजेब ने उसके इकलौते बेटे को बध करने के लिए यशवंतसिंह की रानी और उसके बेटे को देहली में धोके से घेर लिया तब शूरवीर दुर्गादास ने अपने युवराज को बचाया, प्रथम समस्त स्त्रियों को स्वयम् अपने हाथों से काट कर वीर शिरोमणि दुर्गादास और उसके साथी नंगी तलवारें लेकर शत्रुओं की सेना को चीर कर निकल गये। उसके बाद दुर्गादास बराबर औरङ्गजेब से लड़ता रहा। निस्संदेह दुर्गादास की धीरता, साहस, दूरदर्शिता का औरङ्गजेब के राज्य को नष्ट करने में बहुत और बड़ा भाग है।

यहां तक हमने अपनी अवनति के इतिहास को अपने देश भाइयों के सामने रखा। इस का यह अभिप्राय नहीं कि मैं सम्पूर्ण इतिहास लिख रहा हूं, कारण कि यह काम बहुत कठिन और बहुत समय का है, इस समय हमारा अभिप्राय इतना ही है कि अपनी अवनति के इतिहास की ओर अपने भाइयों का ध्यान दिलायें, और उनको इस बात का प्रमाण दें कि जो लोग यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हमारी जाति १००० या ८०० वर्ष तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुसलमानों की गुलाम रही वे भूलते हैं। कायरता का कलंक हिंदू जाति के मस्तक पर नहीं लग सकता। समस्त हिन्दू न कभी बहादुर थे न हैं और न होंगे परन्तु सारे हिन्दू न कभी कायर थे और न हैं और न कभी होंगे। जाति वाचक होकर कायरता कभी हिन्दुओं के हिस्से में नहीं आई। जो जाति अधिक संख्या में शूरवीर रखती है, जिस जाति में जाट, राजपूत, खत्री, मरहठे और अन्यान्य योद्धा जातियां मौजूद रही हैं और अब भी हैं उस जाति को कायर कहना नितान्त असत्य है। हमारे मुसलमान भाई जो हम पर कायरता का प्रायः दोषारोपण करते हैं, अपने गिरेबान में मुँह डालकर देखें अन्ततः उनका अधिक भाग भी तो हममें से ही है। सबसे बड़ा मुसलमान रईस जो इस समय हिन्दुस्तान में है हिन्दुओं की सन्तान से है और भी बड़े बड़े मुसलमान वंश हिन्दुओं की सन्तान हैं। हमारा यह दावा है कि हिन्दुओं की कोई जाति भी सब की सब कायर नहीं कही जा सकती, सबसे अधिक कायरता का कलंक* बंगालियों और बनियों पर लगाया जाता है, परन्तु स्मरण रहे कि इतिहास में बनियों और बंगालियों की शूरता का वृत्तान्त भी लिखा हुआ है। बख्तियार खिलजी जब नदिया के जीतने के गर्व से आसाम की ओर बढ़ा था तब बहुत कठिनता से अकेला वापस पहुंचा था। हर जाति में वाणिज्य करने वाला भाग दूसरे मनुष्यों के मुकाबले में अपने काम और अपनी आदतों के कारण जरूर

* आजकल बंगाल पर भी यह दोष लगाना सफेद झूठ ही है (अनुवादक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कम दिलेर होता है तथापि राजपूताना के अग्रवाल जायस्वालवंश वालों ने कई बार खजाना और दीवान की पदवियों को छोड़कर तलवारें हाथ में ली और अपने राजपूत सरदारों के साथ बराबर मैदान में लड़े। ब्राह्मणों में महाराष्ट्र ब्राह्मण अबतक युद्ध की मूर्ति हैं क्षत्रिय और खत्री नाम भी इतिहास में बेठिकाने मिलते हैं। पंजाब में तो कदाचित् अभी हजारों हिन्दू मुसलमान ऐसे होंगे जिन्होंने रणजीतसिंह के समय में खत्रियों की वीरता के नमूने देखे होंगे। सरहद के अफ़ग़ान तो अभीतक खत्रियोंको अच्छी तरह याद रखते हैं। हमने यह पृष्ठ अपनी जाति पर लगे आक्षेपों के उत्तर में नहीं लिखे प्रत्युत अपनी जाति को यह दिखलाने के लिये लिखे हैं कि मुसलमानी राज्य के किसी समय में हिन्दुओं ने वीरता और स्वतन्त्रता की इच्छा को हाथ से नहीं जाने दिया और कष्टों को चुप रहकर ही नहीं सहा अन्यथा आज ३० करोड़ हिन्दू न पाये जाते। अब भी अंग्रेजी सरकार की फौजों में सबसे अधिक नामवरी और प्रसिद्धि गोरखा और सिक्ख पल्टनों ने प्राप्त की है। आजकल महारानी विक्टोरिया* के राज्य में चहुंओर शान्ति है और शस्त्र का कानून जारी है। कदाचित् समस्त हिन्दुस्तानी बिना किसी धर्म या सम्प्रदाय के अपनी वीरता दिखलाने का कोई अवसर नहीं रखते। अंगरेज सरकार ने अपनी बुद्धिमता से समस्त जाति को बेहथियार करके

* मूल पुस्तक जिस समय लिखी गई थी उस समय स्वर्गीय महारानी विद्यमान थीं और न उस समय किसी प्रकार की अशान्ति थी। (अनुवादक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा कर दिया है कि आशा नहीं कि उनको कभी दिलेरी या वीरता के दिखलाने का अवसर मिले।

बस आजकल कायरता और वीरता की चर्चा काग़जी तोपों से बढ़कर नहीं है × । अब तो कायरता की परीक्षा क्रिकेट फुट-बाल और टेनिस के मैदानों में होती है । हिन्दू युवकों को चाहिए कि इन मैदानों में भी पीछे न रहें। माना कि शस्त्र हमारे पास नहीं हैं किन्तु स्मरण रहे कि जो मनुष्य अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता वह किसी काम का नहीं। उसका धर्म, उसका कर्म, उसका माल, उसकी सम्पत्ति, उसकी स्त्री की धर्म रक्षा, उसकी जाति की प्रतिष्ठा हमेशा संकट में है। अतः क्या धर्म की रक्षा के लिये शारीरिक बल की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक बलवान् चोर या डाकू हमारी कमाई हुई सम्पत्ति को हमसे छीन सकता है तब समस्त संसार की उपाधियां किसी काम की नहीं हैं। अगले पृष्ठों ने हम शारीरिक बल, हिम्मत एवं बीरता को कैसे अद्भुत प्रकार से अपने धर्म की रक्षा में, अपनी जाति की रक्षा में और अपने वंश की उन्नति में लगाया। शिवाजी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब कि हिन्दुस्तान से विद्या-प्रेम उठता जाता था और कोई मनुष्य भी शांति से दो रोटी नहीं खाता था। एक बार के बिछड़े हुए मित्र पिता पुत्र भाई को एक दूसरे

× यदि कभी इसकी आवश्यकता पड़ी तो निस्सन्देह हमारी जाति इस मांग में पीछे नहीं रहेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से मिलने का विश्वास नहीं था, दो धार्मिक भाइयों को यह विश्वास न था कि वे एक वर्ष तक एक ही धर्म में रहेंगे न किसी की सम्पत्ति सुरक्षित थी और न किसी का धर्म्म ही। निदान वह एक विकट समय था। केवल हिन्दुओं ही के लिये नहीं प्रत्युत हिन्दू मुसलमान दोनों के लिए। प्रतिक्षण लड़ाई झगड़ों का भय बना रहता था। रक्त के नाले बह जाते थे। शहरों के शहर आनकी आन में बर्बाद हो जाते थे, लखपती कङ्गाल और कङ्गाल लखपती हो जाता था, न मन्दिर ही सुरक्षित थे और न मसजिदें ही शिवाजी ने ऐसे समय में जन्म लिया और बाद को जन्म भर इस समय की छाया उनके जीवन पर पड़ी रही। ऐसी दशा में उत्पन्न होकर जिस प्रकार उस महापुरुष ने धर्म के गहरे प्रेम का अद्वितीय परिचय दिया, जिस प्रकार उसने स्त्रियों की रक्षा की और न केवल अपना ही आचरण शुद्ध रक्खा, प्रत्युत जब कभी किसी व्यक्ति ने किसी स्त्री से बुरा व्यवहार किया तब उसको कठोर दण्ड दिया, जिस तरह उसने निर्धन खेतीहरों की रक्षा की और उनका पक्ष लिया, उसके वे गुण प्रशंसनीय ही नहीं हैं प्रत्युत यह सिद्ध करते हैं कि इन गुणों का रखने वाला मनुष्य संसार में अद्वितीय पुरुष था। शिवाजी ने अपने धर्म्म की रक्षा की। गौ ब्राह्मण को बचाया परन्तु किसी अन्य मत का खण्डन नहीं किया, यह सबसे बड़ी प्रशंसा है जो औरङ्गजेब के समय में उत्पन्न होने वाले शिवाजी जैसे एक हिन्दू वीर की हो सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दक्षिण का मुसलमान खाफीखां जो अनेक स्थल पर शिवाजी को 'लग' और 'काफ़िर' के नाम से याद करता है और जिसने शिवाजी के मृत्यु समाचार को इस प्रकार लिखा है कि "काफिर नरक को गया" किन्तु वह भी शिवाजी के सदाचार की प्रशंसा करता है।

शिवाजी की जीवनी से जो संक्षेप से आगे लिखी जाती है हमारे पाठक मालूम करेंगे। कि शिवाजी में महान पुरुष होने के सब गुण विद्यमान थे, शिवाजी में प्रबन्ध करने की जैसी शक्ति थी वैसी किसी अन्य इनके साथियों के भाग में नहीं आई। वह संगठन की प्रतिष्ठा को ऐसी अच्छी तरह जानता था और संगठन के सिद्धान्तों को ऐसी भली प्रकार जानता था कि यदि आजकल होता तो बड़े से बड़े योरोपियन विद्वानों और जनरलों से बाजी ले जाता। युद्ध विद्या में निपुण था, शत्रु को निर्बल करने के ढंग खूब निकालता था। शिवाजी बड़ा धीर था। यद्यपि किसी के ताने नहीं सहता था किन्तु दिलेरी और वीरता में अद्वितीय था। शाहंशाह औरङ्गजेब के वजीर से एक जरा से मामले पर आगबबूला होगया और कुछ भी भय न किया। अपने धर्म्म में उसका ऐसा पक्का विश्वास था कि औरङ्गजेब को भी इस विषय में मात देता था। वीरों की बड़ी प्रतिष्ठा करता था, अपने सदाचार में किसी को अपने समान नहीं रखता था, स्वयं वह इतना शुद्ध और पवित्र था कि आज हम ऐसे महान् पुरुषों की राम कहानी अपनी जाति के नवयुवकों को सुनाते हैं, आशा है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि वे अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे और शुद्ध पवित्र रहकर अपने सदाचार का प्रमाण देंगे। परमेश्वर हमारे देश भाइयों के हृदय में देशभक्ति का पवित्र चित्र अङ्कित करें जहाँ एक ओर देश एवं जाति से प्रेम करना सिखलायें साथ ही दूसरी ओर शुद्ध पवित्र आचरण एवं आदर्श जीवन प्रदान करें।

—राजपतराय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपति शिवाजी

वंश–परिचय

शिवाजी मां-बाप दोनों की ओर से राजपूत थे। पितृपक्ष से वह उस पवित्र वंश में उत्पन्न हुये जिसमें बड़े बड़े शूरवीर उत्पन्न हुये थे। जो वंश बहुत समय तक स्वतन्त्र रहा जिसकी सन्तान अपनी जाति और देश के लिये अनेक बार लड़ी और बहुत सी कठिनाइयां झेलते हुये भी मुसलमानों से सम्बन्ध नहीं किया जो अद्यावधि अपनी इस पवित्रता के कारण समस्त राजपूतोंमें शिरोमणि हैं। हमारा संकेत उदयपुर के राजवंश* की ओर है। माता की ओर से भी शिवाजी एक ऐसे ही प्राचीन वंश से हैं मुसलमानों के आक्रमणों से पहले दक्षिण में यादव वंश के राजपूत राज्य करते थे, जिनकी राजधानी देवलगढ़ थी,

---

* मुसलमानी इतिहास लेखक ख़ाफीख़ां लिखता है कि शिवाजी का एक पूर्वज उदयपुर के राजवंश का था किन्तु उसने अपने से नीच जाति की स्त्री से सम्बन्ध कर लिया था जिससे एक लड़का उत्पन्न हुआ इसलिये वह लज्जित होकर राजपूताना छोड़कर दक्षिण में आ बसा। वहां उस लड़के का विवाह एक मरहठा के यहां पर हुआ। मि० जस्टिस रानाड़े अपने मरहठा इतिहास में शिवाजी को बाप की ओर से उदयपुर के राना वंश से मानते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसे बाद को मुहम्मद तुग़लकशाह ने दौलताबाद बनाया। शिवाजी का नाना जादोरायजी उसी वंश से था। यद्यपि समय के परिवर्त्तन से राज्य जाता रहा था तथापि उसका वंश अपने इलाके में प्रतिष्ठित और उच्च समझा जाता था। कुछ न कुछ इलाके अवश्य इसके पास थे और मुसलमानी राज्य में भी इसी वंश के राजपूतों को अच्छे अच्छे पद मिलते रहे।

मराठा वंश में जादो का वंश सबसे अधिक बलशाली वंश था और इन लोगों में सबसे अधिक प्रतिष्ठित और जागीरदार था। जादोराय का एक वंशज निजामशाही बादशाहत में दस हजार का जागीरदार था उनके वंश में सदा से देशमुखी चली आती थी। शिवाजी के दादा का नाम मल्लोजी भोंसला था जो दरोल ग्राम (जि० दौलताबाद) में रहा करता था। मल्लोजी का विवाह दक्षिण के एक प्रतिष्ठित वंश में हुआ था जो धनवान् और प्रतिष्ठित होने के अतिरिक्त बहुत प्राचीन भी था।

मल्लोजी का साला रावनानक नीरमल था, उसको जगपाल भी कहते थे, यह सरदार अपने समय का एक नामी लड़ाका वीर होगया है। बीजापुर के राज्य में उसका वंश दूसरे नम्बर का था, परन्तु स्वतन्त्रता की अभिलाषा ने बाद को इसे स्वतन्त्र लड़ाइयां और लूटमार करने पर प्रस्तुत कर दिया। जगपाल की बहन मल्लोजी को ब्याही थी। भोंसला उनका वंश सूचक नाम था जिसकी बाबत ठीक पता नहीं लगता कि यह शब्द किस शब्द का अपभ्रंश है। एक मुसलमान इतिहास लेखक लिखता है कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह भोंसला शब्द घोंसले का अपभ्रंश है। चूँकि इनका प्रथम वंशधर अर्थात् वह लड़का जो राजपूताने से आया था चिरकाल तक जंगल में घूमता रहा पूर्व इसके कि उसका बाप उसे महाराष्ट्र में लाया इसलिये उस घोंसला वंश अपभ्रंश भोंसला होगया। पर ग्रान्टडफ साहब इसका और ही कारण बताते हैं। वे कहते हैं कि बाहमनी वंश वालों के राज्य में इस वंश का एक मनुष्य एक पहाड़ी किले पर एक जानवार की कमर में रस्सी बांध कर चढ़ गया था उससे पहिले कोई उस किले पर नहीं चढ़ा था और किला बड़ा दुर्गम समझा जाता था उस दिन से उसका नाम भोंसला होगया।

मल्लोजी भोंसले का बड़ा बेटा शाहजी भोंसला था। शाहजी का विवाह जादोराव की कन्या जीजीबाई से हुआ। इस विवाह की भी एक अनोखी कहावत है। मल्लोजी भोंसला एक साधारण जागीरदार था और जादोराव एक बड़ा जागीरदार था और प्रतिष्ठित था परन्तु दोनों वंशों में प्रेम चला आता था। एक बार मल्लोजी अपने बड़े बेटे शाहजी के साथ जादोराव के घर गया। जादोराव की बालिका कन्या जीजीबाई उसके पास बैठी थी। जादोराव दोनों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और हँसते हँसते अपनी छोटी लड़की से पूछने लगा कि क्या शाहजी की स्त्री बनना पसन्द करेगी? जो लोग उपस्थित थे उनको सम्बोधन करके कहा कि "यह क्या अच्छा जोड़ा है।" बस इसका इतना कहना था कि मल्लोजी भोंसला कूद पड़ा और उसने लोगों को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्बोधित कर कहा कि मित्रो ! तुम साक्षी हो आज जादोराय ने अपनी कन्या का सम्बन्ध मेरे पुत्र शाहजी से कर दिया जीजीबाई आजसे शाहजी की हुई। परन्तु जादोराय फिर अपने वचन से फिर गया और दोनों में इस बात पर अनबन होगई। इसके कुछ समय उपरांत मलोजी को स्वप्न में किसी खजाने का हाल मालुम हुआ और वह बड़ा धनाढ्य होगया। सम्पत्ति मिलने पर और भी इस वंश की प्रतिष्ठा बढ़ गई और दरबार से भी पंचहजारी का पद मिल गया। अहमदनगरके दरबारियों ने बीच में पड़ कर मलूशाह और जादोराय की फिर मित्रता करादी और अन्त में शाहजी और जीजीबाई का विवाह हो गया।

मलोजी भवानी देवी का भक्त था। कहावत है कि उन दिनों देवीजी मलोजी को स्वप्न में दिखाई दी और उस से कहा कि तेरे वंश में एक बड़ा राजा होगा जिसमें महादेव जैसे गुण पाये जायेंगे, जो महाराष्ट्र में न्याय को स्थापित करेगा और उन सब का नाश करेगा जो गौ ब्राह्मण को सताते हैं, मन्दिरों को तोड़ते हैं, और उसका राज्य बहुत दिनों तक रहेगा। उसकी २७ पीढ़ियां राज्य भोगेंगी। मैसूर का इतिहास लेखक कर्नल वेल्कसन यह लिखता है कि एक हिन्दू पुस्तक में जो सन् १६२६ ई० की लिखी हुई थी उसमें भी हमने यह भविष्यवाणी लिखी देखी कि 'धर्म कर्म का नाश हो गया है' उच्च से उच्च वंश नष्ट होगये हैं परन्तु दुःख दूर होने का समय निकट आ गया है, जबकि कुमारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कन्यायें प्रसन्न होकर गीत गायेंगी और आकाश से भी पुष्पवृष्टि होगी।' जिस समय यह लिखा गया उस समय शिवाजी का नाम उनकी जागीर से बाहर किसी को मालूम भी न था किन्तु कर्नल साहब लिखते हैं कि कुछ समय बाद ही लोगों को मालूम हो गया कि वह भविष्यवाणी शिवाजी के आश्चर्यदायक कर्मों के लिये ही थी। इन भविष्यवाणियों से यह प्रकट होता है कि यह समय शिवाजी के लिये तैयार था और मनुष्य किसी ऐसे वीर अवतार की प्रतीक्षा कर रहे थे जो उसके धर्म को सामयिक क्लेशों से मुक्त करे।

मल्लोजी के मरने पर उसके पुत्र शाहजी भोंसले को अहमद नगर के दरबार में अपने पिता का पद और जागीर मिल गई। कुछ काल उपरान्त ही पता लग गया कि बेटा बाप से अधिक बुद्धिमान और प्रतिष्ठत है। यह वह समय था जबकि जहांगीर के सेनाध्यक्ष दक्षिण को विजय करने के पीछे पड़े हुये थे और अहमदनगर के प्रसिद्ध सेनापति मलिक अम्बर से लड़ रहे थे। सन् १६२० ई० की लड़ाई में शाहजी ने खूब वीरता दिखाई और प्रसिद्धि पाई। इस लड़ाई में उसका श्वसुर जादोराय भी उपस्थित था। यद्यपि मलिक अम्बर हार गया परन्तु समस्त इतिहास लेखक मानते हैं कि इस हार के उत्तरदाता मरहठे न थे। इस लड़ाई में शाहजी भोंसले और जादोराय ने जो कार्य किये उनसे मुगलों की सेना में मरहठों की धाक बैठ गई और मुगल सेनापति इस प्रबन्ध में लग गया कि येन केन प्रकारेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मरहठों को अपनी ओर कर लें परन्तु कुछ दिनों बाद जादोराय मलिक अम्बर से क्रुद्ध होकर मुग़ल सेना से जा मिला। मुग़ल राज्य में उसे २४ हजारी के अधिकार मिल गये। १५ सवार भी उसके अधिकार में दिये गये। इससे अनुमान हो सकता है कि मुग़ल सम्राट के प्रतिनिधियों ने जो दक्षिण में लड़ रहे थे सम्राट के आदेशानुसार एक मरहठे सरदार की कितनी प्रतिष्ठा की जो सम्बन्धी उसके साथ आये थे उनको भी बड़े बड़े पद और अधिकार दिये गये, परन्तु शाहजी भोंसला अपने श्वसुर के साथ नहीं आया और अपनी पुरानी सरकार की सेवा में लगा रहा सन् १६२७ ई० में जहाँगीर मर गया और इसके अगले साल सन् १६२८ ई० में शाहजहां मुग़ल राज्य के सिंहासन पर विराजमान हुआ। शाहजहां को उस सेनापति से जो दक्षिण में लड़ रहा था लागडाट थी उसने तत्काल ही खानजहाँ लोधी को दक्षिण के युद्ध से वापिस बुला लिया। खानजहां लोधी को दरबार में पहुंच कर बेईमानी का सन्देह हुआ और वहाँ से भागकर दक्षिण में वापिस आगया और उसने यहां आकर निज़ामशाही (अहमदनगर) राज्य में शरण ली। बादशाह ने इसके पीछे बहुत सी सेना भेजी। वहाँ के समस्त हिन्दू रईसों और शाहजी भोंसला आदि ने खानजहां की सहायता की और मुसलमान सेना को बड़ी क्षति उठानी पड़ी और बड़ी निष्फलता के साथ वापिस आई। इस हार पर शाहजहां को इतना क्रोध आया कि स्वयं एक महती सेना लेकर दक्षिण को चल पड़ा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्ततः खानजहां उसके मुकाबले में अशक्त रहा और भाग निकला। शाहजी भोंसला ने देखा कि जिसकी खातिर मुग़लवंश वालों से लड़े थे वह भाग गया तब उन्होंने भी सेवा के अतिरिक्त और कोई चारा न देखा। बुद्धिमान शाहजहाँ ने मरहठा सरदार की बड़ी प्रतिष्ठा की और इसको छः हजार का अधिकार देकर पाँचहजार सरदार का अफसर बना दिया और पहली सम्पत्ति के अतिरिक्त और बहुत सी सम्पत्ति उसको दी।

इतना होने पर भी शाहजी भोंसला पूर्ववत् निजामशाह राज्य का शुभचिन्तक बना रहा, परन्तु जब निजामशाही सरकार के प्रधानमंत्री फतहखाँ ने अपने बादशाह का वधकरके शाहजहाँ से संधि करने का विचार किया किन्तु सन्धि के नियमों पर स्थिर न रहा, तब शाहजी भोंसला ने निजामशाही राज्य को छोड़कर बीजापुर के बादशाह की सेवा स्वीकार की।

शाहजी का दक्षिण में इतना जोर था कि आदिलशाही (बीजापुर) गवर्नमेण्ट की तरफ उसका चला जाना बीजापुर के राज्य के लिए हितकर समझा गया। इस समय फतहखाँ ने शाहनशाही सेनापति महाबतखां से इत्तफाक करके दौलताबाद अर्थात् बीजापुर की राजधानी पर आक्रमण किया। शाहजी इसके साथ खूब वीरता से लड़ते रहे किन्तु अन्ततः उस सेना के सामने न जम सके और पराजित हुए। बीजापुर वालों ने फतहखां के साथ सन्धि की बातचीत आरम्भ की जिसमें एक यह शर्त भी थी कि फतहखां शाहजी की वीरता के कार्यों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपलक्ष्य में बहुत कुछ पारितोषिक दे। चतुर फतहखां ने बीजापुरियोंसे सन्धि करते ही मुगल सेनापर आग बरसानी आरम्भ करदी जिससे महावतखां को बहुत क्रोध आया और उसने फतहखां को गिरफ्तार करने का प्रबन्ध किया। जब फतहखां हाथ आ गया तब महावतखां ने यह ठानी कि यदि शाहजी भोंसला को जीत लिया जाय तब बीजापुर और अहमदनगर दोनों पूर्णतया हाथ में आजायें। परन्तु मुसलमान सेनापति ने सबसे पहले यह प्रबन्ध किया कि शाहजी की स्त्री और उसका पुत्र जो नीरापुरके निकट ठहर रहेथे किस प्रकार काबू में आयें। फलतः एक मुसलमान सेनापति ने अत्यन्त धोके के साथ उनको गिरफ्तार कर लिया परन्तु मरहठा सरदारों ने इस बात को सहन न किया और जमानत आदि देकर जीजीबाई को कन्दने के किले में पहुंचा दिया।

इसी समय शाहजी एक और चाल चला। फतहखां वजीर अहमदनगर तो गिरफ्तार हो ही चुका था फतहखाँने जो बादशाह तख्त पर बिठाया था उसको मुगलों ने पकड़कर ग्वालियर के किले में कैद कर दिया। शाहजी भोंसला ने तत्काल अहमदनगर के शाही खान्दान के एक अल्पवयस्क लड़के को सिंहासन पर बिठा दिया और आप इसका संरक्षक बन बैठा। बीजापुर के राज्य में इस समय दो बलशाली सरदार थे अर्थात मुरारपंत और अब्दुल्लाखां। यह दोनों शाहजी के पक्षमें थे और गुप्तरूप से बीजापुर का अधिपति भी इनका सहायक था। शाहजहां को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन चालों पर और भी क्रोध आया। महावत खाँ और इसका बेटा शाहशुजा दोनों इस लड़ाई में विफल यत्न रहे। अन्ततः औरङ्गजेब को नियत किया गया जो उस समय बिल्कुल नवयुवक था और नाममात्र ही इस सेनाका अधिपति था। शाहजी भोंसले को परास्त करने के लिये दो जनरल खानजमा और खाँनदौरा नामक नियत किये गये और इस काम के लिये उनको एक बहुत बड़ी फौज दी गई तथापि वे दोनों जनरल शाहजी भोंसले को परास्त करने में सफल मनोरथ नहीं हुये। अन्ततः शाहजहांने शायस्ताखां और अलीवर्दीखां को भी उनकी सहायता के लिए नियत किया और ये चारों शाहजी भोंसले के विरुद्ध लड़ाई करते रहे, शाहजी पूरे दो साल तक उनको तंग करता रहा। माना कि बहुत से किले शत्रू के हाथ आगये और बहुत सा इलाका नष्ट भ्रष्ट हो गया परन्तु शाहजी हाथ न आया और शाहजहां ने बीजापुर के बादशाह को तंग करके संधि करने के लिये विवश किया।

अन्ततः शाहजी ने भी मुकाबला छोड़कर शाहजहां की आज्ञानुसार बीजापुर के बादशाहकी सेवा स्वीकार की। शाहजी उस समय तक अपनी वीरता चतुरता और दानाई के पर्याप्त प्रमाण दे चुका था, बीजापुर की सरकार ने ऐसे मनुष्य की सहायता को अच्छा समझा और उसे उसकी सम्पत्ति पुनः देदी। पूना भी इसकी जागीर में शामिल था। कुछ काल के बाद कुहार रूसकटी, बङ्गलोर, बालापुर और सीर उसकी सम्पत्ति में बढ़ाये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गये और फिर कुछ ही समय बाद करार प्रान्त में २२ देहात की देशमुखी* भी उसको दी गई। निदान इस प्रकार शाहजी ने बहुत सी जागीर और बहुत सा इलाका प्राप्त कर लिया।

बाल्य-काल

सन् १६२७ ई० में शाहजी भोंसला के घर में स्योनरी के किले में शिवाजी ने जन्म ग्रहण किया इनका पिता इस समय लड़ाई में प्रवृत्त था और वह और उसका श्वसुर एक दूसरे के विरुद्ध सेना में थे, जिसका फल यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में शिवाजी के पिता और इसकी माता में किसी कदर वैमनस्य हो गया। इसलिये सन् १६३० में शाहजीने एक और खान्दानमें विवाह कर लिया जिससे जीजोबाई मुसलमानों के हाथ आई इस समय वह अपने सम्बन्धियों के पास थी और उसने शिवाजी को किसी ऐसी जगह छिपा रक्खा था कि जहां से वह मुसलमानों के हाथ से बचा रहे।

छः वर्ष का बालक मुसलमान आक्रमणकारियों से बचता फिरता है इस अवस्थामें जबकि आजकल के बच्चे गलियों और बाजारों में खेलते फिरते हैं मातायें इस बात की चिंता नहीं करतीं कि वे कहां खेल रहे हैं। शिवाजी की माता अपने बच्चे को छिपाती थी और बड़ी सावधानी से इसको ऐसे स्थान में रखती थी कि जहाँ से वह शत्रुओं के हाथ से बचा रहे।

---

*देशमुखी एक हक का नाम था जिससे पैदावार का कुछ हिस्सा बतौर करके देशमुख को मिलता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन् १६३६ ई० तक शिवाजी ने अपने पिता के दर्शन नहीं किये अन्त को उसके माता-पिता में फिर मेल हो गया। शाहजी शिवाजी की शादी करके कर्णाटकके युद्धमें गये और शिवाजी माता सहित पूना में रहे।

शिवाजी के बाल्यकाल की एक कहानी प्रसिद्ध है जिससे उनके आगामी पवित्र जीवन का वृत्तान्त मालूम होता है। कहते हैं जब शाहजी दरबार बीजापुरमें था तब एक दिन मुरारपंतने शिवाजी से कहा कि 'चलो आज तुमको दरबार में ले चलें और बादशाहको सलाम करायें।' होनहार बालक ने इस पर प्रसन्नता की बजाय घृणा प्रकट की और कहा कि हम हिन्दू हैं, बादशाह यवन है और महायवन है और महानीच है। हम गौ और ब्राह्मण के दास हैं, वह उनका शत्रु है। हमारा और उसका मेल नहीं हो सकता। मैं ऐसे मनुष्यके दर्शन करना नहीं चाहता जो हमारे धर्म का शत्रु है और न मैं उसे छूना चाहता हूँ। मैं ऐसे मनुष्य को बादशाह नहीं मानता और न उसको सलाम करना चाहता हूँ। सलाम तो एक तरफ रहा मनमें आता है कि उसका गला काट डालूं। मुरारपंत बच्चे की यह बात सुनकर आश्चर्य करने लगा और उसके माता पिता को समस्त वृतान्त सुनाया। माता पिता दोनों ने समझाया कि "बेटा! यह समय इस प्रकार की बातों का नहीं है, इस समय मुसलमानों का राज्य है, उनके बादशाह को सलाम करना हमारा धर्म है" निदान ज्यों त्यों करके शिवाजी को दरबारमें ले गये, परन्तु शिवाजी ने बादशाह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को न मुजरा किया और न सलाम ही। उसके बापू और मुरारपंत ने यह कह कर कि "बच्चा है, दरबार के नियम नहीं जानता" बात टाल दी। शिवाजी ने दरबार से लौट कर स्नान किया और नवीन वस्त्र पहने।

शाहजी के नौकरों में से दो मनुष्यों पर शाहजी का बहुत विश्वास था, उनमें से एक का नाम दादाजी करनदेव था। पूना का प्रबन्ध इसके सुपुर्द था, और शिवाजी तथा उनकी माता की रक्षा का भार भी उसी के ऊपर था, दादाजी एक विचारशील पुरुष था। शिवाजी की उत्तम शिक्षा उसी के श्रम का फल है। उसने अपने कर्त्तव्यों को बड़ी बुद्धिमत्ता से पूर्ण किया। जागीर का प्रबन्ध इस उत्तमता से किया कि खेती में खूब दूनी उन्नति होने लगी और इलाके की जनसंख्याभी बढ़गई। सबसे अधिक चतुराई उसने इस बात में दिखलाई कि अपने इलाके की समस्त पहाड़ी आबादी को जिनको मावला कहते थे अपना दास बना लिया। प्रजा बहादुर और लड़ाका, किन्तु बिल्कुल निर्धन थी। उसने कई वर्ष तक इन लोगों से बिल्कुल लगान नहीं लिया, प्रत्युत अनेक प्रजा के बहुत से मनुष्यों को अपना नौकर रख कर उनका पालन किया। दादाजी की यह दूरदर्शिता शिवाजी के काम आई, जहाँ उसने जागीर का इतना उत्तम प्रबन्ध किया साथ ही शिवाजी को शिक्षा देने में भी किसी प्रकार की कमी न छोड़ी। जितना बन सका पढ़ाया लिखाया, इस समय मरहठों में पढ़ने लिखने की इतनी चर्चा नहीं थी बल्कि युद्ध-विद्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीखना ही उनका प्रधान कर्त्तव्य समझा जाता था। शिवाजी शैशवावस्था में ही घोड़े पर चढ़ने में अद्वितीय और शस्त्र चलाने में अनुपम हो गये लक्ष्य लगाने और भाला चलाने एवं तलवारों के प्रयोग करने में भी सब जगह प्रसिद्ध होगये उन समस्त रीतियों को भी दादाजी के अनुग्रह से जान गया जो उस जैसे वीर के लिये आवश्यक थीं। रामायण एवं महाभारत के सुनने का उसको बड़ा शौक था, यहां तक प्रेम कि बड़ी अवस्था में अपने प्राणों को सकट में डालकर भी जहां कथा होती वहाँ पहुंचता था उसके धार्मिक विचार बड़े दृढ़ थे। थोड़ी ही अवस्था से मुसलमानों के जुल्मों से इतना घृणा हो गई थी कि समस्त जीवन बनी रही।

शिवाजी को जवानी में माविली लोगों से मिलने का अवसर बहुत मिला। उसने उन लोगों के गुणों को भले प्रकार जाना और आरम्भ ही से ऐसी मित्रता की कि अन्त तक वे उसके सहायक रहे। जागीर के प्रबन्ध में भी दादाजी शिवाजी को शिक्षा देता रहा, जिसके कारण वह सर्वप्रिय हो गया। शिवाजी के हृदय में स्वतन्त्रता की अभिलाषा पहले ही से थी जो अभी से रङ्ग दिखाने लगी। कभी २ वह दिन दिन भर गायब रहता और ऐसे लोगों से मिलता जो किसी राज्य के आधीन नहीं थे और न किसी कानून के पाबन्द थे। दिनों और रातों जगलों में घूमता रहता, यहां तक कि कुछ यह ख्याल करने लगे कि शाह जी का पुत्र शिवाजी डाकुओं से मिलगया और ये शिकायतें दादाजी के कानों तक भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहुंची। इसकी रोक के वास्ते जागीर का बहुत बड़ा हिस्सा उसके अधीन कर दिया इससे इतना प्रभाव अवश्य हुआ कि दिनकी अनुपस्थिति जाती रही किन्तु जो चीज़ उसकी प्रकृति में मिल गई थी वह कैसे दूर हो सकती थी! शाहजो की जागीर में कोई किला नहीं था और आत्मरक्षा एवं धर्म रक्षा के लिए इस समय किले का होना बहुत आवश्यकीय था। शिवाजी के मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ कि किसी न किसी तरह कोई किला हाथ आये। मावली लोगों के मनों को तो शिवाजी जीत ही चुका था, देश के दुर्गम मार्ग को शिकार खेलने में जान चुका था, बस किले का प्राप्त करना शिवाजी के लिए ऐसा कठिन कार्य न था कि वह चुपचाप बैठा रहता।

पूना के पश्चिम भाग में २० मील की दूरी पर तोरण नामक पहाड़ी किला था, जिसका मार्ग बहुत कठिन था शिवाजी ने अपने मावलियों की सहायता से सबसे पहले तोरण के दुर्गाध्यक्ष से परिचय प्राप्त किया, अन्ततः उसको किसी ढङ्ग से इस बात पर प्रसन्न करलिया कि वह उपरोक्त किला उस के अर्पण करदे शिवाजी के जीवन का सबसे पहला काम जो बिना किसी लड़ाई के समाप्त हुआ तोर्ण के दुर्ग को प्राप्त करना था जो सन् १६४६ ई० में सफल हुआ। उस समय जबकि शिवाजी की अवस्था १६ वर्ष की थी दुर्ग प्राप्त करके शिवाजी ने अपने वकील बीजापुर को भेजे ताकि वह बादशाह पर यह प्रकट करें कि शिवाजी ने वह काम केवल बादशाही सेवा को ही दृष्टिगत रखकर किया है। इसने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने वकीलों के द्वारा यह निवेदन भेजा कि ऐसे देश में शिवाजी जैसे वीर नौकर के रहने से बहुत लाभ होना सम्भव है। साथ ही पहले जागीरदारों के बदले दुगुना कर देने का इकरार किया, उधर दरबार में शिवाजी के वकील इस निवेदन के प्रकट करने के ढङ्ग निकाल रहे थे, इधर शिवाजी अपने किले को सुदृढ़ बनाने और सेना के बढ़ाने में लगा हुआ था। दरबार वालों ने इस निवेदन के उत्तर देने में जानकर देरी की, परन्तु यह विलंब शिवाजी के लिए बहुत लाभदायक प्रतीत हुआ। सौभाग्य से किले के खण्डहर खोदते खोदते एक खजाना भी हाथ लग गया, जिस से शिवाजी ने शस्त्र खरीद कर एक और किले के बनाने की ठानी अतः तोरण से तीन मील दक्षिण पूर्व में महोबिदा की पहाड़ी पर उसने एक और किला बनाया जिसका नाम राजगढ़ रखा यह मरते दम तक उसकी राजधानी रहा।

जब इस समस्त कार्य्यवाही की रिपोर्ट बीजापुर पहुंची तब उन्होंने शिवाजी को इस अभिप्राय के परवाने रवाना किए। कि वह अपनी हरकतों से बाज आये और साथ ही शाहजी को कर्नाटक में लिखा कि वह अपने बेटेको समझाये। शाहजी ने लिख दिया कि "मेरे बेटे ने मेरी सम्मति के बिना लिये ही ऐसा किया है। क्योंकि मैं और मेरे सम्बंधी दरबार के शुभचिन्तक हैं इस लिए सम्भव यही है कि शिवाजी ने जो कुछ किया है वह केवल जागीर की उन्नति और रक्षा ही के लिए किया होगा।" इधर शाहजी ने दादा जी को लिखकर अपनी अप्रसन्नता प्रकट की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और उनसे उत्तर माँगा और उसके द्वारा शिवाजी को कहला भेजा कि वह भविष्य में ऐसा न करे। इस संदेश के पहुंचने पर शिवाजी को बड़ी चिन्ता हुई। एक ओर तो बाप की आज्ञा दूसरी ओर धर्म और राज्य प्राप्त करने की प्रबल इच्छा। उस समय उसके मनमें अद्भुत विचार उत्पन्न हो रहे थे, उसके मनकी अद्भुत दशा थी। अन्त में उसने अपनी प्यारी स्त्री से सम्मति ली स्त्री ने रीत्यनुसार पहिले तो कहा कि स्त्रियों की सम्मति ठीक नहीं होती क्योंकि उनकी बुद्धि बहुत कम होती है यदि आप मेरी सम्मति पूछते हैं तब तो गौ ब्राह्मण की रक्षा करना और धर्मकी रक्षा करना बनिस्बत पिता की आज्ञा मानने से अधिक अच्छा है, बुद्धिमती स्त्री ने यह भी कहा कि 'शाहजी यहाँ से दूर हैं उन को क्या मालूम कि इस इलाके पर कौन कौन सी विपत्ति पड़ रही है यदि वह यहां होते तो कभी ऐसा न कहते प्रत्युत आपको इस काम में सहायता देते। शिवाजी की इच्छा तो थी ही इधर स्त्री के बचनों ने मानो अग्नि पर घी डाल दिया। उसने अपने विचार दृढ़ कर लिए यद्यपि दादाजी ने भी आदेशानुसार उसे समझाया, क्योंकि दादाजी उसका शिक्षक और रक्षक रहा था इसलिए वह उसको ऐसे उत्तर दे देता था जिससे कि वह प्रसन्न हो जाय। शिवाजी के हृदय में धर्म रक्षा की अग्नि प्रज्वलित थी, दादाजी भी समझ गये कि शिवाजी के विचार अटल हैं उसने चुप रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय उचित न समझा। कुछ समय बाद दादाजी स्वर्ग लोक को सिधार गये। मरने से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहिले उसने शिवाजी को बुलाया और बजाय इसके कि वह उसको इस काम से रोके यह उपदेश किया कि वह धीरता से स्वतन्त्र होने की चेष्टा करता रहे, गौ ब्राह्मण और प्रजा की रक्षा में लगा रहे हिन्दुओं के मन्दिरों को बरबादी से बचाये और अपने लिये खुद भी नाम पैदा करे। वृद्ध शिक्षक के इस उपदेश ने वीर शिवाजी के हृदय में नवीन उत्साह उत्पन्न कर दिया। बस अब क्या था खुल्लमखुल्ला कार्यवाही आरम्भ हो गई। जिस का भय था उसने भी मरते समय आज्ञा देदी। दादाजी की आज्ञा उसके लिये ईश्वर आज्ञा थी जिसका पूरा करना उसका परम कर्त्तव्य था।

दादाजी के मरने पर शिवाजी ने अपने पिता की तरफ से जागीर का प्रबन्ध हाथ में लिया और जब उसके बापने शेष मालगुजारी का हिसाब मांगा तो लिख भेज कि इस निर्धन इलाके की आय इसके व्यय के ही लिये काफी होती है बचने बचाने की कोई गुंजाइश नहीं। सारी जागीर में केवल दो आदमी थे जो शिवाजी से सहमत नहीं थे इसलिए जरूरी था कि या तो उनको अपने पक्ष में किया जाय और या उनको पृथक किया जाय। उनमें से एक मिरङ्गाजीनसी था और दूसरा बाजी मोहती। पहला चाकन के किले का रक्षक था और दूसरा शाहजी की दूसरी स्त्री का भाई था और सोआ का जिला इसके अधीन था। शिवाजी के दूतों ने मिरङ्गाजी को तो अपने पक्ष में कर लिया। बस अब केवल बाजी मोहती बाकी रह गया। शिव जी इसकी चिन्ता ही में था कि गोन्दाने का किला भी उसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाथ में आ गया। किले के रक्षक मुसलमान ने एक बड़ी घूंस खाकर वह किला शिवाजी के अर्पण कर दिया। यह किला और किलों से बड़ा और उचीत स्थान पर था। उसका नाम शिवाजी ने सिंहगढ़ (शेर का स्थान) रक्खा, इसी नाम से वह अब तक प्रसिद्ध है। बाजी मोहती के पास ३०० चुने हुए सवार थे और सोओं पर इसका कब्जा था। शिवाजी ने इसको कई बार लिखा और वह भी चिकने चुपड़े उत्तर देता रहा परन्तु शाहजी की बिना आज्ञा के उसने हिसाब के चुकाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। शिवाजी अपने मावलियों को लेकर रात को उस पर जा पड़ा और मोहती का उसके साथियों सहित कैद कर लिया, मोहती को उसने कर्णाटक को रवाना कर दिया और शेष आदमियों में से जिन्होंने उसकी नौकरी स्वीकार कर ली उन को तो अपने पास रख लिया और दूसरों को कर्णाटक ही अपने पिता के पास भेज दिया। इस इलाके में कर्णाटक और पूर्णधर ही बड़े किले थे जो शाही अफसरों के हाथ में थे और जिन पर आरंभ ही से शिवाजी की दृष्टि थी इन में से एक किला तो मुसलमान किलेदार को घूंस देकर ले लिया था अब दूसरे किले की ताक में था कि इतने में दूसरा किलेदार मर गया।

मृत किलेदार के तीन पुत्र थे जिन में बड़े बेटे ने बिना शाही आज्ञा के आये हुये ही अपने पिता की जगह संभाल ली और किलेदार बन बैठा। दोनों छोटे बेटे शिवाजी की सहायता चाहने लगे इस बहाने से शिवाजी ने पूर्णधर किले के नीचे डेरा जा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by SarayuTrust.eGangotri

लगाया; सब भाइयों ने शिवाजी को उसके कई सरदारों सहित किले में निमन्त्रण दिया और शिवाजी रात्रि को किले में रहा। उसी रात मौका पाकर उसने बड़े भाई को तो कैद कर लिया। और दूसरे भाइयों एवं अन्यान्य किला निवासियों को भी अपने हाथ में कर लिया। इस कूटनीति से किले को अपने बश में कर उसने किले के बदले बहुत सी जागीर उन तीनों भाइयों को दे दी और तीनों को अपनी सेवा में ले लिया।

निदान उसने थोड़े ही समय में बिना किसी प्रकार की लड़ाई के वह समस्त जागीर अपने हाथ में कर ली जो चाकिन और गोरा के बीचमें हैं। बीजापुर का बादशाह इस समय महल और कबरें बनाने में लगा हुआ था और इसका सेनापति शाहजो कर्णाटक की लड़ाई पर नियुक्त था और उधर दौरा कर रहा था।

शाहजी की कैद और छुटकारा

२१ वर्ष की अवस्था तक जो कार्य्य शिवाजी ने किये उनका हम ऊपर लिख चुके। स्वतन्त्रता एवं राजपाट की प्रबल अभिलाषा ने उसको धन की ओर प्रवृत्त कर दिया और नवीन युद्धों के लिये नवीन २ सामग्री एकत्रित करने लगा। एक ओर तो उस ने सेना एकत्रित करके उस को सजाना आरम्भ कर दिया दूसरी तरफ अपने दूत समस्त इलाके में भेज दिये ताकि वे हिन्दू प्रजा को उसके पक्ष में मुसलमानों से घृणा उत्पन्न करायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी की स्वतन्त्र कार्य्यवाही के सम्बन्ध में यदि किसी को सन्देह था तो वह शीघ्र एक ऐसी घटना से दूर हो गया जो इस बात का पर्य्याप्त प्रमाण था कि शिवाजी अपने आप को किसी बादशाह के आधीन न समझता था इस लिए किसी से न दबता था। जब उस को यह समाचार मिला कि मुल्ला अहमद (कल्याण का हाकिम) ने एक बहुत बड़ा खज़ाना बिहार को ओर भेजा है तब वह २०० सवार लेकर जा पड़ा और खज़ाना लूट लाया। अभी इस लूट की खबर दरबार बीजापुर में पहुंची ही थी कि साथ ही यह खबर भी मिली कि शिवाजी ने निम्न लिखित किलों पर कब्जा कर लिया है-कंगोरी, टोंगटकोन, भोरय, कादरी, लोहगण और राजपाजी। इनके अतिरिक्त शिवाजी के आदमियों ने ताला, गौशाला और राइरी नामी ग्रामों पर भी अपना अधिकार कर लिया है। इस पर भी तृप्ति नहीं हुई प्रत्युत कान्कन के इलाके के बहुत से शहरों को लूट कर राजगढ़ में बहुत सा सम्पत्ति एकत्रित कर ली है।

जिन लोगों को दादा जी ने शिक्षा दी उनमें से एक आपाजी सोनदेव था जो केवल वीर ही न था बल्कि बहुत धीर-चतुर था। इसने कल्यान पर चढ़ाई करके मुल्ला अहमद की कैद कर लिया। बस फिर क्या था इस इलाके में जितने और सुरक्षित किले थे हाथ में आ गये! शिवाजी को जब यह समाचार मिला तब बहुत प्रसन्न हुआ और कल्यान पहुंच कर बहुत सा धन और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

माल सोनदेव को दिया और इस इलाके का उस को सूबेदार नियत कर दिया, साथ ही बड़ी बुद्धिमत्ता से इलाके प्रबन्ध में लग गया। माल गुजारी का प्रबन्ध देश की प्राचीन रीती के अनुसार आरम्भ किया और जो जायदादें हिन्दुओं के प्राचीन मंदिरों और स्थानों की थीं और मुसलमानों ने छीन ली थी फिर मंदिरों को दी गई। साथ ही गौशाला और राइरी के निकट मजबूत किले बनवाने आरम्भ कर दिये। दोकिले बने, एक भदारी और दूसरा लङ्गाना। मुल्ला अहमद से जिस को आपाजी ने क़ैद कर लिया था शिवाजी बड़ी प्रतिष्ठा के साथ मिला और उसको छोड़ दिया! वह वहां से छुट सीधा दरबार में पहुंचा जहां उसने शिवाजी की शक्ति का वृतान्त सब को कह सुनाया। आदिलशाह को बड़ी चिन्ता हुई। इसके मन में यह संदेह था कि यह सब कार्य्यवाही शाह जी के षडयन्त्र से हो रही है और चूंकि कर्नाटक में शाहजी बड़े जोर में था बादशाह ने शिवाजो के विरुद्ध कार्य्यवाही करने को मुलतवी रखा। शाहजी के साथ एक और व्यक्ति जो मौचूल निवासी बाजी घोरपुर नामक था— बादशाह ने उसको लिख भेजा कि किसी न किसी प्रकार शाहजी को गिरफ्तार करलें। उक्त बाजी ने शाहजी को दावत के बहाने अपने मकान पर बुलाकर कैद कर लिया और दरबार में भिजवा दिया। जब शाहजी दरबार में आया तब उससे कहा गया कि वह शिवाजी को विद्रोह से हटावे अन्यथा कुशल नहीं है। शाहजी ने शिवाजी को बहुत लिखा किन्तु उस ओर से कोई उत्तर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं मिला। उधर उसने बादशाह से बहुत प्रार्थना की कि शिवाजी से मेरा कुछ सबन्ध नहीं है, वह बादशाह ही का विद्रोही नहीं है, अपितु मेरा भी विद्रोही है। परन्तु बादशाह ने एक न सुनी और अन्त में क्रोध में आकर आज्ञा दी कि शाहाजी को किसी अन्धकारमय गढ़े में कैद कर दिया जाय। और एक सूराख को छोड़कर उसका द्वार भी चिन दिया जाय। साथ ही यह भी धमकीदी कि यदि शिवाजी शीघ्र ही अराजकता फैलाना बन्द न करेगा तब यह सूराख भी बन्द कर दिया जायगा और शाहजी जीवित ही गाड़ दिया जायगा।

जब शिवाजी को यह समाचार मिला उसे बड़ी चिन्ता उपस्थित हुई। एक ओर पिता का जीवन संकट में था दूसरी ओर वर्षोंकी कमाई नष्ट होती थी और स्वतंत्रता की आशालता, जिस पर कि फल आने वाला था सूखी जाती थी। शिवाजी इसी उधेड़बुन में था कि उसकी बुद्धिमती स्त्री ने समझाया कि क्षमा प्रार्थना की बजाय स्वतंत्रता से जो कार्य्यवाही की जायगी वह शाहजी के लिये अधिक लाभदायक होगी। शिवाजी ने इस समय तक मुगलों के राज्य में हाथ नहीं डाला था इसलिये इस दूरदर्शिता से लाभ उठाने के लिये शाहजहां से पत्र व्यवहार आरम्भ किया जिसका यह फल हुआ कि शाहजहांने इस बात को स्वीकार कर लिया कि शाहजीके समस्त अपराध क्षमा कर दिये जायें और शिवाजी को भी पांच हजारी का पद देने का विचार किया! चुनांचि शाहजहां की कृपा और मुरारपन्त के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभाव के कारण शाहजी को कैद से छुटकारा मिला, यद्यपि वह चार वर्ष बीजापुर के दरबार में उपस्थित रहा।

शिवाजी को बांधने का यत्न

जब तक शिवाजी के पिता दरबार में उपस्थित रहे उन्होंने अपनी कार्य्यवाही को शिथिल रक्खा! बीजापुर के बादशाहने भी कोई कार्यवाही शिवाजी के विरुद्ध नहीं की कि कहीं समस्त जीता हुआ राज्य देहली के बादशाह के अर्पण न करदे तथापि दरबार बीजापुर शिवाजी की ओरसे बेसुध नहीं था इस बातकी गुप्तचेष्टा होती रही कि किसी प्रकार शिवाजी को गिरफ्तार किया जाय। एक नीचात्मा हिंदू बाजी शामराजी नामक ने इस काम के लिये बीड़ा उठाया और जिस इलाके में शिवाजी रहते थे वहां ताक में बैठ गया। शिवाजी को खबर लग गई उसने स्वयं बाजी और उसके साथियों पर आक्रमण करके उनको जंगल में भगा दिया, जावली के राजा चन्द्रराव ने इस विश्वासघाती को अपने राज्यमें होकर जाने दिया था शिवाजी ने भरसक कोशिश की कि राजा को इस बात पर प्रसन्न करे कि मुसलमानों के विरुद्ध अपने देश की स्वतंत्रता उत्पादन करने में भागले, परन्तु जावला राजा ने इस बात को न माना इसके विरुद्ध उसने उस पार्टी को जो शिवाजी को गिरफ्तार करने के लिये जा रही थी अपने राज्य से जाने दिया। शिवाजी के मित्रों को उसके इस अनुचित कर्म पर क्रोध आया और वह उससे बदला लेने की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताक में लगे रहे। यहां तक कि इस काम में उन्होंने धोखे से काम लेना भी उचित समझा। राघोलाल और सम्भाजी कवाजी मित्रभाव से इसके राज्य में जा घुसे और एक प्राइवेट मुलाकात में उसे मार डाला, बाहरसे उनके साथियोंने चहुंओरसे जावली को जा घेरा। राजा चन्द्रराव के पुत्र और उनके मन्त्री अत्यंत वीरता से लड़े अन्त में वजीर हिम्मतराव मारा गया, बेटे कैद होगये और जावली राघोलाल के हाथ आगया। समस्त मरहठा इतिहास लेखक एक मत होकर यह लिखते हैं कि राघोलाल आदि ने यह काम शिवाजीको बिना सूचना दिये हुये किया इसलिये यह धोखाबाजी शिवाजीके शिर नहीं मढ़ी जासकती। राजा चन्द्रराव का राज्य शिवाजी के हाथ आजाने से शिवाजी का साहस बहुत बढ़ गया और उसने खेरा पर आक्रमण किया। बदल देशमुख ने जो आक्रमण के समय किले में था खूब वीरता के साथ मुकाबला किया और उसके आदमियों ने उस समय तक आधीनता का नाम न लिया जब तक कि बन्दल लड़ता हुआ मारा न गया। अन्त को किला शिवाजी के हाथ आगया और मुकाबला करने वालों में से देशमुख आजीप्रभु के साथ बड़े सम्मान से मिला शिवाजी ने उसको समस्त पैतृक अधिकार दे दिये और उसको अपनी आधीनतामें लेलिया। एक पैदल सेना की बड़ी संख्या उसको दीगई और उसने अपनी शेष आयु बड़ी भक्ति के साथ शिवाजी की सेवा में व्यतीत की।

नीर एवं किश्ना (कृष्णा) नदी के किनारे पर जो इलाका शिवाजी का था उसकी रक्षाथे एक किला कृष्णानदी के निकास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर बनवाने का काम अपने कार्यकर्त्ता एक ब्राह्मण के सुपुर्द किया जिसने अत्यन्त बुद्धिमत्ता से इस काम को पूर्ण किया। इस किले का नाम प्रतापगढ़ रखा गया। निदान इस प्रकार अपने राज्यको बढ़ाकर और सेना को दृढ़कर उसने बीजापुर से भी अधिक शक्ति वाले राज्य को हानि पहुंचाने का विचार किया।

मुगल साम्राज्य का विरोध

पूर्व इसके कि हम कुछ शिवाजी की नवीन कार्यवाहियों का वृत्तान्त सुनायें ऐतिहासिक श्रेणीको स्थित रखने के लिये आवश्यक है कि संक्षेप से कुछ उस चालबाजी का भी जिक्र करें, जिससे काबू पाकर औरङ्गजेब हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठा। हिन्दुस्तानके इतिहासमें यह वह समय है जब औरङ्गजेब राजनीतिक शतरंज की चालें चल रहा था। यहां तक कि उसने बादशाह शाहजहांको हराकर आपने बाजी जीत ली थी। प्रायः देहली के बादशाह दक्षिण की मुसलमानी बादशाहतों को हड़प करनेकी सोचते रहतेथे क्योंकि देहलीके सिंहासनका महत्व स्थिर रखनेके लिये आवश्यक था कि गोलकुण्डा और बीजापुरके राज्य "कर" देते रहें। यद्यपि शाहजहाँ ने भी कई बार इनके विरुद्ध लड़ाईकी और किसी सीमातक उनको हानि भी पहुंचाई। कुछ दिन तो ये राज्य एकत्रित होकर मुगल राज्यके सामने डटे रहे, किन्तु उनके दुर्भाग्य से दूसरी बार फिर औरङ्गजेब को कंधार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की लड़ाई में जय प्राप्त होने पर दक्षिण का शासक नियत किया गया।

उसको इस बात का बहुत ध्यान था कि इन दोनों रियासतों को हराकर मुगलराज्य के सूबे बनाये जायें, इन दोनों राज्यों में हिन्दुओं का जोर था और हिन्दू पदधारियों की बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान था। गोलकुण्डे का बादशाह इस समय कुतुब शाह था और मीरजुमला जो हिन्दुस्तान के इतिहास में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हुआ है उसका प्रधान मन्त्री था। मीरजुमला के पुत्र मुहम्मदअमीन से कुछ अपराध बन गया और बादशाह ने उसको दण्ड देनेकी ठान ली। मीरजुमला को यह बहुत बुरा लगा और उसने शाहजहां के पास इस बात की शिकायत की। औरङ्गजेब ने भी शाहजहां के कान खूब भरे क्योंकि वह लड़ाई के लिये कोई बहाना ढूंढताही था। जिसका यह फल हुआ कि शाहजहां ने क्रोध में आकर एक सख्त चिट्ठी लिखी। कुतुबशाह को यह बात बुरी मालूम हुई और उसने तत्काल मुहम्मदअमीन को कैद कर लिया, और मीरजुमला की समस्त सम्पत्ति जब्त करली। बस फिर क्या था? औरङ्गजेब को अवसर मिल गया औरङ्गजेब ने तत्काल लड़ाई ठान ली। औरङ्गजेब युद्धों में सबसे अधिक काम धोकेसे लेता था। इस अवसर पर भी उसने अपने बड़े बेटे मुहम्मद सुलतान को बहुत सेना देकर गोलकुण्डे की तरफ रवाना किया परन्तु कुतुबशाह को यह सूचना दी कि शाहजादा शादी के लिये अपने चचा बङ्गालके सूबेदार के पास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाता है। वह बेचारा इस बेईमानी को जानता न था। कुतुबशाह को तभी पता लगा कि जब सुलतान मुहम्मद इसके शहरके द्वारों पर आ जमा विवशतया कुतुबशाह ने अत्यंत हीन भावसे संधि करली और एक करोड़ रुपया वार्षिक कर देना स्वीकार कर लिया मीरजुमला दर्बार में देहली बुला लिया गया और वहां इसको मंत्रीका पद मिलगया। इसी बीचमें मुहम्मद आदिलशाह बीजापुर धीश भी नवीं नवम्बर सन् १६५६ ई० को मरगया, दाराशिकोह के द्वारा इस बादशाहका शाहजहां से परिचय था। इस कारणभी औरङ्गजेब इसको हानि पहुंचाने की चिंता में रहा। इसके मरते ही इसका बड़ा बेटा अली आदिलशाह तख्त पर बैठ गया और उसने देहली नरेश के किसी आदेशपत्र की प्रतीक्षा नहीं की। मुगलों को यह बात बुरी मालूम हुई और उन्होंने यह बहाना बनाया कि अली आदिलशाह, मुहम्मद आदिलशाह बादशाह बीजापुरका बेटा नहीं है और इस बहाने से बीजापुर पर चढ़ाई करदी। मीरजुमला और औरङ्गजेब इस लड़ाई के अफसर थे, बहुत सी लड़ाई और मुकाबलेके पश्चात बादशाह बीजापुर जो शहंशाही सेना के सामने न जम सका, क्षमा का प्रार्थी हुआ। औरङ्गजेबको शाहजहां की बीमारी की खबर मिली औरङ्गजेब ने बीजापुर के बादशाहकी संधि को उचित समझा और सन्धि कर झट देहलीको चल दिया। इधर मुरादबख्श गुजराभी आगरे की ओर आरहे थे। दाराशिकोह शाहजहांकी आज्ञानुसार राजधानी में राज्य का कार्य कर रहा था औरङ्गजेबने मुरादबख्शको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह दम दिया कि मैं तो फकीर हूँ मुझे राज्य से क्या सम्बन्ध ? दाराशिकोह और शुजा को काबू करके तुम्हें सिंहासन पर बिठाऊंगा और मैं भजन करूंगा। मुझे तो ईश्वर भक्ति चाहिये, राज्य से मुझे क्या सरोकार ? दुर्भाग्य से मुरादबख्श इस पट्टी में आ गया। मुराद और औरंगजेबकी सेनाओंने मिलकर दाराशिकोह की फौजको भगा दिया। इसके बाद फिर इसी प्रकार औरंगजेब ने अपने सब भाइयों को पकड़ २ कर मारा और पिताको कैदकर स्वयं राज प्राप्तकिया यह समस्त वृत्तान्त हिन्दोस्थानके इतिहासज्ञों को भले प्रकार मालूमहै। निदान १६५७ ई० में औरंगजेब आगरे के सिंहासन पर विराजमान हो गया। शिवाजी औरंगजेब को खूब समझता था उसने औरंगजेब के सिंहासनाधीश होते ही उनसे पत्र व्यवहार आरम्भ किया। औरंगजेब ने शिवाजी जैसे विपक्षी से संधि करना ही उचित समझा और बड़ी प्रसन्नता से आज्ञा देदी कि जो कुछ इलाका शिवाजीने बीजापुरकी रियासत से छीन लिया है वह उसी के पास रहे और साथ ही यह प्रकट किया कि दाबल और समुद्र के किनारे के अन्य मुकामों को भी शिवाजी अपने अधीन करले। यों तो बीजापुर के राज्य को शक्तिहीन करने के लिये ऐसा किया गया परन्तु वास्तव में औरङ्गजेब शिवाजी को गिरफतार करने की चेष्टा में लगा रहा। इसने अनेक युक्तियाँ लड़ाईं, बीसों तर्कीबें मिलने की कीं, परन्तु शिवाजी हाथ न आया, अलग ही रहा। उसने यह भी प्रकट कर दिया कि वह मुग़ल सम्राट् से भी दो हाथ करने को तय्यार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मई सन् १६५७ ई० में उसने रात के समय नीर शहर को (जो मुगलों के इलाके में था) घेर लिया और खूब लूटा। यहां से उसको तीन लाख पोगड़ा एक लाख घोड़े और बहुत से अमूल्य वस्त्र तथा अन्यान्य चीजें हाथ आईं जो उसने तत्काल ही पूना और राजगढ़ भेज दीं। शिवाजी स्वयं ऐसे मार्ग से जिस पर बहुत आदमी नहीं चलते थे अहमदनगर पहुंचा और उसको लूटना आरम्भ कर दिया परन्तु किले की सेना के सावधान होने पर ७०० घोड़े और ४ हाथी लेकर शहर से बाहर निकल गया। पूना पहुंचकर उसने अपनी सेना का बढ़ाना आरम्भ किया। बहुत से घोड़े खरीदे और सवारों को नौकर रक्खा, मानक जी को जो उसके पिता का एक विश्वस्त नौकर रह चुका था फौज का अफसर नियत किया। और एक अन्य लोकप्रिय मरहठा शिरोमणि नेताजी पालकरको भी अपने साथ ले लिया। शिवाजी उस महती-शक्ति के विरुद्ध अपने भाग्य की परीक्षा करने लगा कि जो सौ वर्ष से भी अधिक से भारत की अधिपति चली आतीथी, जिसकी राजगद्दीपर कि आज औरङ्गजेब जैसा नृशंस और कपटी बैठा हुआ था। यद्यपि शिवाजी प्रबन्ध तो करने लगा था परन्तु मनमें निश्चय कर लियाथा कि जबतक सामना करने की पूर्ण सामग्री न हो जाय सामना न किया जाय और चापलूसी की बातों से औरङ्गजेब को भ्रम में ही रखा जाय।

हम ऊपर लिख आये हैं कि जब शाहजी दरबार बीजापुरमें कैद किया गया था तो शिवाजी ने शाहजहां को अपील की थी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और शाहजहां ने उसको पांच सहस्री का पद दिया था। शिवाजी ने स्वीकार करने के स्थान कुछ प्रान्तों के विषय में अपने दो मुखी और चतुर्थांश के अधिकार पेश कर दिये थे अन्ततो गत्वा शाहजहां ने प्रतिज्ञा की कि जब शिवाजी पांच सहस्री के पद को स्वीकार करके दरबार में आयगा तो इन अधिकारों पर भी विचार किया जावेगा। शिवाजी ने अब पुनः इस विषय में औरङ्गजेब के साथ वार्तालाप आरम्भ किया और बीजापुर के "आदिलशाह" के कुप्रबन्ध की नींव पर कांकन प्रान्त पर स्वत्व जमाने की आज्ञा चाही और पहले 'रघुनाथ' उसके पश्चात् 'कृष्णजी भास्कर' इसी अभिप्राय से वकीलों के ढङ्ग पर मुगलिया दरबार में भेजे।

"औरङ्गजेब" उस समय राजपूतों से लड़ रहा था उसने भी अहोभाग्य समझा कि शिवाजी की ओर से चिन्ता टल जाय। इसके बिना उसने यह भी सोचा कि यदि शिवाजी और "आदिलशाह" बीजापुरी परस्पर लड़ते रहेंगे तो दोनोंमें से कोई भी मुगलिया-मण्डल पर हस्तक्षेप न करेगा, तथा दोनों परस्पर एक दूसरे की शक्ति को क्षीण कर देंगे। अतएव औरङ्गजेब ने शिवाजीको कोंकन प्रान्त पर अधिकार जमाने की आज्ञा देदी। परन्तु उसके वंशानुगत अधिकारों के विषयमें कहा कि बाबाजी "ज्ञानदेव" को दरबार में भेज दें कि वह इसके विषय में चर्चा करे। शिवाजी को इसने आज्ञा भेजी कि वह पांच सौ सवार राजकीय सेना में भेज दे तथा शेष सेना से राज्य मण्डल का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबन्ध स्थित रक्खे। शिवाजी तथा औरङ्गजेब दोनों एक दूसरे को खूब समझते थे किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह पत्र-व्यवहार यहां तक रहा और इसके आगे इससे कोई फल नहीं निकला अर्थात् कोई प्रतिज्ञा विशेष इन के मध्य में नहीं हुई। शिवाजी ने कोकन को प्राप्त करने के लिये तत्काल ही सामरिक प्रबन्ध आरम्भ कर दिये तथा समुद्र के तट पर बहुत से दृढ़ स्थानों को अपने कब्जे में कर लिया।

सामुद्रिक कार्य के लिये इसने कुछ बेड़े भी बनवाये। ७०० पठान सिपाही भी नौकर रक्खे। शिवाजी मुसलमानोंको नौकर रखने के यद्यपि अति विरुद्ध था परन्तु "गामाजी" नायक ने जो कि इसके मामा का अत्यन्त बुद्धिमान तथा विश्वास्त नौकर था और उसकी मांके साथ शिवाजी की ओर आगया था उसको समझा बुझाकर सात सौ पठान नौकर रखलिये। ये बीजापुर के पदच्युत सिपाही थे। 'राघोलाल' ब्राह्मण को इन पठानोंका नायक नियत किया। शिवाजी के मन्त्रियों में से सबसे उच्च अधिकार 'शामराजी पन्त' का था जिसको शिवाजी ने पेशवा का पद दिया था। कोकन की विजय प्राप्तिके लिये पुष्कल सेना एकत्रित करके उसको प्रबन्धकर्त्ता नियत किया। परन्तु अनुभव से सिद्ध हो गया कि शिवाजी का आर्थिक प्रबन्ध का मुखिया, सेना का मुखिया होने की योग्यता नहीं रखता था। तथाच उस पेशवा महाशय को बीजापुर की सेना ने पराजित किया जिससे कि शिवाजी को बहुत दुःख हुआ, क्योंकि जिस दिन से शिवाजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने हाथमें तलवार पकड़ी थी यह हार पहली हार थी, जोकि उसके भाग्य में आई। यद्यपि यह स्वयं इस पराजय का उत्तरदाता न था। अतएव 'शामराजीपन्त' को पीछे बुला लिया गया और मुखियापद से पृथक् कर दिया गया उसके स्थान पर 'रघुनाथ पन्त' सेनाध्यक्ष नियत हुआ। 'रघुनाथ पन्त' यद्यपि स्वयं रण-भूमि से पीछे नहीं हटा था परन्तु अपने विरोधी को भी न हटा सका, अन्तको वर्षा ऋतु के आरम्भ होजाने पर दोनों सेनायें संग्राम भूमि से हट गईं। इस समय में एक और बलवान शत्रु शिवाजी के सामने आया।

अफजलखान की घटना

बीजापुर की राजधानी ने इस समय अनुभव किया कि शिवाजी को अधीन करना अत्यावश्यक है। अन्यथा हाथ से सम्पूर्ण देशके निकल जाने का सन्देह है। तथाच उन्होंने इस मुहिम के लिए बहुत बड़े प्रबन्ध आरम्भ किये। 'अफजलखान' ने (जो दरबार बीजापुर का एक बहुत बड़ा पदाधिकारी था) इस सेना के सेनापतित्व के लिए अपनी सेवायें अर्पित कीं और चलते समय भरे दरबार में अत्यन्त अहंकार से यह कहा कि "मैं बहुत शीघ्र इस तुच्छ द्रोही को नग्न पांव दरबार में उपस्थित करूंगा। अन्यथा उसका सिर काट लाऊंगा।" शिवाजी को यह सब समाचार पहुंच गये और उसने प्रतापगढ़के दुर्ग में सामना करने की तैयारियां आरम्भ की। 'अफजलखान' ५०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सवार तथा ७००० पैदल सेना, तोपखाना व अन्य सांग्रामिक सामग्री साथ लेकर चल पड़ा।

प्रतापगढ़ का दुर्ग उन दुर्गों में से है कि जो शिवाजी ने स्वयं बनवाये थे। प्रतापगढ़ की स्थिति शिवाजी की बुद्धिमत्ता तथा विचारशीलता का प्रमाण देती है। दक्षिण छोर पर यह दुर्ग एक विस्तृत मण्डल (इलाके) की रक्षा करता है। पश्चिम में दरहपार के ऊपर है जो कि दक्षिण से कोकन जाने के लिये यथोचित मार्ग है। उत्तर में सावित्री तथा कृष्णा नदी के स्रोत हैं जो कि दुर्ग से कुछ ही मील दूरी पर 'महाबलेश्वर' के सदरों के समीप है। दक्षिण में कामना नदी बहती है तथा उसके तट इस दुर्ग की रक्षा में हैं। पश्चिम की ओर एक ऊँचा नीचा भाग पर्वती देश है जो कि कांकन से जा मिलता है तथा ६० मील तक बल खाता हुआ समुद्र से मिल गया है। प्रतापगढ़ एक दुर्गम पर्वतों की श्रेणी के उत्तरी भाग में हैं। किले की इमारत भी अत्यन्त मजबूत है। दोहरी तथा पक्की भीत उसके चारों ओर है। चार मीनार (बुरज) भी हैं।

दुर्ग के उत्तरीय भाग में शिवाजी की भवानी देवी का मन्दिर है। और ऊपरी भाग में महादेव तथा पार्वती का मन्दिर है। शिवाजी के अपने निवास का स्थान भी यही है जो कि कुछ ही वर्ग फीट में है। शिवाजी इस दुर्ग में ही था कि उसे सामने से कृष्णा की घाटी में अफजलखां की असंख्य सेना दिखाई दी। उसके आगे जो कुछ भी घटना हुई उस विषय में लेखकों का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मतभेद है। एक ओर यवन लोग (जो कि इतिहास लेखक हैं) इस बात पर सहमत हैं कि शिवाजी ने ज्योंही अफ़जलखां की सेना को देखा, त्यूंही डर गया और उसने समझा कि ऐसी पुष्कल सेना से सामना करना निष्फल है। इसलिये उसने अत्यन्त चापलूसी से सन्देशा भेजा और अत्यन्त दरिद्रता तथा नम्रता से क्षमा प्रार्थी हुआ। जिस पर अफ़जलखां ने एक गोपीनाथ नामी ब्राह्मण को शिवाजी के पास भेजा और कहला भेजा कि यदि शिवाजी आधीनता स्वीकार करेगा तो 'अफ़जलखां' का जिम्मा होगा कि वह शिवाजी को राजा से मिलाकर न केवल क्षमा ही करा देवे किन्तु इस आधीनता के प्रत्युपकार में जागीर में भी अधिकता करा देवे। शिवाजी ने उस ब्राह्मण को लालच देकर तथा धर्म की दुहाई से भरमा लिया और उसके साथ यह सम्मति की कि किसी प्रकार 'अफ़जलखां' को एकाकी शिवाजी से मिलावे तथाच यह प्रस्ताव किया गया कि 'अफ़जलखाँ' को सन्देश भेजा जावे कि यदि आप निस्सन्देह सच्चे हैं और आपकी भावना में किसी प्रकार का भी पाप नहीं है तो स्वयंमेव एकाकी दुर्ग के समीप आकर मुझसे मिलिये और शपथ खाइए कि आप मुझसे वंचना अथवा धोका नहीं करेंगे। मुसलमान निरीक्षक कहते हैं कि ऐसा सन्देश उसे ब्राह्मण द्वारा भेजा गया और 'अफ़जलखां' ने इस बात को मान लिया तथा एकाकी उस स्थान को चला गया जो कि शिवाजी ने भेंट के लिये अपने दुर्ग के नीचे नियत किया था। जब अफ़जलखां बगलगीर होने को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगे बढ़ा तो शिवाजी ने (जो सुसज्जित था) अपने जातीय शस्त्र कछवे से उसका पेट फाड़ दिया और तलवार से सब काम तमाम कर दिया और अफ़जलखां के साथ जो थोड़े से मनुष्य आये थे और कुछ दूरी पर रुक गये थे उनको मराठे लोगों ने जोकि घात लगाये बैठे थे घेरलिया और सम्पूर्ण सेना में कोलाहल मच गया। जो २ कटुशब्द यथा काफ़िर, चूहा, कुत्ता इत्यादि मुसलमान लेखकों ने लिखे हैं और पूर्वीय भूल से किंवदन्तियां शिवाजी की लल्लोपत्तों तथा चालों की लिखी हैं वे स्वयं इस बात का पर्याप्त प्रमाण हैं कि मुसलमान निरीक्षकों की सम्मति पक्षपात शून्य नहीं है। संदेह की अवस्था में प्रत्येक लेखक ने अपनी ही कल्पना से काम लेकर कोरी कल्पना द्वारा ही झूठे चित्र खींचे हैं। यह भी याद रखना चाहिये कि (अंग्रेज लेखक स्टाक साहिब ने लिखा है) हिन्दुओं के विषय में साधारणतया तथा मराठों के विषय में विशेषतया मुसलमान लेखकों के सम्पूर्ण लेख प्रायः ऐसे ही भूलों और पक्षपातों से भरपूर हैं। स्टाक यहां तक लिखता है कि मुसलमानों के इतिहास के मुकाबले में मराठों के इतिहास अधिक विश्वास के योग्य हैं। अतएव सम्पूर्ण मराठा लेखक इस विषय में सहमत हैं कि शिवाजी ने अफ़जलखां को आत्म-रक्षा के लिये मारा, यह नहीं कि शिवाजी उससे मिलने की इच्छा करता वह स्वयं उत्कण्ठित था कि शिवाजी को अपने मेल के जाल में फंसाकर हनन करे। शिवाजी शरीर में दुबला और अफ़जलखां बड़ा मोटा हृष्ट पुष्ट तथा सुदृढ़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पठान था और उसे पूर्ण विश्वास था कि यदि शिवाजी अकेला मेरे पास आयेगा तो मैं उसे क़तल कर डालूंगा दरबार से प्रस्थान करते समय अफ़जलखाँ ने अत्यन्त अभिमान से यह कहा था कि "वह शिवाजी को पकड़ लायगा" इस लिये उसने अपने ब्राह्मण को शिवाजी के पास भेजा कि वह उसे एकाकी मिलने के लिये उद्यत करे तथा उसके द्वारा यह कहला भेजा कि यदि वह आधीनता स्वीकार करेगा तो उसके लिये अति उत्तम होगा। शिवाजी को भी दूतों ने यह समाचार दे दिया कि अफ़जलखाँ की भावना दुष्ट है और उसकी इच्छा शिवाजी को फँसाने की है। तथाच अफ़जलखां के दूत (उसी ब्राह्मण) को जब धर्म की शपथ दी गई तो उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त ठीक २ कह दिया। शिवाजी ने भी सोचा कि भाग्य परीक्षा करनी चाहिये और मिलने के लिये स्वीकृति देदी। अन्ततो गत्वा संगम के लिये स्थान आदि नियत होगया। शिवाजी पूर्णतया उद्यत होकर प्रस्तुत हुआ और उसने काशी तथा गंगाजी को पिण्ड आदि के लिये ब्राह्मण भेज दिये तथा स्वयंम् पूजा करके शस्त्र बांधे एवं भीतर कवच पहिना उसके ऊपर साधारण सीधा अंगरखा पहिना, अभिप्राय यह कि शिवाजी प्रत्येक प्रकार से मृत्यु के लिये उद्यत होकर अपने विश्राम भवन से निकला।

जिस समय अफ़जलखां शिवाजी से बगलगीर हुआ उस समय पठान शिवाजी का माथा अपने हाथ में पकड़ कर दबाना आरम्भ किया और तलवार मियान से निकाल कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी पर चलाई परन्तु वहां तो कवच लगा हुआ था इसलिये वार खाली गया। उधर शिवाजी ने अत्यन्त चातुर्य्य से बांयें हाथ से बिछुआ अफजलखां की अन्तड़ियों में धकेल दिया। अफ़ज़लखां वहीं ढेर हो गया इसका शरीर एक पहाड़ पर दबा दिया गया तथा उसके सिर के ऊपर एक बुर्ज बनाया गया जो कि अभी तक "अब्दुल्ला का मीनार" प्रसिद्ध है। (अफ़ज़लखाँ का वास्तविक नाम अब्दुल्ला था)।

विचार में यह आता है कि मरहठा लेखकों का वर्णन इस विषय में खाफीखां के इस लेख की अपेक्षा सत्य तथा ठीक है जिसको पढ़ते ही तत्काल निश्चय हो जाता है कि वह पक्षपात से पूरित तथा झूंठा है, क्योंकि सम्भव नहीं कि इस सलूक के पश्चात् (जो कि शिवाजी के साथ दर्बार बीजापुर की ओर से बर्ताव में आया था और उस विरोध के पश्चात् जो कि शिवाजी ने बीजापुर के राज्य के विरुद्ध खड़ा किया हुआ था) अफ़ज़लखां शिवाजी पर पूर्ण विश्वास करके युद्ध भावना से इस प्रकार अपने आपको शत्रु के हाथ में फँसा देता। दर्बार बीजापुर ने शिवाजी के पिता को कैद करके उन से अत्यन्त दुष्ट वर्ताव किया था। इसके बिना अफ़ज़लखाँ इसी प्रस्थान तथा आक्रमण के मार्ग में सम्पूर्ण मन्दिरों को विध्वंस तथा नष्ट भ्रष्ट करता आया था अफ़ज़लखां ने ही शिवाजी के भाई शम्भाजी को अत्यन्त वञ्चन तथा धोके से कतल किया था। अफ़ज़लखाँ जानता था कि शिवाजी कट्टर हिन्दू है और उसे अपने धर्म की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानहानि तथा अपने देवताओं के अनादर से अत्यन्त दुःख होता है और ईश्वर ने उसके भीतर प्रतिकार की शक्ति भी कूट-कूट भरी है तो फिर हम किस प्रकार निश्चय करलें कि अफ़जल-खाँ ऐसा सीधा मनुष्य था कि इन सम्पूर्ण घटनाओं के होते हुए भी बिना किसी प्रकार की दुष्ट भावना के एकाकी एक प्रसिद्ध केहरी की कन्दरा में जा घुसा। किन्तु यदि हम विचारार्थ यह भी मानलें कि ऐसी घटना हुई और शिवाजी ने वञ्चना से अफजलखां को कतल किया तो भी कुछ आश्चर्य का स्थान नहीं क्योंकि उस समय में शत्रु को इस प्रकार से मार लेना मुसल-मानों में भी नीचता नहीं गिनी जाती थी। औरङ्गजेब ने इसी प्रकार के व्यवहारों से देहली के राज्य सिंहासन पर अधिकार जमाया था और शिवाजी का भाई शम्भाजी इसी प्रकार मारा गया था इस घटना से कुछ दिन पूर्व बीजापुर का राज मन्त्री आजमखाँ भी इसी प्रकार से मारा गया था तथा उसका पुत्र "ख्वासखां" भी पश्चात् इसी प्रकार से मरा। स्वयं औरङ्गजेब ने इसी भावना से शिवाजी को देहली में बन्दी किया था। भाव यह कि भारत का इतिहास ऐसी घटनाओं से भर रहा है कि मुसलमानों के युद्ध शासन के अनुसार इस प्रकार शत्रु का मारना पाप नहीं समझा जाता था जैसा कि वर्तमान काल में समझा जाता है। राजपूतों का युद्ध शासन तो अपनी पवित्रता, पुरुषार्थ तथा वीरता में सब जातियों से उच्च है। धोखा तथा वञ्चना तो कहाँ राजपूतों ने घिरे हुए शत्रू को मारना वीरतासे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाहर समझा अन्यथा उन्हें कई वार ऐसे अवसर मिले कि वे भारतवर्ष में यवन राज्य की अन्त्येष्टि कर देते।

अफ़ज़लखां के मरते ही सम्पूर्ण सेना में कोलाहल मच गया और मराठों ने रक्त में हाथ रँगने आरम्भ किये। सम्पूर्ण इतिहास वेत्ता इस विषय में सहमत हैं कि शिवाजी ने इस मार-धाड़ से नितान्त अप्रसन्नता प्रकट की और तत्काल आज्ञायें निकालीं कि यथा सम्भव किसी के साथ लड़ाई न की जाय। शिवाजी कैदियों के साथ सदैव अत्यन्त कृपा तथा दया से वर्ताव किया करता था। इस अवसर पर भी जिन मनुष्यों को शत्रू की सेना ने गिरफ्तार किया था उनके साथ शिवाजी अत्यन्त दया और अनुग्रह से पेश आया। बहुत से लोगों ने इसी अनुग्रह के कारण उसकी नौकरी करली। 'झूझरराय घाटकी' एक बड़ा मान्य मराठा था जो कि किसी समय में शाहजी का परम मित्र रह चुका था, शिवाजी उसे इस बात पर उद्यत न कर सका कि वह बीजापुर की नौकरी छोड़ शिवाजो की नौकरी करे। परन्तु फिर भी शिवाजी ने उसको बहुत सा पुरस्कार देकर बिदा किया। अपनी सेना के चोट खाये वीरों को तो उसने बहुत सी बहुमूल्य वस्तुयें (सोने के हार तथा सोने चांदी की जंजीरें आदि) भेंट कीं और साधारणतया अपनी सेना को अत्यन्त प्रसन्न किया जिससे कि उनका उत्साह द्विगुणित हो गया। अफ़ज़लखां की तलवार इस समय तक शिवाजी के वंश में जो कोल्हापुर में राज्य करता है, चली आती है। इस विजय ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी की शक्ति बहुत अधिक कर दी और थोड़े ही समय में उसने कुछ अन्य दुर्गों पर भी कब्जा कर लिया। बीजापुर के दरबार ने अफजलखां की मृत्यु का समाचार पाकर 'रुस्तमेजमाँ' को आज्ञा दी कि वह कोल्हापुर के बचाव के लिए आगे बढ़े परन्तु शिवाजी ने उसे भी आक्रमण करके परास्त कर दिया, उसकी सेना का कृष्णा नदी के उस पार तक पीछा किया।

इसके पश्चात् शिवाजी ने सीधा राजपुर का मार्ग लिया और वहां से कर भेंट लेकर 'बहिल' पर कब्जा किया। वहाँ से उसे बहुत सा धन और सम्पत्ति प्राप्त हुई जो कि उसने राजगढ़ को भेज दी। जब बादशाह को समाचार मिला कि विजय पर विजय प्राप्त करता नगरों तथा ग्रामों को स्वायत्त करता वह राजधानी तक चला आ रहा है तब तो मुसलमान रजवाड़ों के कान खड़े हुये और सामना करने की तयारियां होने लगीं। "हबशी गुलाम सीदी जौहर" को आज्ञा मिली कि अफजलखाँ की सेना से द्विगुणित सेना लेकर शिवाजी का सामना करे। अफजलखाँ का पुत्र फाजलखां जो कि अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता था साथ हो लिया। दोनों को आज्ञा मिली कि 'पन्हाला दुर्ग' (जो हाल में ही शिवाजी ने प्राप्त किया था) पर आक्रमण करे दूसरी ओर से फतहखाँ को आज्ञा मिली कि वह कोंकन में शिवाजी की स्वायत्त भूमि पर आक्रमण करे और 'बारी देश मुख' के सरदारों के नाम भी आज्ञा पत्र लिखे गये। 'सीदी जोहर' को 'सलाबतखां' की पदवी दी गई। अस्तु। शिवाजी ने भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust. eGangotri

सामना करनेकी तय्यारी की। रघुनाथ पन्त फतहखाँ के सामने के लिये निर्वाचित किया गया। आबाजी सोन देव कल्याणभमेरी के दुर्ग तथा प्रान्त की रक्षा के लिये छोड़ा गया। भाजीराव फलकर को आज्ञा मिली कि बारी के 'सावन्त' लोगों से लड़े। पूर्णधर संगर व प्रतापगढ़ और उसके आस पास की भूमि मोरोपन्त के सुपुर्द हुई। स्वयं शिवाजी पनाला के दुर्ग में सुरक्षित हो गया। उसने बीजापुर की सेना को आगे आने से नहीं रोका परन्तु जब सेना दुर्ग के समीप आकर स्थित हो गई तो 'नेताजी पालकर' ने आस पास के प्रान्तों को उजाड़ना आरम्भ कर दिया और यत्न किया कि शत्रु की भोजनादी सामग्री बन्द हो जाय। मावली लोगों ने भी पर्वतों एवं घाटियों से निकल कर शतशः शत्रुओं का विध्वंस कर दिया। यद्यपि शिवाजी के साथियों ने इस प्रकार से शत्रुओं की पुष्कल हानी कर दी परन्तु सीदी जौहर धैर्य्य से वहां डटा रहा।

उधर कांगन में भी लड़ाई होती रही और कुछ समय तक मुसलमानोंको लाभ हुआ। 'बाजीराव फीलकर' भी बारीके सावन्त को आधीन न कर सका। इस पिछली लड़ाई में दोनों ओर के अध्यक्ष खेत रहे। परन्तु दोनों ओर की सेना ने हार न मानी। हा शोक !! कितने योद्धा और वीर अपने भाइयों के हाथ से मारे गये। काश, कि कोई उनको समझाता कि अपने भाइयों का विध्वंस करना (भाई भी कैसे जो धर्म युद्ध करने तथा निर्दयी शत्रुओं के हाथ से अपनी भूमि छुड़ाना चाहते थे) महान्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप है । हा दुर्भाग्य ! भारतवर्ष के इस भीतरी संग्राम ने 'तरावड़ी' के मैदान पर हिन्दू राज्य की समाप्ति करदी । भीतरी सग्राम ने पीछे भी कई एक आक्रन्ता मुसलमानों को भारत के लूटने का अवसर दिया इसी भीतरी संग्राम ने हिन्दुओं को जातीय पदवी से च्युत कर दिया । इसी भीतरी संग्रामने मराठों की अवनति की । शिवाजी के हाथ के लगाये हुये पौधों को मूलोच्छेद कर दिया । इसी पारस्परिक संग्राम ने सिक्खों का नाश किया । तथा अब भी यही परस्पर का संग्राम हिन्दुओं की उन्नत्ति तथा पारस्परिक प्रेम में बाधक है । काश ! कोई देववाणी ही इन्हें इस संग्राम की हानियां समझाकर इससे बचाये ।

शिवाजी को जब यह समाचार मिला तो उसने समझा कि मैंने बड़ी भारी भूल की जो इस प्रकार दुर्ग में घिर कर बैठ गया । घेरे को चार महीने हो गये थे यद्यपि इस समय तक शत्र के आक्रमण करने का कोई अवसर नहीं आया था परन्तु शत्र फिर भी डटा और सचेत था । अन्त को शिवाजी ने एक चाल चली । अर्थात् मिलाप के लिये बात चीत चलाई गई । लड़ाई दोनों ओर से बन्द हो गई । अभी उत्तमतया मिलाप न होने पाया था तथा सम्पूर्ण नियम भी निश्चित न हुये थे कि रात को शिवाजी कुछेक वीर साथियों सहित दुर्ग से निकल पड़ा । और पर्वत से निकल सीधा जङ्गल का मार्ग लिया । शिवाजी तीव्रगति से 'अङ्गना' की ओर प्रस्थान कर रहा था कि विरोधियों को इसके बचकर निकल जाने का समाचार मिल गया । तत्काल ही फ़ज़िल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुहम्मदखाँ और सीदी जौहर का पुत्र सीदी अजीज पीछा करने को गये परन्तु विचारशील शिवाजी पूर्व ही इसका प्रबन्ध कर गया था। अर्थात् शिवाजी इस आपत्ति को काटने के लिये अपने मालवी सिपाहियों का एक समूह मार्ग में छोड़ गया था, जिसका प्रबन्ध उसने अपने अतीत शत्रु बाजीराव देशपाण्डे को दे दिया था। जब पीछा करने वाले मुसलमान पहुंचे तो उनके साथ सेना अधिक थी तथा मराठे अपनी संख्या में बहुत कम थे। शिवाजी की उन्हें आज्ञा थी कि जब तक (हमारी ओर से) पांच गोलियां न चलें तब तक लड़ते रहना और जब अमुक दिशा से लगातार पांच गोलियाँ चल जायें तो समझ लेना कि मैं सुख से दुर्ग में पहुंच गया। देशपांडे और उसके मालवी साथी अत्यन्त वीरता से लड़ते रहे आधे के लगभग मारे गये परन्तु फिर भी कत्रू को मार्ग नहीं दिया यहाँ तक कि देशपांडे भी मारा गया। यह अभी गिरा न था कि गोलियों का शब्द सुनाई दिया अतएव देशपांडे ने निश्चिन्त होकर प्राण दे दिये। देशपांडे के वीर सिपाहियों ने उसकी देह को भी वहाँ न छोड़ा और असंख्य शत्रुओं के मुकाबले में देह को लेकर भाग निकले।

इस कार्य्यवाही से 'सीदी जौहर' की जब सब तरकीब खाक में मिल गयीं तो वह इस उधेड़ बुन में पड़ गया कि पनाला के घेरे पर स्थित रहे अथवा शिवाजी के पीछे जाय। उधर जब बादशाह को यह समाचार मिला तो उसने 'सीदीजौहर' पर यह दोष लगा दिया कि उसने शिवाजी से घूँस लेली है। 'सीदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जौहर' ने इसका अत्यन्त क्रोधयुक्त उत्तर दिया जो कि अनादर सूचक माना गया। अन्त में बादशाह स्वयं संग्राम के लिये निकला। पनाला का दुर्ग, पवनगढ़ तथा आस पास के दुर्ग जो शिवाजी ने ले लिये थे, अञ्जना तथा विशालगढ़ को छोड़कर सब बादशाह के हाथ आ गये। इतने में वर्षा आरम्भ हो गई बादशाह ने कृष्णा नदी के किनारे चमलगे स्थान पर अपना कैम्प लगाया। शिवाजी ने यद्यपि बादशाह का सामना नहीं किया परन्तु फिर भी वह चुपचाप नहीं रहा। वर्ष के प्रारम्भ में वह राजपुर के सम्मुख जा प्रकट हुआ और उसने उस नगर को लूटा। इस अवसर पर अङ्गरेजों की भी हानि हुई और कई एक कारखाने वाले पकड़कर कैद किये गये। शिवाजी को इन पर सन्देह हो गया था कि इन्होंने पनाला के घेरे में शत्रू को बारूद से सहायता दी थी। शिवाजी को क्या ज्ञान था कि शीघ्र ही ये अङ्गरेज व्यापारी सम्पूर्ण भारतवर्ष के स्वामी बन जायेंगे तथा शिवाजी की सन्तान उसके आधीन एक कर देने वाले साधारण मण्डलेश से अधिक आस्था वाली न रहेगी। उसे यह ज्ञान न था कि यवन राज्य के विध्वंस से उसकी जाति को लाभ न होगा किन्तु एक अन्य ही जाति उसके विध्वंस से लाभ उठाकर यवन सिंहासन की स्वामिनी होगी। राजापुर से निकलकर शिवाजी ने एक हिन्दू राजा दलवीर की आयत्त (भूमि) पर आक्रमण किया और 'सुरङ्गापुर' उसकी राजधानी पर स्वत्व कर लिया। दलवी की हिन्दू प्रजा ने शिवाजी के इस कृत्य को पसन्द न किया और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मण्डल छोड़ छाड़ कर जाने लगे। शिवाजी ने एक प्रसिद्ध वंशीय 'सदरवे' नामक सरदार को समझाकर वापिस बुलाया और उसके साथ बहुत सी हिन्दू प्रजा लौट आयी। उसी वर्षा ऋतु में उसने प्रतापगढ़ में एक मन्दिर बनवाया और रामदास स्वामी को अपना गुरु बनाकर पूजन में संलग्न होगया। परन्तु उसका पूजन ऐसा न था जो उसकी सांग्रामिक कार्यवाहियों अथवा उसकी देश प्राप्ति में अवरोधक होता। वर्षा भर फ़तहखां के पीछे रहा और कई स्थान आयत्त कर लिये। बीजापुर के दरबार की सुनिये। बादशाह एक और संदेहमें पड़ गया। हमने ऊपर लिखा है कि उसको सीदी जौहरपर 'घूँस' लेने का सन्देह था अतएव दोनों की अनबन होगई। अन्त को वह स्वयं रण में आया तो सीदी ने क्षमा मांगी। यद्यपि उसका अपराध क्षमा कर दिया गया परन्तु वह भय से सामने न आया और अपनी जागीर में चला गया। जब बादशाह कृष्णा के तट पर स्थित था तो उसने सीदी जौहर को बुलाया यद्यपि सीदी आया और वंदन आदि करके चला गया परन्तु बादशाहका मन्त्री इब्राहीमखां उसका अत्यन्त शत्रु था इसलिए उसको बादशाह की ओर से खटका लगा रहा। इसी समय कर्नाटक में कुछ फसाद हुआ और कुछेक विद्रोही खड़े हो गये। बादशाह स्वयं शिवाजी के पीछे जाना चाहते थे परन्तु जब सीदी की ओर से उन विद्रोहों के मिटाने की रुचि न पाई गई तो उसको सीदी पर यह संदेह हुआ कि वह भीतर ही भीतर शिवाजी से मिला हुआ है। तथाच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nare, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्रियों की सम्मति से बादशाह शिवाजी पर आक्रमण न कर स्वयं कर्नाटक की ओर बढ़ा। 'वहिलोलखां' और 'बाजीघोरपरे' को आज्ञा हुई की देकमुखों की सहायतासे शिवाजी पर आक्रमण करें। सेना एकत्रित हो रही थी कि 'बाजीघोरपरे' किसी कार्य के लिये अपनी जागीरमें गया। शिवाजी को सब समाचार पहुंचते थे क्योंकि 'बाजी' वही मनुष्य था जिसने कि छलसे शिवाजी के पिता को कैद करके बीजापुर को दे दिया था। शिवाजी इसी चिन्ता में था कि उससे बदला ले। उसने यह अवसर उत्तम समझ बाजी पर आक्रमण किया और उसे बहुत से सम्बन्धियों सहित हनन किया और "मौधल" को लूटकर फुरतीसे विशाल गढ़ में आ गया राज्य दरबार की ओर से बाजी के स्थान पर 'ख्वासखां' को नियुक्त किया गया। परन्तु थोड़ी देर पीछे सम्पूर्ण सेना (जो कि शिवाजी के सामने के लिये नियत थी) पीछे बुलाली गई और बीजापुर के दरबार ने शिवाजी के पिता द्वारा मिलाप कर लिया। शाहजी 'बाजी' की मृत्यु सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वह अपने सुपुत्र को मिलने के लिये कर्नाटकसे इधर आया। शिवाजी भी अपनी जातिकी प्रथानुसार कुछेक मील आगे अपने पिताकी अगवानी के लिये गया और घोड़े पर से उतर कर आदरपूर्वक वन्दन किया।

इस समय शिवाजी के पास पचास सहस्र पैदल और सात सहस्र सवारोंके लगभग सेना थी चारों ओर उसकी धाक थी। न केवल बीजापुर का राज्य इससे कम्पायमान था प्रत्युत मुगलिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्र तथा पश्चिमी नस्तियां भी उससे कम्पायमान थी। शिवाजी ने न केवल पार्थिव संग्राम में ही किन्तु सामुद्रिक संग्राम में भी नाम पा लिया था। सामुद्रिक संग्राम के लिये उसने एक 'बेड़ा' बनवाया था और 'कुलाबा' को बन्दरगाह निश्चित करके जलके मार्ग से भी शत्रु को सताना आरम्भ कर दिया था। पुर्त्तगाल वालों ने तो भेंट पूजा देकर मित्रता करली। बीजापुर के सम्राट से मित्रता करके अब शिवाजी ने मुग़लिया राज्य की ओर ध्यान दिया।

मुग़लवंश का सामना

शिवाजी ने बीजापुर से अवकाश पाकर अब मुग़लिया राज्य से सामना करने की ठानी। एक पुष्कल सेना एकत्रित करके उसके दो भाग किये। पैदल सेना का अध्यक्ष तो 'मोरोपंत को बनाया तथा घुड़सेना का नेतृत्व 'नेताजी पालकर' को दिया।

'नेताजी पालकर' को आज्ञा मिली कि मुगलिया मण्डल पर आक्रमण कर नेताजी औरङ्गाबाद तक लूट खसूट करके फिर पूना को लौट आया। जब औरङ्गजेब को यह समाचार मिला तो उसे अत्यन्त क्रोध आगया और शायस्तखां मुखिया को आज्ञा मिली कि तत्काल ही एक महती फौज साथ लेकर इस उजड्ड तथा धूर्त मराठे की गत बनाये और उसके सम्पूर्ण मण्डल को स्वायत्त करके शिवाजी को गिरफ्तार करे। शायस्ताखाँ इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज्ञा पालन में एक बड़ी पुष्कल सेना के साथ प्रस्थित हुआ और मध्यगत दुर्गों को स्वाधीन करता हुआ पूना तक आ पहुंचा। यहां से इसने चाकन के दुर्ग पर आक्रमण किया। फिरङ्गा निर्मला जो चाकन का रक्षक था वह और उसके अन्य वीर सिपाहियों ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया। सम्पूर्ण मुगल सेना को लिये हुये शायस्तखां बराबर ५५ दिन तक दुर्ग घेरे पड़ा रहा अन्त को ५६ वें दिन जबकि गोलियों से दुर्ग की भीत चलनी होगई तो वीर मराठे प्राण तोड़कर मुगलिया सेना पर झपट पड़े और दिन भर युद्ध करते रहे। सूर्यास्त होने तक उन्होंने देहली सम्राट की सम्पूर्ण सेनाको एक पाँव भी आगे नहीं बढ़ने दिया। अन्तको सूर्यास्त होने पर लड़ाई बन्द हो गई और प्रातःकाल को मराठे दुर्गाध्यक्ष ने इतनी बड़ी सेना से सामना करना निष्फल जान दुर्ग खाली कर दिया! मुगलिया सेनाध्यक्ष ने दुर्गाध्यक्ष और सिपाहियों की बहुत प्रशंसा की और दुर्गाध्यक्ष से सादर मिला यहाँ तक कि उसको सम्राट की सेना में एक मान्य पदवी पर वरण करने की उसने इच्छा प्रकट की, परन्तु वीर 'निर्मला' ने उसको तत्काल अस्वीकार कर दिया।

यद्यपि औरङ्गजेब यह समझता था कि मराठा लोगों का अधीन करना कुछ बड़ी बात नहीं है, परन्तु शायस्तखां को इस लड़ाई से पता लग गया कि मरहठा लोगों का अधीन करना कुछ खेल नहीं है। अतएव वह यथासम्भव लड़ाई से बचाव करने लगा। उधर सम्राट की ओर से जोधपुराधीश राजा यशवन्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंह अपनी बहुत सी सेना सहित शायस्ताखां की सहायता के लिये प्रस्थित हुआ। शाही सेना अपने वीर अध्यक्षों सहित कुछ काल तक चुपचाप पूना के सामने पड़ी रही परन्तु इतनी बड़ी सेना से भी भयभीत न होकर शिवाजी के दिलचले अफसर शत्रु की सेना तथा उसके मण्डल को नीचा दिखाने से पीछे नहीं हटते थे। 'नेताजी पालकर' भी अहमदनगर और औरङ्गाबाद के के सामने आ विद्यमान हुये। उनने शत्रु के मण्डल को लूटना तथा फूंकना आरम्भ कर दिया जिससे कि मुगल सेना अत्यन्त क्रुद्ध हो गई और एक समूह उन्हें दण्ड देने के लिये प्रस्थित हुआ, जिसका सामना करता हुआ नेताजी जख्मी हो गया पर हाथ न आया।

शायस्ताखां पूने में आगया और उस मकान में रहने लगा जो कि 'दादा जी कोनदेव' ने बनाया था। वीर शायस्ताखां ने यह न विचार कियाकि शिवाजी उन महावीरोंमें से है कि जिनके सामने अनादर और गुस्ताखी से पेश आना अन्तको अच्छा फल नहीं लाया करता। यद्यपि शायस्तखां ने अत्यन्त सावधानी से प्रबन्ध किया था कि शिवाजी किसी प्रकार से भी नगर के भीतर न घुसने पावे परन्तु अन्तको सिद्ध हो गया कि इसकी सम्पूर्ण तदबीरें बुद्धिमान तथा विचारशील मराठे के सामने निष्फल हुईं। उसने आज्ञा दी कि कोई मराठा बिना प्रमाणपत्र नगर के भीतर न जाने पावे। परन्तु शिवाजी प्रमाण पत्र लेकर शायस्ताखां की सेना के एक मराठे सिपाही ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी लड़की के विवाह के बहाने से शहर में बाजे गाजे के साथ जलूस निकालने की आज्ञा ली। इसके साथ कुछ शस्त्रधारी भी थे। शिवाजी जो कि सङ्गरह के किले से शाम को चला था रात को २५ सावलियों और अफ़सरों सहित चुपके से उस जलूस में (जो कि बाजार में चक्कर लगा रहा था) आ मिला, जब सब लोग सो गये तो शिवाजी और उसके साथी जो कि दादा जी के मकान की ईंट ईंट से परिचित थे कुल्हाड़ियां लेकर रसोईखाने के ऊपर चढ़ गये और वहां से उन्होंने अन्दर घुसने का मार्ग बनाया परन्तु कुछ शब्द होने से खान की स्त्रियों में कोलाहल मच गया और उन्होंने खानको जगाया। शायस्ताखाँ शीघ्रता से एक खिड़की में से नीचे उतर रहा था कि उसके हाथ पर घाव लगा और उसकी एक अँगुली कट गई। यद्यपि वह आप तो बिना किसी प्रकार की हानि के बच गया परन्तु उसका लड़का अब्दुलफतहखाँ और उसके बहुत से सिपाही मारे गये। पूर्व। इसके कि शाही सेना शहर में घुसे शिवाजी और उसके साथी शहर से बाहर निकल गये। जब तीन चार मील जा चुके तब उन्होंने मशालें जला लीं मानों वे शाही सेना को जो सामने पड़ी थी दिखला रहे हैं कि हम कैसी प्रसन्नता से बिना किसी चिन्ता के मशालों की रोशनी में आनन्द अपना काम करके वापिस जा रहे हैं।

शिवाजी का यह काम उसके जीवन के बड़े २ कारनामों में गिना जाता है और क्यों न हो जबकि सारी शाही सेना सामना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करने के लिये शस्त्र बन्द हो और शिवाजी पच्चीस मनुष्यों को सङ्ग ले शायस्ताखां के घर में जा घुसे और मार काट करके बिना किसी प्रकार की हानि के मशालों की रोशनी में गरजता हुआ अपने किले में आ जाय। यह एक ऐसा कारनामा है जो फुरती से भरे हुए वीर के हिस्से में आया है। प्रातःकाल मुग़लिया सेना का रिसाला किले की ओर बढ़ा और बड़े अहङ्कार से आगे बढ़ता चला गया जब वह इतना समीप आ पहुंचा कि भागकर भी तोपों की चोटों से बचना कठिन होगया तो किलेसे तोपें चलनी आरम्भ होगईं बेचारे मुग़लिया रिसाले को भागने के सिवा और कुछ भी न सूझा। मराठा सरदारों ने जो कि पहाड़ियों में छिपे हुये थे बहुत दूरतक पीछा किया और बहुत सी मारकाट करके लौट आये।

शायस्ताखां इन पराजयों से ऐसा मुर्दा दिल हो गया कि उत्साह छोड़ जसवन्तसिंह ही की शिकायतें करने लगा। पहले तो औरङ्गजेब ने इन दोनों को वापिस बुला लिया और उनके स्थान पर राजकुमार "मुअज्ज़म" को नियत किया परन्तु फिर शायस्ताखां को बङ्गाले का शासन देकर जसवन्तसिंह को मराठों के मुकाबले के लिये मुअज्जम के पास भेजा परन्तु वह राजपूत वीर भी शिवाजी को अपने पहाड़ी किले से निकालने में सफल मनोरथ न हुआ अन्त को लाचार होकर अपनी सेना का कुछ भाग 'चाकन' और 'जूनर' पर छोड़कर शाही सेना को औरङ्गाबाद की ओर लौटना पड़ा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उधरसे निश्चिन्त होकर शिवाजीने सोचा कि अब कुछ धन एकत्रित करना चाहिये क्योंकि इन लगातार आक्रमणों और घेरों से उसकी सेना को माल हाथ लगने का कोई भी अवसर नहीं मिला था। इसलिये उसने ऊपर से यद्यपि यह प्रसिद्ध करदिया था कि मैं नासिकके मंदिर में दर्शनोंके लिये जाता हूँ परन्तु चुपके से ४००० हजार सवार लेकर जनवरी सन् १६६४ के आरम्भ में सूरत पर टूट पड़ा सूरत उन दिनों दौलत से माला-माल था और अत्यन्त ही धनाढ्य नगरों में गिना जाता था। ६ दिन तक लगातार उसने इस शाही नगरको लूटा और बहुत सा माल और धन लेकर अपने रायगढ़के किले में जो कि उस समय ठीक बन चुका था और जिसको कि उसने बादको अपनी राजधानी बना लिया था आ विराजमान हुआ। अङ्गरेजों और डच वालोंने अपनी बस्तियों को बहुत मुश्किलसे बचाया नहीं तो और भी बहुत सा धन हाथ आता। लौटने पर समाचार मिला कि उसका पिता शिकार खेलता हुआ घोड़े पर से गिरकर मरगया। 'शाहजी'की मृत्यु सुनकर शिवाजी पिताकी शवक्रिया में संलग्न हुआ। उससे निश्चिन्त होकर उसने कुछ दिन अपने राज्य प्रबन्धमें लगाये इस अवसर पर उसने अपने लिये राजा की पदवी तजवीज की और अपने नामका सिक्का चलाया इस प्रकारसे २० वर्षके अन्दर अन्दर एक यवन राज्य के जागीर-दारके होनहार लड़केने केवल अपनी बुद्धिमत्ता और ईश्वर प्रदत्त शक्ति एवं वीरता से अपने और अपनी जातिके शत्रुओं से लड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिड़ और मारकाट करके एक हिन्दू राज्यकी नींव डालदी और अपने आप को पहला हिन्दू राजा बनाया।

औरङ्गजेब जैसा बलवान सम्राट बड़े बड़े वीर राजपूतोंके सहायक होने पर भी इस नये उठते हुये सितारेको उन्नति का अवरोध न करसका अवरोध करनातो एक ओर शाही सेनाके मुकाबले में शिवाजी को बहुतसे अवसर अपनी वीरता और बुद्धिमत्ताके दिखलानेके आये। शिवाजीने अपने शत्रुओं पर सिद्ध करदिया कि जो मनुष्य मरने मारनेके लिये उद्यत हो वह एक ऐसा बला का मनुष्य होताहै कि जिससे बड़े बड़े राज्य भी भयभीत होते हैं और कभी कभी उखड़ भी जाते हैं। उसने अपने कर्मोंसे सिद्ध कर दिया कि १६ वीं शताब्दी के हिन्दुओं में भी कुछ महाभारत और रामायणके हिन्दुओंका रक्त शेषथा, और यद्यपि सामान्यतया उनका रक्त बिगड़कर सड़ने लग गया था परन्तु फिर भी जरा सी चोट लगानेसे ऐसा उबलता था कि ज्वालामुखी पर्वतोंके समान जो सामने आता था उसे भस्म कर देता था। यदि आलस्य और प्रमादमें मग्न होकर बैठे रहें तो मुद्दतों चूं न करें चाहे इधरका जगत उधर भी होजाय। परन्तु जब एक बार सामना करने की ठान लें तो प्रलय करदें।

गुस्से से गर हमारे माथे पै बल पड़ें।
तो शिर पै शिर हाथ पै हाथ तन पै तन चढ़ें॥
आकाश गिरे चढ़ायें जो हम आस्तीन को।
उस ही की तरह उल्ट दें सारी जमीन को॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस प्रकार ज्वालामुखी पर्वत युगों के विकारों को अपने अन्दर लीन करके अकस्मात फूट पड़ता है और फिर अपनी भभक से आगा पीछा नहीं देखता इसी प्रकार दक्षिण भारत के वीरों में जो विकार दीर्घकाल से भरा हुआ था वह शिवाजी के रूप में फूट निकला जिसका फल यह हुआ कि जो भी मार्ग में आया झुलस गया और चारों ओर जहाँ भी शिवाजी ने मुँह उठाया अपना सिक्का जमा दिया।

शिवाजी ऐसा भोला न था कि वह इस प्रसन्नता में यह भूल जाता कि उसकी जाति का जानी दुश्मन औरङ्गजेब अभी तक उसकी ओर ताक लगा रहा है और कभी भी सम्भव नहीं कि वह शिवाजी को सुख से राज्य करने दे। इधर शिवाजीके एक अफसरने मक्का जाने वाले मुसलमानों का एक जहाज लूट लिया था और सम्पूर्ण यात्रियों को दण्ड के तौर पर पुष्कल धन लेकर छोड़ा था। देहली सम्राट् को कभी भी यह विचार न आया था। कि यदि मुसलमान सम्राट हिन्दुओंसे कर ले सकता है तो कदाचित् कोई हिन्दू राजा भी मुसलमानों से दण्ड लेने की शक्ति रखता है। यह सुनकर कि एक अतिधृष्ट और धूर्त मराठेने मक्के को जाते हुए जहाज को लूट लिया है उसे अत्यन्त क्रोध आया और उसने शपथ खाई कि जब तक उस टेढ़े नेत्रवाले और अभिमानी हिन्दू का सिर न काट लूंगा सुख की निद्रा न लूंगा। परन्तु ईश्वर की रचना ईश्वर ही जानता हैं। औरङ्गजेब भी सर्वशक्तिमानतो था ही नहीं और न उसे सब बातों का ज्ञान था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयसिंह का आक्रमण

अगस्त सन् १६६५ ई० में शिवाजी फिर अपने शत्रू के मंडल को जीतने के लिये चला। पहले 'पटह व अहमद नगर' को लूटा और फिर औरंगाबाद के आस पास को निष्कण्टक किया तथाच बिजयपुर की सेना ने प्रतिज्ञापत्र को तोड़कर कांगन पर आक्रमण किया था इसलिये शिवाजी भी इसी जोड़-तोड़ में बिजली के समान कभी यहां कभी वहाँ जा गिरता था। उनके अंगरेज निरिक्षक लिखते हैं कि उसकी चेष्टायें ऐसी चुस्त और तीक्ष्ण थीं कि मानों प्रत्येक स्थान पर दिखाई देता था। लोग समझते थे कि शिवाजी दक्षिण को गया है परन्तु वह तत्काल उत्तर में जा निकलता। आज यहां कल वहां परसों फिर यहाँ भाव यह है कि ऐसी फुरती से फिरता था कि शत्रू चकित थे कि यह मनुष्य है अथवा भूत प्रेत। उसका समाचार प्रबन्ध ऐसा पूर्ण था कि उसके पास शत्रु के घर के समाचारों का अक्षर अक्षर पहुंचता रहता था।

सामने सारी शाही सेना पड़ी हुई है। एक ओर बिजयपुर की सेना धमकियां दे रही है आपने यह प्रसिद्ध कर दिया कि हम शाही सेना पर आक्रमण करेंगे और अगले दिन झट पट अपने समुद्री बेड़े में (जिसमें कि ८५ छोटी किश्तियाँ और तीन बड़े जहाज थे) सवार होकर 'वार्सलोवर' नगर में आ पहुंचा जो गोवा से १३० मील दक्षिण में था। लूटखसूट के पश्चात ४००० मनुष्यों को साथ ले किनारे से बहुत दूर जा निकला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब तो आपके शत्रुओं को भी ज्ञात होगया कि मान्यवर अपनी राजधानी में नहीं हैं। फिर क्या था इधर उधर तलाश होने लगी। आपके शत्रुओं को अभी पता भी नहीं लगा था कि शिवाजी बिजली के समान स्थल पर आ कौंधा। और अपनी सेना को कई भागों में विभक्त करके शत्रुओं की भूमि को लूटने लगा। यहां तक कि कई एक धनाढ्य नगरों और व्यापारी स्थानों को लूट कर अपने रायगढ़ क़िले में आ विराजमान हुआ।

शिवाजी की इस कार्य शैली के विषय में इतिहास लिखने वालों की कुछ भी सम्मत्ति क्यों न हो परन्तु इसमें संदेह नहीं कि इतनी कठिनाइयों में जिस फुरती या चालाकी से शिवाजी ने यह लड़ाइयां लड़ीं वह एक बड़ी असाधारण बुद्धिमत्ता और वीरता की साक्षी देती हैं। इतिहास में इस प्रकार की दक्षता के दृष्टान्त बहुत कम दिखाई देते हैं। उधर औरङ्गजेब को ये सब समाचार पहुंच रहे थे और उसको भी दिन रात चैन न आता था। 'अन्ततो गत्वा' उसने राजा जयसिंह राजपूत और 'दिलेरखां' पठान को एक बड़ी फौज देकर शिवाजी को अधीन करने के लिये भेजा। शिवाजी जब सामुद्रिक विजय से लौटकर आया तो देखा कि अब मुकाबले की ठन गई और औरङ्गजेब ने भी अपने बलकी परीक्षा का इरादा कर लिया है। सम्पूर्ण मित्रों व अफ़सरों को रायगढ़ के क़िले में एकत्रित करके विचार करने लगा। पर दुर्भाग्य कि शिवाजी को भी मतिभ्रम होगया कि श्रीमती भवानी देवी (जिसकी वह पूजा किया करता था)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वप्न में यह बतला रही हैं कि शिवाजी ! तेरे लिये इस हिन्दू सेनाध्यक्ष के मुकाबले में विजय प्राप्ति सम्भव नहीं तू निस्संदेह आज तक मुसलमानों के मुकाबले में विजय प्राप्त करता रहा परन्तु आज तो तेरा ही भाई एक राजपूत तेरे मुकाबले में आ डटा है। शिवाजी ! तुझको क्या मालूम था कि मक्कार औरङ्गजेब ने भी उसको इसी विचार से भेजा है कि यातो स्वयं रण में रहेगा अथवा तेरा नाश करेगा। सीधा परन्तु वीर राजपूत (जयसिंह) भी अपनी वीरता का प्रमाण दिखाने के लिये हिंदुओं के उठते हुये राज्य का गला घोंटने आया है। यद्यपि इस पिछले विचार से वह जाति-शत्रु और देश-घातक है परन्तु इसके मारे जाने पर भी औरङ्गजेब की विजय है। इन निर्बल कर देने वाले विचारों ने वीर मराठा को जिसकी नसों में राजपूती रक्त कुछ कुछ बदल चुका था चिन्ता में डाल दिया। उसकी इस चिन्ता ने उसके सरदारों के उत्साहों को भी ढीला कर दिया और सम्पूर्ण किले में मुर्दनी सी छा गई। अन्त को शिवाजी ने सोचा कि तलवार के स्थान में किसी अन्य ही विधि से काम लेना चाहिये। इसलिये उसने जयसिंह से सुलह के लिये बातचीत आरम्भ की।*

* शिवाजी ने इस समय जयसिंह को अनेक पत्र लिखे। परन्तु जयसिंह ने किसी का भी उत्तर नहीं दिया। इनमें से एक ऐतिहासिक पत्र हमने इस अध्याय के अन्त में हिन्दी अनुवाद सहित उद्धृत किया है।
—अनुवादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रायगढ़ के पास राजा शिवाजी राजा जयसिंह से मेल मिलाप विषयक प्रतिज्ञा में संलग्न है और पूर्णधर में वीर मराठे दिलेरखां और उसके पठानों को प्राण न्यौछावर करने का पाठ पढ़ा रहे थे। उस मराठा अधिकारी का नाम जो कि क़िलेदार था 'वाजीप्रभु' था। बाजी के आधीन मराठा सेना ने बड़ी उत्तमता से इस बात को सिद्ध कर दिया कि रणभूमि से भागकर प्राणरक्षा करने अथवा युद्ध से घबड़ाकर भाग जाने या बिना किसी प्रकार का मुकाबला किये शस्त्र छोड़ देने अथवा किले को खाली कर देने का कलङ्क हमारे माथों पर लगाना सम्भव नहीं है।

दिलेरखाँ किले की ओर बढ़ा उधर से 'बाजी' ने निर्भय होकर उत्साह व गम्भीरता से युद्ध की आज्ञा दे दी। किले के बाहर जितने भी स्थान सुरक्षित थे बहुत सी मार काट के पश्चात् हाथ से जाते रहे। अन्त को दिलेरखाँ ने आज्ञा दी कि जिस पहाड़ी पर निचले किले का बुर्ज है उसको सुरंग से उड़ा दिया जाय। किले की सेना ने कई बार अत्यन्त उत्साह और वीरता से सुरंग उड़ाने वालों को अपने स्थान से भगा दिया। परन्तु अन्त में उन्हे एक ऐसा आश्रय मिल गया कि वे गोली व बारूद की मार से बचकर अपना कार्य्य करने लगे। फिर भी उनको कई बार असफलता हुई। अन्त को उनके भाग्य ने सहायता दी और किले का बुर्ज उड़ गया। हमला करने वाले नीचे के किले में आ गये किले की सेना ऊपर के किले को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा रही थी कि उसने देखा कि शत्रुओं ने अपने स्वाभावानुसार घरों को लूटना और स्त्रियों को पकड़ना आरम्भ कर दिया है। मराठा वीरों को क्रोध आगया और उन्होंने लक्ष्य बांधकर गोलियों की बौछार आरम्भ कर दी। अक्रान्ता शत्रुओं के ढेर के ढेर लग गये। बचे खुचे शत्रुओं ने जहां कहीं हो सका आश्रय लिया। उसी समय मावलियों का एक समूह अपने अफसर के आधीन उतर आया और तलवारें हाथों में खींचकर शपथ खाकर शत्रु पर आ पड़ा और जो सामने आया काट गिराया। बचे खुचे अपना सा मुंह लेकर पीछे हट गये। दिलेरखां की सारी सेना पहाड़ी से नीचे आ गई क्योंकि मावली मराठे मृत्यु को हथेली में धरे हुए स्वयं मृत्यु की मूर्ति बन रहे थे। दिलेरखाँ हाथी पर सवार हुआ पहाड़ी के नीचे से सम्पूर्ण घटना देख रहा था और नीचे ही से अपनी सम्पूर्ण आज्ञायें चला रहा था।

उसने देखा कि यह तो बना बनाया काम बिगड़ा जाता है तो अपने साथी पठानों को लेकर पुकारता हुआ और उत्साह बढ़ाता हुआ आगे बढ़ा। वीर मराठे यह अच्छी तरह जानते थे कि यदि पूर्णघर का किला हाथ से जाता रहा तो दक्षिण से हिन्दुओं का नाम चिन्ह मिट जायगा; इसी लिये उन्होंने अपने प्राणों को हथेली पर धर कर काल भगवान् के समान दायें बायें काटना आरंभ कर दिया। यहांतक कि लाशों के ढेर लग गये। और वे क्षण-क्षण में दिलेरखां के समीप पहुंचने लगे, दिलेरखां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने सो कि जब तक वीर शिरोमणि जीता है उसको अधीन करना या उससे जान बचाना असम्भव है। उसने लक्ष्य बांधकर तीरों की बौछार आरम्भ की इन निर्दयी तीरों में से एक वीर बाजी की छाती में से निकल गया और बाजी अपनी जाति एवं राज्य की रक्षा के लिये संग्राम-भूमि में शहीद होगया। बस फिर क्या था उसके साथियों में घबराहट उत्पन्न हो गई और उन्होंने भी ऊपर के किले की ओर मुख किया। दिलेरखाँ की सेना ने फिर निचे के किलेपर आक्रमण किया परन्तु मराठा सेना अपने शिरोमणि के मर जाने पर भी हतारा नहीं हुई थीं उन्होंने पक्का इरादा कर लिया था कि जबतक शिवाजी की आज्ञा न आयगी तब तक किले से न निकलेंगे। वे ऊपर के कले से ही जगत् विध्वंसक आग बरसाने लगे यहां तक कि दिलेरखाँ की सेना सहन न कर सकी और किले को छोड़ पीछे हट गई। उत्साह से भरपूर दिलेरखाँ ने समझा कि दिलेरी से कुछ काम न निकला। किलेदार भी मारा गया परन्तु किला हाथ न आया। यह लोग मराठा हैं या भूत हैं। किले की उत्तर की ओर से हताश होकर दक्षिण की ओर बढ़ा। पूर्णधर के किले के बाहर परन्तु पास ही दक्षिण की ओर एक पहाड़ी पर वहीरगढ़ नामी एक छोटी सी गढ़ी थी वहाँ से किले को बहुत हानि पहुंचाई जा सकती थी। उस गढ़ी पर दिलेरखाँ ने अधिकार जा जमाया और गोली बरसाने की आज्ञा दी। इस अवसर में ईश्वरीय सहायता भी किले की रक्षा के लिये आ पहुंची अर्थात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षा आरम्भ हो गई और दिलेरखाँ की गोलाबारी अपना काम न कर सकी, कई सप्ताह निकल गये परन्तु किले की दीवारोंको कुछ भी हानि न पहुंची। बाहर से कुछ भी सहायता न मिलने के कारण उनकी सेना का उत्साह न्यून होता जाता था इतने में उसको समाचार मिला कि स्वयं शिवाजी ने सुलह की शर्तें ठहरा लीं अर्थात् जो किला दिलेरखां की दिलेरी से भी हाथ न आया था, जिसकी रक्षामें सहस्रों मराठों ने प्राण दे दिये, जिसकी रक्षा में प्रसिद्ध शूरवीर बाजी मारा गया था उसी किले को शिवाजी ने स्वप्न मात्रके विश्वास से घबड़ा कर और एक मिथ्या विश्वास से निर्बल होकर शत्रु के हवाले कर दिया। यह सच है कि इसी प्रकार के मिथ्या-विश्वासों का यह फल था कि वीर से वीर और जान पर खेलने वाली एवं आत्माको नित्य मानने वाली भारत सन्तान इस्लामी झण्डे का मुकाबला न कर सकी और थोड़े ही काल में दासत्व का कण्ठा पहिन अपने गौरव, विद्या एवं मान सत्कार को जवाब दे बैठी। इन्हीं मिथ्या विश्वासों ने आर्यावर्त्त को पहिले भी कई बार धोका दिया, इसी मिथ्या विश्वास ने इस समय भी शिवाजी की बुद्धि पर पत्थर डालकर उसके उत्साह का हनन कर दिया और उसको ऐसी चेष्टाओं पर विवश किया कि उसके गौरव एवं पुरुषार्थ शील जीवन पर एक अयोग्य कलंक लगा दिया। हम ऊपर लिख चुके हैं कि शिवाजीने राजा जयसिंह से संधि की बातचीत आरम्भ कर रखी थी। राजा जयसिंह ने शिवाजी को लिख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भेजा था कि यदि शिवाजी को राजपूत के बेटे की बात पर विश्वास है तो निर्भय होकर चला आये मैं उसको न केवल क्षमा ही करादूंगा बल्कि दरबारे शाही से उसका सत्कार कराना मेरा धर्म होगा। तथाच उसकी इस प्रतिज्ञा पर विश्वास करके शिवाजी राजा जयसिंह की सेना में चला गया और पहुंचकर अपने आने की राजा जयसिंह को सूचना दी। राजा स्वयं अपने खेमे से बाहर आया और बड़े आनन्द से मिला। उसे अपने खेमे में लेगया और दाहिनी ओर बैठाया, बहुत आदर सत्कार किया और उत्साह व धैर्य की बात करने लगा। उससे अगले दिन शिवाजी दिलेरखां से मिलने चला गया और स्वयं अपने हाथ से पूर्णधर की तालियां उसके हवाले करदीं। शिवाजी की राजा जयसिंहसे संधि की निम्न लिखित शर्तें थी।

(१) जो भूमि मुगलिया राज्य से छीनी थी उसे सर्वथा छोड़दे, (२) शिवाजी ने जो बत्तीस दुर्ग बनाये अथवा राज्यसे छीने थे उनमें से २० किले मुगलिया राज्य को सौंपदे। शेष १२ दुर्ग संलग्न प्रान्तों सहित तथा अन्य भी विजित भूमि जागीर के रूप में शिवाजी के पास रहे। (३) शिवाजी के आठ वर्ष के बेटे सम्भाजी को पांच हजारी का पद मिले। (४) शिवाजी को बीजापुरके राज्य पर कुछ जागीरका (जिनका अनुमान ५००००० पगोड़ा वार्षिक था) अधिकार प्राप्त हो। इन अधिकारों के बदले ३ लाख वार्षिक की किस्त ४० लाख पगोड़ा की भेंट राजकीय कोष में देने की प्रतिज्ञा की गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा जयसिंह इस प्रतिज्ञापूर्ति का उत्तरदायी हुआ। औरङ्गजेब ने इसके उत्तरमें जो चिट्ठी लिखी थी उसमें इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। उसने चौथ और देशमुखी के चौथी प्रतिज्ञा में लिखे अधिकारों का कुछ भी उल्लेख न किया। परन्तु उसने शिवाजी से उन किस्तों में से पहली किस्त माँग ली थी जिससे प्रतीत होता है कि उसने इस शर्त को भी स्वीकार कर लिया था। इसके अतिरिक्त उसने एक शर्त और भी बढा दी थी कि शिवाजी बीजापुर के जीतने में सहायता दे। तथाच इस प्रतिज्ञा की पूर्ति में शिवाजी दो हजार सवार तथा आठ हजार पैदल सेना के साथ राजा जयसिंह के साथ बीजापुर को अधीन करने में सम्मिलित हुआ। शिवाजी और नेताजी पालकर ने इन लड़ाइयों में ऐसे हाथ दिखाये कि औरङ्गजेब ने अपनी लेखनीसे शिवाजी को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसकी वीरता की प्रशंसा की और उसको एक प्रशंसनीय दोशाला भेजा। इसके पश्चात् बहुत शीघ्र उसने शिवाजीको लिखाकि मेरी यह इच्छा है कि दरबारमें बुलाकर तुम्हारा आदर सत्कार किया जाय और फिर तुमको सत्कार पूर्वक दक्षिण लौट जानेकी आज्ञा दी जाय। राजाजयसिंने शिवाजी को विश्वास दिलाया कि वह उसकी कुशलता का जिम्मेवार है। इस विश्वास पर शिवाजी ने दरबार में जाने का इरादा किया। और रघुनाथको सूचना देनेके लिये दरबारमें भेजा इस अवसर पर उसने अपने प्रत्येक किलेको देखा और आवश्यक आज्ञायें दुर्गाध्यक्षों तथा अफसरोंको भेजकर प्रस्थित हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा जयसिंह को शिवाजी का पत्र

सरे सर्वरां राजाए राजगाँ । चमनबन्द बुस्ताने हिंदोसतां ॥
जिगरबंद फ़र्ज़ानए रामचंद । जे तो गर्दने राजपूताँ बुलंद ॥
क़वीतरज़े तो दौलतेबाबरी । जे बख्ते हुमायूँ तुरा याबरी ॥
जबां बख्त जैशाह बाराय पीर । जे सेवा सलामो दरूदे हिज़ीर ॥
जहां आफ़रीनत् निगहदार बाद । तुरा रहनुमायद सुए दीनो ताद ॥
शनीदम कि बर क़स्दे मन् आमदी । बफ़तहे दयारे दकिन आमदी ॥
जे खूने दिलो दीदय हिंदुआं । तु ख्वाही शवी सुर्ख़रू दर जहाँ ॥
न दानी मगर की सियाही शवद । कर्ज़ी मुल्को दी रातबाही शवद ॥
अगर सर दमेदरगरेबां क़नी । चु नज्ज़ारए दस्तों दामां कुनी ॥
बबीनी कि ईरंग अज़ खून कीस्त । दरतो जहां रंग ईं रंग चीस्त ॥
तु खुद आमदीगर बफ़तहे दकिन । शुदे फ़र्शे राहत सरो चश्मेमन ॥
शुतम हमरकाबत् ब फौजे गरां सुपुर्दंद बतो अज़ करों ता करों ॥
बले तूज़े औरंगजेब आमदी । बाइग़्वाय जाहिद फ़रेब आमदी ॥
नादानम् कुनूं चूं बबाज़म बतो । न मर्दी बुज़ुद् गर बसाज़म बतो ॥
कि मर्दां न दौरां निवाजी कुनूद । हिज़्रों न ख्वाहबाजी कुनूद् ॥
बगर चारःसाज़म बतेगो तबर । दो जानिब रसद हिन्दुआं राज़रर ॥
दरेग़ा कि तेग़म जेहद अज़ मियां । जुज़ अज़ बहे खूं खुर्दने ..... ॥
चु तुर्कों बदी कारज़ार आमदे । बरे शेर बर्दा शिकार आमदे ॥
बले आं सियहकारे बे दादो दीं । कि देवस्त दर सूरते आदमीं ॥
चु फ़ज़्ले जे अफ़ज़ल नयामद पदीद । नाशाइस्तकारीज़े शाइस्तःदीद ।
तुरा बरगुमारद पए जंगे मा । कि दारद न खुद ताबे आहंगे मा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बख्वाहद कि अज़ ज़म्रए हिंदुआँ। न मानद क़बीपंजए दर जहां॥
बहम कुशतःओ ख़स्तःशेरांशवंद। शिगलां हिज़ब्रे नायस्ताँश वंद॥
न ईं राज़ चूंदर सर आयद तुरा। फ़सूनश मगर बर गिरायद तुरा॥
बसीने को बद दर जहां दीदई। गुलोख़ार अज़ बोस्तां चीदई॥
न बायदा कि बा मा नबर्द आवरी। सरे हिंदुआं जेरे गर्द आवरी॥
वदी पुख़्तःकारी जवानी मकुन। जे सादी मगर यादगी ई सखून॥
न हरज़ा मुरक्कद तबां ताख़तन। कि जहा सिपर बायर अंदख़तन॥
पलगां बगौरां पलंगी कुनंद। बाजैगमां ख़ानः जंगी कुनंद॥
चु आबस्त दर तेग़े बुर्राने तो। चु ताबस्त दर अस्पे जौलाने तो॥
ब बायद् कि बर दुश्मने दी ज़नी। बुनो बेखे रा बरकनी॥
अगर दावरे मुल्क दारा बुदे बमी नीज लुत्फो मदारा बुदे॥
वले तूने जसवंत दादी फ़रेब। ब दिल दर न कदीं ज़राजो नशेन॥
जेरूबाहबाज़ी न शेर आमदी। बजंगे हिज़ब्रां दिलेर आमदी॥
अज़ी तुर्कदाज़ी चे आयद तुरा। हबायन सुराबे नुमायद तुरा॥
बदां सिफ़्लःमानी कि जेहदे वरद। उरूसे बंचगाल खेस आवरद॥
वले बर न अज़ बागे हुस्नश खुरद। बदस्ते हरीफ़ वरा बसंपुरद।
चि नाज़ी तु बर मेन्हे आ नावकार। बदानी सरंजामे कारे जुझार॥
बदानी कि बर बच्चए छत्रसाल। चेसां ख्वासस्त ओ ता रसानद ज़वाल
बदानी कि बर हिंदु आने दिगर। नयामद चे अज़ दस्ते आं कीनःवर
गिरफ्तम् कि पैवन्द बस्ती दी। तु नामूस रा दर शिकस्ती बदो॥
वरां देवदामे अजीरिश्तःचीस्ताकि महकम तरअज़बंदे शल्वार नीस्त
पए कामे खुद ऊन दादर हजर। जे ख़ूने निरादर जे जाने पिदर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे पासे वफा गर बदानी सखुन। चि कर्दी बशाहेजहां याद कुन
अगर बहरःदारीजे फर्ज़ानगी। जनी लाफे मर्दी ओ मर्दानगी॥
जे सोजे वतन तेग़री ताबू देह। जे अश्के सितम दीदःगां आब देह॥
न मारा बहम् वक्के पैकार हस्त। कि बर हिंदुओं कार दुश्वार हस्त
जनो वच्चओ मुल्को इमलाके मा। ब्रुतो माबिदो आबिदे पके मा
हमःरा तबाहीस्त अज, कारे ऊ। बजाए रसीदस्त आ जारे ऊ॥
कि चंदे चुकारश बमानद चुनीं। निशाने न मानद जे माबर जमीं
तअज्जुब कि इक दस्तए मुगलां। बरी पहन मुल्कम् शवद हुक्मरां
नई चीरःदस्ती जे मर्दानगीस्त। बबीं गर तुरा चश्मे फर्ज़ानगीस्त
चसाँ ऊ बमा मोहः बाजी कुनद। चसां बर रुख्श रंगसाज़ी कुनद
कशद पान मारा ब जंजीरेमा। बदुर्रद् सरेमा ब शमशीरे मा।
मरा जहद बावद करावां नमूद। पये हिंदुओ हिंदो दीने हुनूद।
बबायद कि कोशेमो राये जनेम। पये मुल्के खुद दस्तो पाये जनेम
ब शमशीरो तदबीर आबे दहेम। बतुर्कों बतुर्की जवाबे दहेम।
ब जसवंत गरतू मुवाफिक़ शवी। ब दिल दर्पएआं मुनाफिक़ शवी
ब राना दमी हमदमे हमदमी। वे बायद कि कारे बर आयद हमी
जो हर्सू बता जेदो जंग आवरेद। सरे माररा जेरे संग आवरेद
क चंदे ब पेवद बर अंजामे खेश। नेयारद बमुल्के दकिन दामखेश
मनई सूब मर्दाने मेजःगुजार। अजीं हर दो शाहा बर आरम दमार
ब अफवाजे गुर्रिदा मानिंदे मेग़। बेबारम अबर दुश्मनां आबे तेग़
बशोयम जे दुश्मना नामो निशां लोहे दकिन अजकरां ताकरां
अज़ाँ पस् ब मर्दाने पैमूदःकार बजंगी सवारा ने मुनेजःजार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य पुर् शोरिशो मौजजन बर आयम बमैदाँ जे कोहे दकिन
शवम जदतर हमरकाबे शुभा। अजो बाज़ पुर्मग़ हिसाबे शुमा।
जे हर चार सू सख्त जंग आवरेम। बरो अर्सए जंगतंग आवरेम
बदेहली रसालेम अफ़वाजरा। बदा खानए खस्तः अमवाजरा॥
जे नमश् न औरंग मानद न जेब। न तेग़े तअद्धी न दामे फरेब॥
बरारेम जूए पुर अज़ खूने नाब। बरूहे बुजुर्गा रसा नेम आब॥
बनैरूये दादारे जाँ आफरी। बसाजेम जायश बजेरे ज़मीं॥
नईकार बिसियार दुशवार हस्त। दिलो दीदओ दस्त दर्कार हस्त॥
दोदिल यक शवद् बेशकुनद् कोहरा। परा गंदगी आरद् अंबोहरा।
अजीदर मरा गुफ्तनीहा बसेस्त। कि दर् नामःआवुर्दनश रायनेस्त
बख्वाहम कि रानेमं बाहम सखुन। ने यारेम बे सूद रंजो मेहन।
चुख्वाही बे आयम बढ़ीदारे तो। बगोश आवरम राजे गुफ्तारेतो
कुशायेम रूए सखुन। कशम शानः बर पेचे मूए सखुन।
ब दामाने तदबीर दस्त आवरेम। फुसूने बरां देव मस्त आवरेम।
तराजे त राहे सुए काने ख्वेश। फराजेम दर दो हां नामे ख्वेश॥
बतेग़ो बअस्पोः बममुल्को बदीं कि हर्गिज गर्ज़दतन आयद अर्जी।
जे अंजामे अफ़ज़ल मशौ बद्गमाँ कि ओरा नबुद रास्तो दरमियाँ
गी सवाराने परखाशज। हज़रो दो सद दर कमीं दाश्त ऊ।
ती न कर्दम वरो कि ई नामः अकनूं नविश्ते वतो
मरा बातो चश्मे चुनी कार नेस्त तुरा खुद बमने बीज़ पैकार नेस्त
जवाबत बयावम अगर वाशबाब शब आयम् बपेशे दोतनहाशिताब
न हां कबगिफ्ततम अज़जेबे शायम्थःखां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़नम आवे अंदेशः बर दीदःअत। कुनम् दूरख्वाबे पसंदीदःअत।
कुनम रास्त् ताबोर ख्वाबे तुरा। बजां पस बगोरम् जवाबे तुरा॥
बयाबद चुई नामःइमज़ाजे तो। मनो तेरा बुर्रानो अफ़वाजे तो॥
चुखुशींद फ़र्दा कशद रूबशाम हिलालम् नेयाम अफ़गगद वत्सलाम

ए सर्दारोंके सर्दार, राजाओं के राजा [तथा] भारतोद्यान की कियारियों के व्यवस्थापक।

एरामचन्द्र के चैतन्य हृदयाँश, तुझसे राजपूतों की ग्रीवा उन्नत है॥

तुझसे बाबर वंश की राज्यलक्ष्मी अधिक प्रबल हो रही है (तथा) शुभ भाग्य से तुझसे सहायता (मिलती) है।

ए जवान (प्रबल) भाग्य (तथा) वृद्ध (प्रौढ़) बुद्धि वाले जयशाह, सेवा (अर्थात शिवा) का प्रणाम तथा आशिष स्वीकृत कर।

जगत का जनक तेरा रक्षक हो (तथा) तुझको धर्म एवं न्याय का मार्ग दिखावे।

मैंने सुना है कि तू मुझ पर आक्रमण करने [एवं] दक्षिण प्रान्त को विजय करने आया है।

हिन्दुओं के हृदय तथा आंखों के रक्त तू संसार में लाल मुंहवाला (यशस्वी) हुआ चाहता है।

पर तू यह नहीं जानता कि यह [तेरे मुंह पर] कालिख लग रही है क्योंकि इससे देश तथा धर्म को आपत्ति हो रही है।

यदि तू क्षणमात्र गिरेबान में सिर डाले (संकुचित होकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचार करे) और यदि तू अपने हाथ और दामन पर (विवेक) दृष्टि करे।

तो तू देखे कि यह रंग किसके खून का है और इस रंगका (वास्तविक) रंग दोनों लोकों में क्या है (लाल या काला)।

यदि तू स्वयं (अपनी ओर से) दक्षिण विजय करने आता [तो] मेरे सिर और आंख तेरे रास्ते के बिछौने बन जाते।

मैं तेरे हमरकाब (घोड़ेके साथ) बड़ी सेना लेकर चलता [और] एक सिरे से दूसरे सिरे तक (भूमि) तुझे सौंप देता (विजय करा देता)।

पर तू तो औरंगजेब की से और (उस) भद्रजनोंके धोखा नेदे वाले के बहकाने में पड़ कर आया है।

अब मैं नहीं जानता कि तेरे साथ कौन खेल खेलूं। (अब) यदि मैं तुझसे मिल जाऊं तो यह मर्दी (पुरुषत्व) नहीं है।

क्योंकि पुरुष लोग समय की सेवा नहीं करते। सिंह लोमड़ीपना नहीं करते।

और अगर तलवार तथा कुठार से काम लेता हूँ तो दोनों ओर हिन्दुओं को ही हानि पहुंचती है।

बड़ा खेद तो यह है कि.....खून के अतिरिक्त किसी अन्य कार्यके निमित्त मेरे तलवारको मियान से निकलना पड़े।

यदि इस लड़ाईके लिये तुर्क आये होते तो [हम] शेरमर्दों के निमित्त [घर बैठे] शिकार आये होते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर वह न्याय तथा धर्म से वंचित पापी जो कि मनुष्य के रूप में राक्षस है।

जब अफजलखां से कोई श्रेष्ठता न प्रकट हुई [और] न शाइस्ताखाँ की कोई योग्यता देखी।

[तो] तुझ को हमारे युद्ध के निमित्त नियत करता है क्योंकि वह स्वयं तो हमारे आक्रमण के सहन की योग्यता रखता नहीं।

[वह] चाहता है कि हिन्दुओं के दल में कोई बलशाली संसार में न रह जाय।

[सिंहगण आपस ही में लड़ भिड़ कर] घायल तथा श्रांत हो जाएं जिसमें कि गीदड़ जंगल के सिंह बन बैठें।

यह गुप्त भेद तेरे सिर में क्यों नहीं बैठता। प्रतीत होता है कि उसका जादू तुझे बहकाए रहता।

तैने संसार में बहुत भला बुरा देखा है। उद्यान से तैने फूल और कांटे दोनों संचित किये हैं।

यह नहीं चाहिये कि तू हम लोगों से युद्ध करे [और] हिन्दुओं के सिरों को धूल में मिलावे।

ऐसी परिपक्व कर्मण्यता [प्राप्त होने] पर भी जबानी (यौवनोचित कार्य) मतकर, प्रत्युत स्वादी के इस कथन को स्मरण कर—

सब स्थानों पर घोड़ा नहीं दौड़ाया जाता। कहीं कहीं ढाल भी फेंक कर भागना उचित होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याघ्र मृगादि पर व्याघ्रता करते हैं। सिंहों के साथ गृहयुद्ध में नहीं प्रवृत्त होते।

यदि तेरी काटनेवाली तलवार में पानी है; यदि तेरे कूदने वाले घोड़े में दम है।

[तो] तुझको चाहिए कि धर्म के शत्रु पर आकमण करे [एवं] उसकी जड़मूल खोद डाले।

अगर देश का राजा दाराशिकोह होता। तो हम लोगों के साथ भी कृपा तथा अनुग्रह के बर्ताव होते!

पर तूने जसवंतसिंह को धोखा दिया [तथा] हृदय में ऊंच नीच नहीं सोचा।

तू लोमड़ी का खेल खेल कर अभी अघाया नहीं है [और] सिंहों से युद्ध के निमत्त ढिठाई करके आया है।

तुझको इस दौड़ धूप से क्या मिलता है, तेरी तृष्णा तुझे मृग-तृष्णा दिखलाती।

तू उस तुच्छ व्यक्ति के सदृश है जो कि बहुत श्रम करता है [और] किसी सुन्दरी को अपने हाथ में लाता है।

पर उसकी सौन्दर्य वाटिका का फल स्वयं नहीं खाता [प्रत्युत] उसको अपने प्रतिद्वन्दी के हाथ में सौंप देता है।

तू उस नीच की कृपा पर क्या अभिमान करता है। तू कुमारसिंह के काम का परिणाम जानता है।

तू जानता है कि कुमार छत्रसाल पर वह किस प्रकार से आपत्ति पहुंचाता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू जानता है कि दूसरे हिन्दुओं पर भी उस दुष्ट के हाथ से क्या क्या विपत्तियां नहीं आईं।

मैंने मान लिया कि तैने उससे सम्बन्ध जोड़ लिया है और कुल की मर्यादा उसके सिर तोड़ी है।

[पर] उस राक्षस के निमित्त इस बन्धन का जाल क्या वस्तु है क्योंकि यह बन्धन तो इज़ारबन्द से अधिक दृढ़ नहीं है।

वह तो अपने इष्ट साधन के निमित्त भाई के रक्त [तथा] बाप के प्राण से भी नहीं डरता।

यदि तू राजभक्ति की दोहाई दे तो तू यह तो स्मरण कर कि तैने शाहजहाँ के साथ क्या बर्ताव किया।

यदि तुझको विधाता के यहां से बुद्धि का कुछ भाग मिला है [और] तू पौरुष तथा पुरुषत्व की बड़ मारता है।

तो तू अपनी जन्म भूमि के संताप से तलवार को तपावे [तथा] अत्याचार से दुखियों के आँसू से [उस पर] पानी दे।

यह अवसर हम लोगों के आपस में लड़ने का नहीं है क्योंकि हिन्दुओं पर [इस समय] बड़ा कठिन कार्य पड़ा है।

हमारे लड़के बाले, देश, धन, देव देवालय तथा पवित्र देव पूजक—

इन सब पर उसके काम से आपत्ति पड़ रही है। [तथा] उसका दुःख सीमा तक पहुंच गया है।

कि यदि कुछ दिन तक उसका काम ऐसा ही चलता रहा [तो] हम लोगों का कोई चिह्न [भी] पृथिवी पर न रह जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मुट्ठीभर मुगल हमारे [इतने] बड़े इस देश पर प्रभुता जमावें।

यह प्रबलता [कुछ] पुरुषार्थ के कारण नहीं हैं। यदि तुझ को समझ की आंख है तो देख।

[कि] वह हमारे साथ कैसी गोटियाचाली करता है और अपने मुँह पर कैसा रंग रंगता है।

हमारे पावों को हमारी ही सांकलों में जकड़ देता है [तथा] हमारे सिरों को हमारी ही तलवारों से काटता है।

हम लोगों को [इस समय] हिन्दू, हिन्दोस्तान तथा हिन्दू धर्म [की रक्षा] के निमित्त बहुत अधिक यत्न करना चाहिए।

हमको चाहिए कि यत्न करें और कोई राय स्थिर करें [तथा] अपने देश के लिये खूब हाथ पाँव मारें।

बलवार पर और तदबीर पर पानी दें [अर्थात् उन्हें चमकावें और] तुर्कों को जवाब तुर्की में (जैसे का तैसा) दें।

यदि तू जसवन्तसिंह से मिल जाय और हृदय से उस कपट कलेवर के पड़े पड़ जाय।

[तथा] राना से भी तू एकता का व्यवहार करले तो आशा हैं कि बड़ा काम निकल जाय।

चारों तरफ से धावा करके तुम लोग युद्ध करो। उस साँप के सिर को पत्थर के नीचे दबा लो (कुचल डालो)।

कि कुछ दिनों तक वह अपने ही परिणाम के सोच में पड़ा रहे [और] दक्षिण प्रान्त की ओर अपना जाल न फैलावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[और] मैं इस ओर भाला चलाने वाले वीरों के साथ इन दोनों बादशाहों का भेजा निकाल लूँ।

मेघों की भांति गरजने वाली सेना से दुश्मनों पर तलवार का पानी बरसाऊँ।

दक्षिण देश के पटल पर से एक सिरे से दूसरे सिरे तक दुश्मनों का नाम तथा चिह्न धो डालूँ।

इसके पश्चात् कार्यदक्ष शूरों तथा भाला चलाने वाले सवारों के साथ।

लहरें लेती हुई तथा कोलाहल मचाती हुई नदी की भाँति दक्षिण के पहाड़ों से निकल कर मैदान में आऊँ।

और अत्यन्त शीघ्र तुम लोगों की सेवा में उपस्थित होऊँ और फिर उससे तुम लोगों का हिसाब पूछूँ।

[फिर हम लोग] चारों ओर से घोर युद्ध उपस्थित करें और लड़ाई का मैदान उसके निमित्त संकीर्ण करदें।

हम लोग अपनी सेनाओं को तरंगों को, दिल्ली में उस जर्जरीभूत घर में पहुंचा दें।

उसके नाम में से न तो औरङ्ग (राजसिंहासन) रह जाय और न जेब (शोभा) रहे। उसकी अत्याचार की तलवार [रह जाय] न कपट का जाल।

हम लोग शुद्ध रक्त से भरी हुई एक नदी बहा दें [और उस से] अपने पितरों की आत्माओं का तर्पण करें।

न्यायपरायण प्राणों के उत्पन्न करने वाले (ईश्वर) की सहा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यता से हम लोग उसका स्थान पृथ्वी के नीचे (कब्र में) बनादें।

यह काम (कुछ) बहुत कठिन नहीं है। (केवल यथोचित) हृदय, आंख तथा हाथ की आवश्यकता है।

दो हृदय (यदि) एक हो जायँ तो पहाड़ को तोड़ सकते हैं [तथा] समूह के समूह को तितर बितर कर दे सकते हैं॥

इस विषय में मुझको तुझसे बहुत कुछ कहना [सुनना] है, जिसका पत्र में लाना (लिखना) [युक्ति] सम्मत नहीं है॥

मैं चाहता हूँ कि हम लोग परस्पर बात चीत करलें जिसमें कि व्यर्थ दुःख तथा श्रम न झेलें।

यदि तू चाहे तो मैं तुझसे साक्षात् करने आऊँ। [और] तेरी बातों का भेद श्रवणगोचर करूँ।

हम लोग बात रूपी सुन्दरी का मुख एकांत में खोलें। [और] मैं उसके बालों के उलझन पर कंघी फेरूं।

यत्न के दामाद पर हाथ धरें। [और] उस उन्मत्तराक्षस पर कोई मन्त्र चलावें।

अपने कार्य की [सिद्धि] की ओर का कोई रास्ता निकालें [और] दोनों लोकों (इहलोक तथा परलोक) में अपना नाम ऊँचा करें।

तलवार की शपथ, घोड़े की शपथ, देश की शपथ तथा धर्म की शपथ करता हूँ कि इससे तुझ पर कदापि [कोई] आपत्ति नहीं आवेगी।

अफ़ज़लखाँ के परिणाम से तू शङ्कित मत हो क्योंकि उस में सचाई नहीं थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारह सौ बड़े लड़ाके हब्शी सवार वह मेरे लिये घात में लगाए हुए था।

यदि मैं उस पर पहिले ही हाथ न फेरता तो इस समय यह पत्र तुझको कौन लिखता।

[पर] मुझको तुझसे ऐसे काम की आशा नहीं है (क्योंकि) तुझको भी स्वयं मुझसे कोई शत्रुता नहीं है॥

यदि मैं तेरा उत्तर यथेष्ट पाऊँ तो तेरे समक्ष रात्रि को अकेला आऊँ।

मैं तुझको गुप्त पत्र दिखाऊं जोकि मैंने शाइस्तःखाँ की जेब से निकाल लिये थे।

तेरी आँखों पर मैं संशय का जल छिड़कूं (और) तेरी सुख-निद्रा को दूर करूँ।

तेरे स्वप्न का सच्चा सच्चा फलादेश कहूँ (और) उसके पश्चात् तेरा जवाब लूं।

यदि यह पत्र तेरे मन के अनुकूल न पड़े। (तो फिर) मैं हूँ और काटने वाली तलवार तथा तेरी सेना!

कल जिस समय सूर्य अपना मुँह संध्या में छिपा लेगा। उस समय मेरा अर्धचन्द्र (खड्ग) मियानको फेंक देगा (मियान से निकल आवेगा)। बस, भला हो।

दिल्ली दरबार और शिवाजी

राजा जयसिंह ने शिवाजी से बड़े आदर सत्कार की प्रतिज्ञायें की थीं। शिवाजी इस विचार से दिल्ली दरबार की ओर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्थित हुआ कि औरङ्गजेब से दक्षिणी राज्य का पट्टा प्राप्त करूं परन्तु जब देहली के समीप पहुंचा तो माथा ठनका वहां और ही और खेल दृष्टिगोचर हुए। समारोहित व सुसज्जित अगवानीके स्थान में क्या देखता है कि केवल जयसिंह का बेटा रामसिंह तब एक और साधारण सा शाही पदाधिकारी चला आता है। मनमें बहुत लज्जित हुआ और सोचने लगा कि भूल गया और भारी मात खाई। सन्देह हो गया कि कदाचित् प्रिय प्राण भी इसी भूल की भेंट हों परन्तु फिर भी सचेत हो गया और बिना किसी शिकायत के देहली में प्रविष्ट हुआ। औरङ्गजेब ने सोचा कि बस अब क्या है। शिवाजी काबू में आगया यही अवसर है कि देहलीका राजकीय गौरव इसको दिखाया जाय। उसने सोचा कि इस मनुष्य ने सारी अवस्था जङ्गलों में काटी है। लड़ाई भिड़ाई और लूट खसूट के सिवा इसने कुछ नहीं देखा। आज तक मुग़लिया राज्य का गौरव इसके विचार में भी नहीं आया था। अपनी वीरता और चालाकी के भरोसे पर ही शाही सेना का मुकाबला करता रहा है। इसने कभी भी अनुभव नहीं किया कि जिन राजकीय सेनाओं का मुक़ाबला में बड़े साहस से करता हूँ। उनकी पीठ पर एक ऐसा उच्च और महान राज्य है कि जिसके सामने भारत के सम्पूर्ण राजे शिर झुकाते हैं।

अभिमानी राठौर चौहान तथा कछुवाहे भी बारी बार से सब सिर झुका चुके। राणा प्रतापसिंह के उत्तर पदाधिकारी भी इस राज्यका सिक्का मान चुके हैं। कन्नौज-दिल्ली-पाटलीपुत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारवाड़ तथा मेवाड़ आदि सम्पूर्ण बड़े बड़े राज्यों का गौरव आदर तथा सत्कार और धन मुग़लिया राज्य चरणों में प्रविष्ट हो चुका है। औरङ्गजेब चाहता था कि यह सब कुछ अपनी आंखों से देखे और मुगलिया राज्य के गौरव तथा अपनी हीन अवस्था का खूब अनुभव करे ताकि फिर मुक़ाबला करने का साहस न रहे।

औरङ्गजेब ऊपर से तो बहुत कुछ साधुपने का दावा रखता था। यहाँ तक कि बाप को गद्दी से उतार कर क़ैद करना और अन्त में उसको विष दिलवाकर मरवा देना, भाइयों को एक एक करके वंचना तथा प्रतारणा से मार देना, हिन्दुओं के साथ सख्ती करना इत्यादि सब कुछ धर्मकी आड़ में किया करता था। माला दिनभर उसके हाथमें रहती थी। नमाज व रोजे का बहुत पाबन्द था। धर्मकी आज्ञाओंका बहुत पाबन्द था। गाने को हराम समझता था। यहां तक कि उसके सामने गाना बजाना नितान्त बन्द था। वेष बहुत साधारण रखता था। शाहजहां की

ये सिंहासन पर बैठना उचित न समझता था। परन्तु यह अवसर एक विशेष अवसर था। इस अवसरकी विशेषता इस ही से प्रकट है कि औरङ्गजेब ने भी उस धार्मिक साधुपन को थोड़ी देर के लिए तिलाञ्जली देदी।

२८ ज़ीक़अद सन् १०७६ हिजरी तदनुसार १६६६ में एक बड़ा भारी दरबार रचा गया। सम्राट् महाशय स्वयं बड़े बड़े अमूल्य भारी तथा अप्राप्त मणियों से खचित आभूषण धारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करके शाहजहां निर्मित जड़ाऊ सिंहासनपर विराजमान हुए। मानो औरङ्गजेब इस तिथि को पहले पहल अपने पिताकी गद्दी पर बैठा। शेष सम्पूर्ण शत्रुओं को तो आधीन कर ही चुका था। एक शिवाजी की ओर से खटका था सो वह भी उस दिन उसकी सेवा के लिए उपस्थित था। दरबारियों के लिये तीन दरजे सुसज्जित किये गये थे जिनमें से पहले दरजे में सुनहरी फ़र्श, दूसरे में रूपहरी फ़र्श तथा तीसरे में मर्मर का फर्श था। जब शिवाजी दरबार में उपस्थित हुआ तो उसको सुनहरी फ़र्श के दरजे में उन लोगों की श्रेणी में जोकि पांच सहस्री पद रखते थे, बैठने की आज्ञा मिली। इस अनादर और मानहानि को देख शिवाजी सहन न कर सका और राजपूती रक्त उसकी रगों में जोश मारने लगा। क्रोध के मारे नेत्र लाल हो गये और बादशाह की ओर मुख करके प्रतिज्ञा-हानिका दोष लगाने लगा। अपने से उच्च दरबारियोंको सम्बोधन करके कहने लगा कि यदि उनमें मुझसे अधिक योग्यता है तो रण में आयें अपनी शक्ति दिखायें और मेरी शक्ति देखें। बादशाहकी आड़में डरपोकों और स्त्रियों के समान आभूषण पहनकर मुझसे उच्च दर्जे में बैठना अत्यन्त लज्जा की बात है।

सम्पूर्ण दरबार चकित था कि यह मरहठा क्या अनर्थ कर रहा है। सम्पूर्ण भारतका राजा सामने बैठा है चारों ओर मुसलमान पदाधिकारी अपने अपने स्थान पर हैं। सेना के लाखों मनुष्य किंचित प्रेरणा से अपनी चमकीली और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीक्ष्ण तलवारों को घुमाने के लिये उद्यत हैं और यह महात्मा अकेला ही बिना किसी प्रकारके मित्र और सहायता के केवल चन्द सथियों के साथ ही इस प्रकार अण्डबण्ड बक रहा है।

परन्तु मुग़लियां दरबार में इस प्रकार के साहस का यह पहला ही अवसर न था किन्तु अभी बहुत काल व्यतीत नहीं हुआ होगा स्यात् उस घटना को अपने नेत्रों से देखने वाले दरबारी भी विद्यमान् थे जबकि 'अमरसिंह राठौर' ने शाहजहां के सामने भरे दरबार में 'सिलावत जङ्ग' का सिर उड़ा दिया था और बादशाह को स्वयं भागकर जनान खाने में प्राण बचाने पड़े थे। अन्तको वंश परम्परा से तो शिवाजी की नाड़ियों में भी राजपूती रक्त था और वह भी अत्यन्त शुद्ध, उज्ज्वल और पवित्र। कहते हैं कि औरङ्गजेब इस बातको बिल्कुल पी गया और सिवा मुस्कराने के उस समय और कुछ नही कहा। इसके पश्चात् शिवाजी की उपस्थिति बन्द हो गई या स्वयं शिवाजी सलाम करने को नहीं गया। हां दूतों द्वारा मेल मिलापकी कुछ कुछ कुछ बातें होती रहीं। औरङ्गजेब को अपनी चालों पर बहुत विश्वासथा और जिस समय शिवाजी अत्यन्त क्षुब्ध होकर ऐसे शब्द मुख से निकालता था तो औरङ्गजेब केवल यह विचारकर हँस देता था कि शेर की कन्दरा में भी आकर गुर्राता है? क्या यह मालूम नहीं कि "जीवन की घड़ियां समाप्त हो चुकी हैं और अब वीरता दिखलाने के अधिक अवसर हाथ न आयेंगे।" शिवाजी जीवन से तो हाथ धो ही चुका था अब तो केवल भाग्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परीक्षा ही कर रहा था कि शायद किसी प्रकार इस जालमें से निकल जाय।

अन्तको औरङ्गजेब ने आज्ञा देदी कि इसके निवास स्थान पर पहरा रक्खा जाय। जहां भी यह शहर में जाय पहरेदार इसके साथ रहे मानो शिवाजीको नजर बन्द कर लिया गया।

एक अंग्रेज इतिहास वेत्ता लिखता है कि औरङ्गजेब ने शिवाजी को कत्ल कर डालने का तो प्रबन्ध किया। परन्तु कुंवर 'रामसिंह' राजा जयसिंह के बेटे को खबर हो गई। उसने शिवाजीको विदित कर दिया शिवाजी ने बीमारी का बहाना किया और इलाज आरम्भ हुआ। थोड़े दिनों के पश्चात् प्रसिद्ध कर दिया गया कि अब आराम हो गया और स्वास्थ्य स्नानके अवसर पर अमीरों के घर मिठाइयों की बड़ी बड़ी टोकरियां भेजनी आरम्भ हो गईं। यही टोकरियां जो मनुष्य के छिपने के लिये पर्याप्त थीं भर भर कर दान के लिये मन्दिरों व मस्जिदों में भेजनी आरम्भ कीं।

एक दिन (सफर की अन्तिम तिथि को) अपने एक साथीको जोकि आकृति व ढांचे में बहुत कुछ मिलता था अपनी सोने की अँगूठी पहराकर लिटा दिया और स्वयम् एक टोकरी में बैठ और अपने बेटे सम्भाजी को जोकि साथ आया था दूसरी टोकरी में बिठा शहर से बाहर निकल गया। देहली से बाहर सवारी का प्रबन्ध विद्यमान था। घोड़ों पर सवार होकर अगले दिन मथुरा पहुंचा यहां पर इसका एक विश्वासपात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मित्र नेताजी और चन्द एक ब्राह्मण उसके प्रतीक्षकथे वहां उस ने दाढ़ी मूंछ मुंडवाकर विभूति रमा एक साधू का वेष बदला। रुपया पैसा और कुछ हीरे मोती आदि खोखली छड़ियों में रख रातों रात प्रयाग पहुंचा। प्रयाग में उसने अपने बेटे सम्भाजी को जो कि उस समय बालक था एक दक्षिणी ब्राह्मण के सुपुर्द किया और उसको सख्त हिदायत की कि जब तक मेरे हाथ की लिखी चिट्ठी न आये तू इसको मत भेजना! इस प्रकारसे अपना बोझ हलका करके इसी वेष में काशी की ओर एक साधुओं के अखाड़े के साथ प्रस्थित हुआ। वैरागियों गुसाइयों और उदासियों का यह झुण्ड प्रतिदिन कूंच करता जाता था कि एक स्थान पर एक मुसलमान सेनाध्यक्ष ने उन्हें पकड़ लिया और तलाशी की आज्ञा हुई एक दिन तथा एक रात इस प्रकार कैद में कटा। शिवाजीको चिन्ता हुई कि ईश्वर न करे कि यह सम्पूर्ण परिश्रम अकारथ जाय और देहली के स्थान काशी तथा प्रयाग के मध्य में ही एक कङ्गाल मुसलमान के हाथ से जान जाय। सोचाकि ऐसा काम कीजिये कि इधर या उधर पहरेदारोंसे कह कहाकर व लोभ आदि देकर यदि कुछ बचाव होसके तो करूं यह विचार कर तुरन्त फौजदार के सामने जा खड़ा हुआ और उसको चुपके से कहा कि मैं शिवाजी हूँ। एक ओर मैं हूँ और इस ओर बहुमूल्य दो हीरे हैं। यदि हीरे लेना चाहता है तो मुझको छोड़दे अन्यथा मैं उपस्थित हूँ जो चाहे सो कर चाहे जीता पकड़ले चाहे शिर काटकर औरङ्गजेब के पास भेज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु इस अवस्थामें हीरे हाँथ न आयेंगे। शिवाजीने सोचाथा कि यदि यहां एकरात और भी रहा तो प्रातःकाल तक शाही कर्मचारी पहुंच जायेंगे और फिर जीवन से हाथ धोने पड़ेंगे और यदि यह चाल चलगई तो अच्छा अन्यथा मरनातो है ही।

शिवाजीने अपनी जान हथेलीपर धरकर जो चाल चली थी चल गई। मुसलमान फौजदारने लालच में आकर हीरे ले लिये और शिवाजीको छोड़ दिया। बस फिर क्या था अत्यंत फुरती से दिन रात कूंच करता हुआ काशी जा पहुंचा वहां से बिहार पटना और चांदाके रास्ते दक्षिण में जा पहुंचा।

उधर देहली का वृत्तान्त सुनिये। एक सूचक ने सम्राट को खबरदी कि शिवाजी भाग गया सम्राटने कोतवाल से उत्तर मांगा कोतवाल ने उत्तरमें लिखा कि उसके चारों ओर पहरेदार विद्यमान हैं और शिवाजी भी विद्यमान है। सम्राट को शांति हो गई परन्तु फिर दूसरे सूचक ने खबर दी कि शिवाजी भाग गया सम्राट ने फिर कोतवाल से उत्तर माँगा कोतवाल स्वयं शिवाजी के निवास स्थान में आया और शिवाजी के पलङ्ग पर उस मनुष्य को पड़ा पाया जो शिवाजी की अंगूठी पहिने हुये था। उसने फिर भी सम्राटको वही उत्तर दिया। परन्तु तीसरे सूचकने सम्राटको फिर सूचनादी कि कोतवालकी रिपोर्ट झूंठी है। इस तीसरी खबर पर अत्यंत सावधानी से परताल की गई तो भेद खुलगया। तत्काल सम्पूर्ण सूबों, हाकिमों, सेनादारों तथा फौजदारोंके नाम परवाने जारी हो गये कि शिवाजी जहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी मिले पकड़कर दरबार में उपस्थित किया जाय। अत्यत शीघ्रतासे दूत चारों ओर प्रस्थित किये गये परन्तु पिंजरे से निकला हुआ शेर फिर हाथ नआया औरंगजेब हाथ मलता रहगया

शिवाजी तो इस प्रकार जाल से निकल गया परन्तु बेचारे रामसिंहपर शाही विपत्ति पड़ गई। रामसिंहको अपनी प्रतिज्ञा पूर्तिका दण्ड भुगतना पड़ा उधर उसका पिता बीजापुर की लड़ाई से लौटता हुआ मर गया। यदि शिवाजी भी औरङ्गजेबके हाथ से न निकलता तो आवश्यक था कि औरङ्गजेब के हाथ से मारा जाता और औरङ्गजेब की चाल सम्पूर्ण प्रकार से सफल होती। परन्तु विधि का विधान कुछ और ही था। जयसिंह औरङ्गजेब की सेवा करता हुआ मर गया। जिसकी मृत्यु से औरङ्गजेबको अपने विचारानुसार एक बलवान शत्रुसे छुटकारा मिला। परन्तु शिवाजीने औरङ्गजेबके हाथसे मुक्त होकर ऐसे महान राज्यकी नींव डाली जिसने कि मुगलिया राज्य को भारतवर्ष से उखाड़ डाला।

जब शविाजी देहली दर्बार को प्रस्थित हुआथा तो जयसिंह बीजापुर से मुकाबला कर रहा था और शिवाजी का एक बीर अफसर तन्ना जी पालकर इसके साथ था और बड़ी बीरता से अपने स्वामी की ओर से लड़ रहा था शिवाजी के देहली से भाग आनेपर औरङ्गजेब 'तन्नाजी' को (जिसको मुसलमान इतिहास वेत्ता नत्थूजी भी कहते हैं) पकड़ने की आज्ञा दी। तन्नाजी कैद होकर देहली लाया गया। उसको मुसलमान होने के लिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाचार किया गया और बलात मुसलमान किया गया। यह "कुलोखां" अवसर पाकर भाग गया। और फिर शिवाजी से आ मिला।

शिवाजी का अभ्युदय

दक्षिण में पहुंच कर शिवाजीने फिर उन प्रान्तों को लौटाने के उपाय किये जो उसने मेलमिलापके समय राजा जयसिंह को दे दिये थे। बहुतसे किले तो सुगमता से हाथ आ गये और कई एकके लिये युद्ध भी करने पड़े। परन्तु थोड़े ही समय में सतारा पन्हाला और राजगढ़ जैसे प्रसिद्ध किले उसने लौटा लिये। लगभग वह सम्पूर्ण मण्डल जो उसने राजा जयसिंह के हवाले किया था पुनः उसकी आधीनता में आ गया। यहां तक कि उसने एक बार सूरत को जो कि मुगलिया इलाका था लूटा और बहुतसा माल एवं धन वहांसे प्राप्त किया। जब सूरत की खबर औरङ्गजेब को पहुंची तो वह अत्यंत क्रोध में आया और फिर उसने दिलेर खां व शुजायतखांको शिवाजी को दण्ड देने के लिये फौजकशीकी आज्ञा दी। याद रखना चाहिये कि औरङ्गजेबको कभी किसी पर विश्वास नहीं आया था 'अकबर' ने तो हिन्दू राजाओं को चापलूसी, विश्वास एवं ऐहिसानोंसे अपना सेवक बना लिया था और उनकी ही सहायता से सारे भारत पर विजय प्राप्त करके मुगलिया राज्य को दृढ़ता दी थी जहांगीर व शाहजहाने भी न्यूनाधिक अकबर ही का अनुसरण करके हिन्दुओंसे अच्छे सम्बन्ध स्थिर रक्खे यद्यपि शाहजहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के समय में ही इन सम्बन्धों का मुख बदल गया था। परन्तु औरङ्गजेब के समय में तो उन का ढांचा ही उलट गया। औरङ्गजेब हिन्दू राजाओं को अत्यन्त घृणा तथा अविश्वास की दृष्टि से देखता था। परन्तु साथ ही इस बात का भी यत्न करता था कि वे खुले मुख इसके शत्रु न बन जायें। औरंगजेब हिन्दू राजाओं को प्रायः ऐसे ही स्थानों पर भेजा करता था जहां से उनके जीते जी आने की आशा न हो। इसके अतिरिक्त इस अविश्वास का एक और भी कारण था कि जिस प्रकार स्वयम् औरंगजेब ने छल, कपट और पूर्ण धूर्तता से गद्दी प्राप्त की थी उसी प्रकार उसको अपने बेटों से बेईमानी का प्रत्येक समय सन्देह रहता था। पिता को कैद करके और भाइयों को काट कर उसने अपने मार्ग को पैतृक शत्रुओं से निष्कण्टक कर लिया था। उसको सन्देह था कि उसी के दृष्टान्त को लेकर उस ही के अपने हृदय के टुकड़े (पुत्र) भी अपने पिता के साथ वही बर्ताव न करें जो कि उसने अपने पिता के साथ किया था। उसका बड़ा बेटा जो भारत के इतिहास में शाहआलम के नाम से प्रसिद्ध है एक हिन्दू माता के गर्भ से था और औरंगजेब को यह डबल चिन्ता थी कि ईश्वर न करे कि राजपूत 'शाहआलम' के साथ मिल जावें और जो काम औरंगजेब ने बिना राजपूती सहायता के किया था उसको 'शाहआलम' अपने राजपूत बन्धुओं की सहायता से कर डाले।

एक बार जबकि औरंगजेब सख्त बीमार हो गया तो उसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणवास में भी स्त्रियों के दो दल हो गये थे। औरङ्गजेब की बहिन रोशनआरा यह गाँठने लगी कि हिन्दू रानी के बेटे शाह-आलम को गद्दी न मिले और मुसलमान ढगम के शाहजादे को राजसिंहासन का अधिकारी व स्वामी माना जाय। यह धड़ा-बंदी केवल रणवास तक ही नहीं रही किन्तु अमीरों दरबारियों तथा मन्त्रियों तक फैल गई तथा राजा जयसिंह भी उन मनुष्यों में से था जो कि शाह मुअज्जम के पक्षपाती माने जाते थे, औरङ्गजेब ने इसी विचार से जयसिंह को दक्षिण की ओर भेजा था कि उसने शिवाजीको मारडाला तो अच्छा यदि वह स्वयं मर गया तो और भी उत्तम होगा। जब जयसिंह को दक्षिणकी ओर भेजा गया तो उसके बड़े लड़के रामसिंहको बतौर जमानतके दरबारमें रख लिया गया, जिसका कि अभिप्राय यह थाकि यदि पिता पर कुछ सन्देह हुआ तो बेटे को मार डाला जायगा और जयसिंह भी इसी भयसे सीधा बना रहेगा। ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि जब शिवाजी देहली से भागा तो रामसिंह पर सन्देह किया गया और उसकी मानहानि भी की गई। राजा जयसिंह दक्षिणकी मुहिम से लौटकर न आ सका अर्थात् मार्ग में ही मर गया। अब एक और राजपूत अमीर की बारी आई कि औरङ्गजेब के हत्थे चढ़े तथा उसके अभिप्राय को पूरा करनेका कारण बने। राजाजयसिंह की मृत्यु पर शाहजादा आलम को दक्षिण का सूबेदार नियत किया गया और राजा जसवन्तसिंह जोधपुराधीश को शाहजादे की सहायता के लिये नियत किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया। दिलेरखाँ और खानजहाँ को खास तौर पर शहजादे के आधीन राजा शिवाजी के प्रतिकार के लिये नियत किया गया।

कई एक इतिहासवेत्ताओं का मत है (औरङ्गजेब जैसे कपटी मनुष्य से आश्चर्य्य भी नहीं) कि शाहजादा मुअज्जम को अपने पिता से यह हिदायत हुई थी कि वह दक्षिण में दिखावे मात्र के लिये सम्राट् के विरुद्ध विद्रोह फैलावे। शिवाजी तथा अन्य हिन्दू राजाओं को अपने साथ मिलाकर औरङ्गजेब के हवाले करदे। तथाच मुअज्जम ने ऐसा ही किया दक्षिण में पहुंच कर शिवाजी से अत्यन्त प्रेम-भाव से पेश आया और उस को बहुत लालच दिया। औरङ्गजेब की ओर से शिवाजी को राजा की पदवी भी दी! सम्भाजी का पुरस्कार भी स्थिर कर दिया गया और इसके अतिरिक्त बरार में शिवाजी को जागीर भी दी गई यहाँ तक कि पूना, चाकन तथा सूपा प्रान्त भी लौटा दिये गये। शिवाजी ने शाहजादा मुअज्जज से परोक्षतया पत्र व्यवहार में सहायता के लिये प्रतिज्ञा की परन्तु खुले तौर पर उसके पास आने से इनकार कर दिया।

वह एक बार मुगलिया प्रतिज्ञाओं के धोके में अपने प्राण जोखम डाल चुका था। अब सम्भव नहीं था कि उस जैसा विचारशील मनुष्य फिर अपने आपको इस आपत्ति में डाल लेता। परन्तु शाह मुअज्जम की सेवा व अमीर अफसर जिनमें बहुत से हिन्दू भी शामिल थे इस बनावट में आगये कि जिसका फल यह हुआ कि बहुत से छल एवं कपटों के साथ औरङ्गजेब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के हवाले कर दिये गये। बहुत से तो औरङ्गजेब के कुचक्र के शिकार हुये और जो बचे थे उन्हें इस तरह औरङ्गजेब जैसे बलवान सम्राट् ने खुले तौर पर मार डाला।

बीजापुर और गोलकुण्डे की अधीनता

हम ऊपर लिख चुके हैं कि शाहजी दरबार बीजपुर का नौकर था। जब शिवाजी ने अपने जीवन के वास्तविक काम आरम्भ किये और हाथ में तलवार लेकर अपने भुजदण्ड के साहाय्य एवं देश को यवनों के पंजे से मुक्त करके मराठा राज्य की नींव डालेगा। पिछले पृष्ठों में लिखे सम्पूर्ण वृत्तान्तों से जो शिवाजी से ४० वर्ष की अवस्था तक प्रकट हुये यह किसको ज्ञात था कि 'शाहजी' का बेटा शिवाजी इस प्रकार के साहस ऐसी वीरताएवं पुरुषार्थ का प्रमाण देगा जैसा कि हम पीछे दिखा चुके हैं। किन्तु १६ वर्ष के शिवाजी को देखकर किसी मनुष्य के हृदय में यदि कोई विचार आया भी होगा तो केवल इतना कि यह अपने पिता से अधिक बलवान् तथा मान्य होगा, और शायद किसी का तो यह भी विचार हो कि इस प्रकार उजड्डपने की बातें राज-विद्रोह, लूट-खसोट की आदतें उसके विध्वंस का कारण होंगी, यह बात तो शायद किसी की बुद्धि में भी न समाई हो कि २५ वर्ष की अवस्था से पूर्व पूर्व ही १६ वर्ष का लड़का एक अच्छे राज्य का स्वामी होगा, देहली का मुग़लिया सम्राट् उसके साथ सुलह की प्रतिज्ञायें करेगा और बीजा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुर तथा गोलकुण्डा के वंश उसकी कर देना स्वीकार करेंगे। भाव यह कि इस प्रकार थोड़े ही समय में शिवाजी ने जो कुछ करके दिखाया वह सब लोगों की आशाओं से बढ़ कर था। शिवाजी ने कई बार सफलता भी प्राप्त की और निष्फलता भी प्राप्त की परन्तु पुरुषार्थ एवं साहस का ऐसा धनी था और तद्-वीरों का ऐसा पूरा था कि निष्फलता भी उसके लिये लाभदायक ही सिद्ध होती रही। सच है परमात्मा का हाथ उसके शिर पर था। उसका भाग्य उत्तम था तथा उसके भाग्य की बलवत्ता उसकी जाति का गौरव, उसके देश की भाग्य शीलता का चिह्न था। मैत्री से लोगों को आधीन कर लेता था, वाणी से लोगोंके हृदयों को आकर्षण करता था, प्रेम स्नेह से दूसरों को अपना प्रेमी बना लेता था। मनुष्यों की परीक्षा करता था और गुणकी पहि-चान रखता था शत्रुओं को दोस्त और विश्वासपात्र दोस्त ही नही अपितु विश्वासपात्र नौकर बना लेना उसी का काम था। बहुत से योग्य वीर और साहसी मनुष्य उसके साथ लड़े और उनमें बहुत से उसकी उच्च बुद्धिमत्ता के क़ायल होकर उस पर प्राण देने वाले उसके सिपाही तथा अफ़सर बने। मनुष्यों को पहचान कर उसने काम लेना यह एक खास गुण था जो शिवाजी की सफलता का कारण था जिसने कि उसको इस थोड़े से समय में बड़े बड़े वीर और बलिष्ठ शत्रुओं के मुकाबले में सफलता प्राप्त कर दी। सन् १६६७ व ६८ ई० में सुलतान मुअज्जम सूबेदार दक्षिण व शिवाजी के मध्य में एका रहा। सन् १६ ६८ के मध्य में अली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिलशाह बीजापुर के राजा ने देहली सम्राट् से सुलह करली और साथ ही शिवाजी से सुलह करके उसको तीन लाख रुपया वार्षिक देना स्वीकार किया इस प्रकार अदिलशाह ने भी ५ लाख रुपया वार्षिक स्वीकार करके सुलह करली। सन् १६६७ तक शिवाजी अपने राज्य के प्रबन्ध में लगा रहा और लगभग दो वर्ष तक कोई लड़ाई भिड़ाई न हुई।

पुनर्विजय और अभिषेक

सन् १६७० में औरङ्गजेब ने दक्षिण के सूबेदार को फिर आज्ञा दी कि वह शिवाजी और उसके उच्च पदाधिकारियों को गिरफ्तार करे। जब शिवाजी को इसका समाचार मिला तो उसने भी अपनी और न केवल अपनी रक्षा के लिये किन्तु संग्राम की भी तय्यारियां आरम्भ करदी। पूर्व इसके कि उसका शत्रु उस पर चढ़ाई करता उसने अपने अफसरों को सिंहगढ एवं पूर्णधर दोनों किले लौटा लेने की आज्ञा दी। औरङ्गजेब ने अपने स्वाभाविक कपट से ही इन दोनों किलों में राजपूत सेन रक्खी हुई थी और एक उदयभानु नामी प्रसिद्ध सिपाही इनका अफसर था।

शिवाजी ने अपने अफसरों से पूछा कि वह कौनसा सिंह है जो गये हुये सिंहगढ़ को इन शत्रूसिंहों से लौटाये गा। सीढ़ीं से सिंहगढ़ का खाली करा लेना तो बड़ी भारी बात न थी परन्तु शूरवीर शेरों को निकाल कर खोये हुये सिंहगढ़ का प्राप्त कर लेना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक असाधारण साहस का काम था। सिवाय तन्नाजी के किसी का साहस न हुआ कि इस बीड़े को उठाये उसने तलवार हाथ में उठाकर इस सेवा को पूरा करने के लिये आज्ञा मांगी परन्तु शर्त यह थी कि मेरा सगाभाई और एक हजार मावली जिनको मैं स्वय छाँट लूँ मुझे दिये जायें। याद रखना चाहिये कि यह किला बड़े दुर्गम स्थान पर था पहाड़ों की श्रेणी के पूर्वीय किनारे पर ऐसे स्थान पर यह किला बनाया गया था कि जहां पूर्व और पश्चिम की ओर को ऊँची ऊँची चोटियाँ थी, जहाँ पर कि मनुष्य का गमनागमन अत्यन्त कठिन था। यह किला एक ऐसे दृढ़ टीले पर था कि जिसकी सीधी चढ़ाई आध मील से कम न थी। यह टीला पृथ्वी मण्डल पर मानों एक स्थाणु के समान खड़ा था आध मील की चढ़ाई के ऊपर चालीस फीट तक काले पत्थर का टीला है जिसके ऊपर एक दृढ़ पत्थर की त्रिकोण दीवार है जिसमें कि स्थान स्थान पर बुर्ज भी है। इस बाहरी दीवार के अन्दर किला है जो बनावट में त्रिभुजाकार है, अन्दर से किले का मण्डल दो मील से अधिक है।

क़िलेके ऊपर स्वच्छन्द आकाश के समय पूर्वकी ओर मीनार का सुन्दर तथा चित्ताकर्षक पहाड़ी दृश्य दीख पड़ता है। दक्षिण की ओर एक बड़ा भारी मैदान दिखाई देता है जिसके अगले भाग में शहर पूना की आबादी नजर आती है। उत्तर एवं पश्चिम की ओर जहां तक दृष्टि जाती है पर्वत ही पर्वत दिखाई देते हैं यहाँ तक कि आकाश की नीलगँ रंगत पहाड़ी बादलों की रंगत से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलकर एक धुआंधार होजाती है और आबादी नजर नहीं आती इसके पास ही पूर्णधर का किला ठीक उस स्थान पर है जहां से पहाड़ी सिलसिले का रुख दक्षिण की ओर हो जाता है। शिवाजी ने प्रत्येक अवस्था को दृष्टिगोचर करके इन दोनों किलों को बनाया था और जिस समय जयसिंहसे सुलह की थी उस समय दोनों किले उसके हवाले कर दिये थे। देहलीसे लौटकर यद्यपि शेष सबके सब प्रान्त वापिस ले चुका था परन्तु यह दोनों किले अभी मुसलमानों ही के आधीन थे और मुसलमानों की ओरसे वहां राजपूत सेना नियत थी।

इस संग्राम में जो वीरता एवं साहस तन्नाजी तथा उसके साथी जांबाज सिपाहियों से देखनेमें आया उसे एक मराठा कविने पद्य में वर्णन किया है। मराठे इस गीत को बड़े प्रेम व स्नेहसे गातेहैं और महाराष्ट्रका बच्चा बच्चा इस जातीय विजय के इस अद्वितीय गीत से परिचित है। ऐतिहासिक लेखों तथा इस जातीय गीतमें यद्यपि कहीं कहीं विरोध है–परन्तु इस गीत में तैयारी एवं घेरे के हालात ऐसे विस्तार से लिखे हैं और वे सबके सब चित्ताकर्षक एवं उत्तम उत्तम शिक्षाओं से भरे हुये हैं हम उनमें से कुछ आवश्यक और बड़ी बातें यहां लिखते हैं।

इस किले के घेरे के विषय में यह गाथा चली आती है कि जिसके विजय करने का विचार सबसे पहले शिवाजीकी माता जीजीबाई के दिलमें पैदा हुआ था। शिवाजी राजगढ़ में था परन्तु जीजीबाई प्रतापगढ़ में रहा करती थी। एक दिन महल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के ऊपर खड़ी थी कि दूर से सिंहगढ़के बुर्ज दीख पड़े। बस फिर क्या था दिलमें जोश भर आया और सोचने लगी कि जब तक मेरे बेटेके पास यह किला न होगा तब तक राज्य अधूरा है। इस विचारको लेकर महलसे नीचे उतर आई और एक दूत को बुलाकर शिवाजीके पास पत्र भेजा कि शीघ्र आओ तुमको माताजी याद करती हैं।

शिवाजी इस आज्ञा को सुनकर तत्काल प्रतापगढ़ पहुंचा माताजीने जो कि पुत्रकी प्रतीक्षा में नेत्र गाड़े देख रही थी चौसर बिछा दी ताकि शिवाजी जान जाय कि माता जी चौसर खेल रही हैं। शिवाजी आया और बन्दना की। माता उठी पहिले तो राज्योपाधिसे आदर किया। पश्चात मातृ स्नेहसे गोद में लेकर प्यार किया और अपने पास बिठाकर कहा कि आओ बेटा! एक बाजी चौसरकी लगायें। शिवाजीने पूछा कि मुझे इतनी शीघ्रतासे क्यों बुलाया गया शीघ्र बताइये ताकि आज्ञा पालन में देर न हो। माताने होशियारसे प्रश्न को टाल कर कहा कि आओ बेटा, पहिले एक चौसरकी बाजी खेलें। बेटेने आज्ञापालनका धर्म समझा और कहा कि अच्छा। आप पहिले पासा डालें माताने कहा कि नहीं बेटा राजा की विद्यमानता में कोई अगवानी नहीं करसकता क्योंकि यह राजपदवी का अधिकार है। सत्कारके लिये शिवाजी ने पांसा डाला और वह अच्छा न पड़ा तब माताजीने पांसा डाला तो वह अच्छा निकला, शिवाजीने कहा 'माताजी मैं हारा और आप जीतीं जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust. Gangotri

कुछ आज्ञा हो भेंट किया जाय किले माल व धन सब कुछ विद्यमान हैं जो चाहिये लीजिये।'

माताजी–बेटा न तो तेरे किले की आवश्यकता है न माल और धन पर नेत्र जमते हैं न कुछ और ही चाहिये। केवल एक वर मांगती हूँ प्रतिज्ञा करो कि पूर्ण करोगे ?

शिवाजी–माताजी आज्ञा दीजिये।

माताजी–बेटा कमर बांधो तलवार खींचो, यह सिंहगढ़का किला मेरे नेत्रों में खटकताहै उसको जीतो और माता के दिल को शांत करो। जब तक वह किला फतह न करोगे तब तक तुम्हारा राज्य अधूरा है और तुम्हारी शक्ति सन्देह में है। माता जीकी यह बात सुनकर शिवाजी पर वज्रपात हुआ कान्ति उड़ गई उदासीनता छा गई और उसने कहा:—

माताजी बड़ा कठिन वर मांगा यह किसका साहस कि शूरवीर उदयभानु का मुकाबले कर सके। माताजी ! जो कुछ मेरा है वह आप ले सकती हैं परन्तु जो वस्तु मेरी नहीं उसके विषय में मैं कैसे प्रतिज्ञा कर सकता हूँ।

माताजी– अत्यन्त क्रुध्ध होकर) "बेटा ! याद रखो माता का शाप बहुत बुरा होता है तेरा सम्पूर्ण राज्य मेरे शापसे भस्म हो जायगा मुझको वचन दे चुका है उसका पालन करना तेरा परम धर्म है, मुझे बिना सिंहगढ़के और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं।" माता की वक्तृता सुनकर राजा तत्काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठ खड़ा हुआ और आज्ञा दी माताजीके वास्ते पालकी लाओ दोनों बैठकर राजगढ़ को प्रस्थित हुये।

जीजीबाई! तू धन्यहै! तेरा गर्व धन्य है!! तेरी जैसी माता हो तो शिवाजी जैसा पुत्र क्यों न हो? तेरी जैसी छाती दूध पिलानेवाली हो तो शिवाजी जैसा शूरवीर हिन्दुओं के खोये हुए गौरव को दुबारा लाकर अपने मस्तक पर क्यों न राज्यतिलक लगवाये, तेरी जैसी गोद हो तो शिवाजी क्यों न केहरी जैसी शक्ल धारण करे, जीजीबाई तू धन्य है! जिसके बेटे ने धर्मकी रक्षाकी, जातिकी रक्षा की, तेरे एवं अपने लिए यश की धारा बहादी।

हिन्दू इतिहासवेत्ता लिखतेहैं कि शिवाजी भवानी का पूजक था और श्रीमती भवानी देवी ने उसकी पूजा से प्रसन्न होकर उसको वरदान दियाथा। सच पूछो तो शिवाजी की भवानीदेवी जीजीबाई ही सचमुच जीती जागती देवी थी। बुद्धिकी धनी थी और साहसमें भी कम न थी, ऐसी देवी और ऐसा पुजारी धन्य है। देखो जिस चौसरने महाभारत का युद्ध कराकर सम्पूर्ण वीरोंका नाश करा दिया उसी चौसरने इस अवसरमें जीजीबाई की सहायता की।

शिवाजी, उसकी माता दोनों किले में पहुंचे माता तो महल में चलीगई और शिवाजी कचहरी में आया। दरबार को आज्ञा दी और सम्पूर्ण अमीर सूबे शासक तथा मित्रादिकों को भी जो किले में विद्यमान थे माताकी आज्ञा सुनाई। सुनकर सब दम पी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गये किसीने भी इस कामके लिये बीड़ा न उठाया। अन्त को राजा बोला कि कमसे कम एक मनुष्य मेरे राज्य में अवश्य है जो कि इस कामको पूरा करेगा। दूत को बुलाया और आज्ञा दी कि जाओ और तन्नाजी को कहो–"राजा तुमको याद करता है, तन्नाजी चौथे दिन तक यहां पहुंच जायें।"

यह वही तन्नाजी है जो अफजलखां की घटना के समय शिवाजी के साथ था। राजा की आज्ञा पाकर दूत अपने काम पर चल दिया जब तन्नाजी की जागीरमें पहुंचा तो चारों ओर आनन्द और प्रसन्नता के सामान दिखाई दिये। पूछने से ज्ञात हुआ कि तन्ना जी बेटे सायबा के यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कारके लिये तैयारियां हो रही हैं। दूतने सम्पूर्ण बंधुओं एवं सेनाध्यक्षों के सामने तन्नाजीको राजा का आज्ञापत्र दिया। जब यह आज्ञा पत्र पढ़ा गया तो तन्नाजी का चाचा शेलर जी यूँ बोला—

शेलरजी–"तन्नाजी! सिहगढ़ का विजय करना सुगम नहीं है जितने भी मनुष्य उस किले पर चढ़कर गये, जीते नहीं आये और मुझे अच्छा नहीं प्रतीत होता कि तुम अपने पुत्र के विवाह को छोड़कर इस युद्ध के लिये जाओ। मेरा मस्तक ठनकता है तुम जीतेजी नहीं आओगे"।

तन्नाजी–'चाचाजी! आपने यह क्या कहा, क्या मैं क्षत्रिय नहीं हूँ? क्या मैंने क्षत्राणी का दूध नही पिया जो आप मुझे मौत से डराते हैं"? क्षत्रिय को मृत्यु से क्या भय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"तलवारकी मौत लाल शुजाअत का है जौहर। मरते हुए पी लेते हैं आबेदम जौहर रन मर्दोंकी जागीर है और खाना वर। तेगों की चमक छा है और धूप है बिस्तर। दिल अपना कफन और जनाजेट से गनी है। तबूतरवाँ घोड़े व जोशन कफनी है।" तन्नाजी यह कह ही रहा था कि उसका इकलौता बेटा भी सामने से आ निकला उसने पुत्रको पास बुला और धैर्य देकर कहा कि मैं राजाकी सेवा में जाता हूँ और सात दिन का अवकाश लेकर तेरे विवाह के लिये लौट आऊंगा, तत्पश्चात् (मुहासरह) पर जाऊंगा। तन्नाजी ने राजाज्ञा पालन करने के लिये अपने मण्डलकी सम्पूर्ण लड़ने भिड़नें वाली जातियों को एकत्र करने को आज्ञा दी। १२ हजार युवा वीर एकत्रित करके राजगढ़ की ओर चला।

कवि कहता है कि ये १२ सहस्र ग्रामीण तथा बनबासी मनुष्य थे जो कि अपने २ कम्बल कन्धों पर रखकर तथा अपने अपने खेत छोड़कर 'तन्नाजी'के चारों ओर जमा हो गये न तो उनके पास वस्त्र थे और न शस्त्र थे किन्तु उनकी लाठियां ही उनके लिये शस्त्र थे।

जब ग्राम से बाहर निकले तो शकुन बहुत मन्द दिख ; दये वृद्ध शेज़र को सन्देह हो गया। तन्नाजी से कहने लगा कि शकुन उत्तम नहीं लौट जाओ। परन्तु वीर तन्नाजी बोला कि 'चाचा'। मैं शकुन वकुन नहीं जानता मेरा राजा भाग्य का बड़ा धनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस के काम में कोई मन्द शकुन हो नही सकता। आप पीछे हटने का नाम न लो सीधे मार्ग पर पड़ जाओ।

वहां से कूच पर कूच करता हुआ तन्नाजी राजगढ़ के किले के सामने पहुंचा। दूर से जीजीबाई ने जो देखा तो विचार उत्पन्न हुआ कि शायद कोई शत्रु चढ आया है और तत्काल शिवाजीको बुलाया और मुकाबले की आज्ञा दी और शिवाजी ने जो ध्यान से देखा तो माताजी को समझाया कि शत्रु नहीं किन्तु मित्र है। तन्नाजी अपनी। सम्पूर्ण सेनाको द्वारके बाहर ही छोड़कर स्वयं ही किले में प्रविष्ट हुआ और सीधा शिवाजी के पास आया। बन्दनादि कर के बोला कि हे राजन्! मैंने कौनसा अपराध किया है जो मुझे ऐसे समय में बुलाया गया जबकि मैं पुत्र के विवाहमें संलग्न था। क्या कारण है जो मुझपर इतनी सख्ती की गई। शिवाजी ने कहा तन्नाजी! मैंने तुम्हें नहीं बुलाया किन्तु माताजीने याद किया है। उधर माताजी भी वहीं बैठी सुन रही थीं चकित हो गई कि शिवाजी ने यह बला मेरे सिर पर टाल दी, अस्तु देखें मुझे कैसे सफलता होती है। तत्काल अपने मकान में गई और चाँदी की थाली में दीपक जला लाई, इतने में तन्नाजी भी आ पहुंचा थाली उनके सिर पर से घुमाकर बलायें लेने लगी और खुले मस्तक से आशीर्वाद दिया कि बेटा! चिरञ्जीव हो, तन्नाजी ने पगड़ी उतार कर माईजी के पाँव पर रखदी और बोला कि जो आज्ञा हो, किया जाय सेवक उपस्थित है, बाईजी ने कहा मेरे वीर सरदार!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस बुढ़ापे में एक ही अभिलाषा शेष है और वह यह है कि सिंहगढ़ को विजय किया जाय' क्योंकि दिल में इच्छा है कि शिवाजी और तन्नाजी जैसे सपूतों की माता कहाकर भी यदि यह किला हाथ न आया तो शोक रहेगा। तन्नाजी यह शब्द सुनते ही अपने स्थान पर लौट आया। चचा (शेलर) पूछा कि कहो कैसी हुई ? तन्नाजी ने उत्तर दिया कि चचाजी ! क्या हुआ माता जी जीत गई और मैं हार गया। अब मैं तो सीधा सिंहगढ़ को जाता हूँ। शेलर बोला बहुत अच्छा आओ फिर अब खूब मिल कर भोजन करें।

कवि कहता है कि शिवाजी की माता ने स्वयं अपने सामने सम्पूर्ण सेनाको भोजन खिलाया और तन्नाजी को पुरस्कार देकर विदा किया।

इस गीतके अनुसार तन्नाजी के साथ १२ सहस्र सिपाही थे परन्तु इतिहास लिखने वालों ने केवल १००० बताये हैं और यही ठीक प्रतीत होता है।

तन्नाजी ने अपनी सेनाको नाना भागों में विभक्त कर दिया और कई रास्तों से नियत समय पर किले के नीचे पहुंचने की आज्ञा दी।

जब सारे किले के नीचे गये तो तन्नाजी ने एक चादर बिछाकर उस पर १० बीढ़े पान के रख दिये और ललकार कर कहा कि कौनसा वीर अपने प्राणों को संकट में डाल कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किले में जासूसी करने के लिये जा सकता है वह बीड़ा उठाये। यदि वह कृतकार्य हो गया तो बड़ी भारी जागीर मिलेगी और मालामाल कर दिया जायगा परन्तु किसी को साहस न पड़ा कि बीड़ा उठाये। अन्त को तन्नाजी ने स्वयं बीड़ा उठाया और अपना वेष बदल कर विदा हुआ। नाना प्रकार की चालों और ढङ्गों से किले के अन्दर घुस गया और अत्यन्त सुरक्षित स्थान देखकर अपनी सेना में लौट आया। रस्सियों की एक सीढी बनाई गई। तन्नाजी ने फिर पान के बीड़े चादर पर डालकर कहा कि यदि कोई क्षत्रिय का बेटा है तो बीड़ा उठाये और रस्सी पकड़ कर ऊपर चढ़े। सब के सब इधर उधर देखने लगे किसी का साहस न पड़ा कि पान का बीड़ा उठा सके, तन्नाजी को अत्यन्त क्रोध आ गया मारे क्रोध के नेत्र लाल हो गये और कहने लगा कि "उठो शस्त्र उतार दो और स्त्रियों के लँहगे पहन कर घर का रास्ता लो।" बस इतना कहना था कि मराठों के नेत्रों में खून भर आया और सब के सब आगे बढ़ने लगे। अन्त को तन्नाजी ने ५०० आदमी चुने और राजा शिवाजी की दुहाई देकर देवी का नाम लिया और ऊपर चढ़ना आरम्भकर दिया। ५० तो चढ़ गये परन्तु अवशिष्ट मनुष्यों ने जब चढ़ना आरम्भ किया तो सब इकट्ठे ही चढ़ने लगे यहां तक कि रस्सी टूट गई और सबके सब पृथ्वी पर गिर पड़े।

जब तन्नाजी को यह समाचार मिला तो उसे अत्यन्त खेद हुआ और कहने लगा कि न केवल रस्सी टूट गई प्रत्युत सच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूछो तो हमारे जीवन की लड़ी भी समाप्त हो गई। चचा को सम्बोधन करके कहने लगा :—

चचाजी ! मेरे लड़के को प्यार करना। चचा ने समझा कि भतीजे का दिल नर्म हो गया और वह फिर डराने लगा। ५०० मनुष्यों से उदयभानु का मुकाबला करना व्यर्थ है उसके पास १८०० वीर हैं और नृशंसक चन्द्रावली हस्ती भी, इस प्रकार प्राण गवांने से क्या लाभ ? तन्नाजी ने उत्तर दिया चचाजी ! ऐसे उरपोकपने से सारे जीवन के कामों पर कलंक लगता है। क्षत्रिय का पीछे हटना धर्म नहीं जो हो सो हो।

इतिहास लेखक लिखते हैं कि तन्नाजी के साथ ऊपर ३०० मनुष्य चढ़े थे और शेष किसी कारण न चढ़ सके तन्नाजी अपने साथियों को लेकर आगे बढ़ा और जो मिलता गया उसको काटता गया। किले की तमाम सेना में हलचल मच गई मित्र व शत्रु का पहचानना कठिन हो गया। दोनों ओर से तलवारें खिच गईं रक्त की धारा बहने लगी।

जिस सफ़ पै गिरी तेग़ सफ़ाई नज़र आई।
तुलकर जो पड़ी चोट सवाई नज़र आई ॥ १ ॥
ज़रों की बनावट में जुदाई नज़र आई।
न हाथ न बाज़ू न कलाई नज़र आई ॥ २ ॥
बाज़ू पै जो तड़फी न किसी दोष पै सर था।
पहलू पै जो चमकी तो न दिल था न जिगर था ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयभानु मस्त होकर सो रहा था जब उसे आक्रमण का समाचार मिला तो बोला कि हाथी और उसके योद्धा महावत को सामने करदो। जब हाथी सामने आया महावत जो कि पठान था बड़े अहंकार में आकर बोला कौन है जो इस प्रकार किले में घुस कर शोर मचाता है।

तन्नाजी—"राजा शिवाजी का सेवक तन्नाजी सूबेदार" इस पर पठान को अत्यन्त क्रोध आया और कहने लगा :—

पठान—"अरे जाट चला जा, क्यों तेरी बुद्धि पर पत्थर पड़े हैं बाप और दादा जो काम करते आये वही तेरा काम है चलो हाथ में खुरपा लो और कंधे पर रस्सी तथा कम्बल डाल कर जङ्गल से घास लाओ और बनिये की दूकान पर बेचो ये शस्त्र तेरे लिये व्यर्थ हैं इनको फेंक दे।"

तन्नाजी—"अरे पेंजे ! क्यों अपने बाप दादा के काम पर बट्टा लगाता है जाओ और खेत से सन काट लाओ और उसके बोरिये बनाकर अपनी औरत को दो और कहो कि कुछ धान लाये ताकि वो उसके छिलके से रोटी बनाये और चावलों को निकाल कर बेचे। जाओ तलवार को रखदो, क्योंकि तुझे इसके पकड़ने का शऊर नहीं।

इस प्रकार परस्पर की वंश परम्परा का वर्णन करके दोनों वीर सामने हुए। पठान उन्मत्त हस्ती पर सवार था और मराठा अपने घोड़े पर। सबसे पहला वार पठान ने किया जो ऐसे कड़े हाथों का था जो पत्थर को चीर कर पार निकल गया परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तन्नाजी बच गया। पठान ने फिर दूसरा वार किया। परन्तु वह भी खाली गया अन्त को तन्नाजी घोड़े से उछला और हाथी के समीप आकर उसकी सूंड पर वार करने लगा हाथी घायल होकर गिर पड़ा साथ ही उसका महावतभी पृथ्वी पर गिरा और चल दिया। इस प्रकार उदयभानु के सम्पूर्ण अफसर और उसके बेटे बारी बारी से तन्नाजी के सामने आये और मारे गये। जब उदयभानु ने देखा कि कुछ पेश नहीं जाती तो किले की सम्पूर्ण रुई एवं तेल को निकलवा कर आग लगा दी। प्रकाश हो जाने पर राजपूत को पता लगा कि तन्नाजी की सेना बहुत थोड़ी है। बस फिर क्या था शेर के समान गरजा और तन्नाजी के सामने आ डटा। तन्नाजी की तारीफ करके उसको फुसलाने लगा, तन्ना जी नमकहराम न था उसने तुर्की बतुर्की जवाब दिया। यदि लड़ाई का साहस नहीं तो शस्त्र छोड़ों और गले में पगड़ी डालकर मेरे साथ चलो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि शिवाजी तुमसे अच्छी तरह से पेश आयेगा इतनी वार्तालाप के पश्चात् दोनों ओर से वार होने लगे तन्नाजी खेत रहा अर्थात मारा गया। तन्नाजी को मार कर उदयभानु पीछे हटने लगा कि बस शेर मार लिया। तुम सब लोग बाकी सबका काम तमाम करो इतने में तन्नाजी का चचा शेलरजा तन्नाजी की तलवार लेकर आगे बढ़ा और बोला कि कहाँ जाता है तन्नाजी मर गया तो क्या सारा महाराष्ट्र मर गया जरा सामने तो आ और देख मरे हुये सरदार की तलवार क्या क्या काम करती है। इतना कहते ही उदयभानु पर झपट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust. eGangotri

पड़ा और उदयभानु शेलर के हाथ से मारा गया। राजपूतों की सारी सेना इकट्ठी होकर तन्नाजी के साथियों पर गिर पड़ी। इतने में तन्नाजी का भाई सूर्याजी किसी न किसी प्रकार से अपने साथियों सहित किले में घुस आया और हर हर महादेव की ध्वनि से मराठों का रक्त उबलने लगा। फिर क्या था ? राजपूत मराठे लड़े और खूब लड़े अन्त को मराठों की विजय हुई। बचे-खुचे राजपूत किला छोड़ भाग गये। किला लेकर मराठों ने किले की छत से तोपें चलाईं जिससे कि शिवाजी को किले के मिल जाने का शुभ समाचार मिला परन्तु जिस समय यह पता लगा कि तन्नाजी मारा गया तो अत्यन्त चिन्तातुर हो कहने लगा कि हा शोक ! सिंहगढ़ तो हाथ आ गया परन्तु सिंह मारा गया।

शिवाजी ने इस विजय की प्रसन्नता में अपनी प्रथा के विरुद्ध सम्पूर्ण सिपाहियों को चाँदी के पुरस्कार दिये, सूर्याजी को इस किले का अध्यक्ष नियत किया जिसने कि एक मास के अन्दर पूर्णधर के किले को विजय कर लिया यह कार्य्यवाही मार्च सन् १६६१ में हुई।

उधर कोंकन में म्हाली किले के घेरे में मुरारपन्त को बहुत हानी उठानी पड़ी परन्तु अन्त को दो मास के पश्चात् किला हाथ आ गया।

वर्षाऋतु के समाप्त होते ही ३ अक्टूबर सन् १६७० को शिवाजी १५०० सिपाहियों के साथ सूरत पर जा पड़ा और तीन दिन तक उसे लूटता रहा। तीन दिन के पश्चात् वह अपनी सेना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को लेकर सल्हेरा के मार्ग से अपने इलाके को लौट गया। और जाता हुआ शहर वालों के नाम एक विज्ञापन दे गया, जिसका विषय यह था कि यदि तुम इस लूट से बचना चाहते हो तो १२००००० बारह लाख रुपया वार्षिक देना स्वीकार करो।

शिवाजी कचन बंचन से अभी निकल ही रहा था। उसे पता लगा कि दाऊदखाँ ५००० की सेना से पीछा कर रहा है। जिस मार्ग से शिवाजी नासिक के पार जाना चाहता था उस मार्ग में दाऊदखाँ की सेना अवरोधक हो गई।

शिवाजी ने अपनी सेना को चार भागों में विभक्त किया एक भाग ने आगे होकर लड़ाई आरम्भ की। बाकी दो भाग पीछे से ललकारते रहे और चौथा भाग जिसके पास कोष था चुपके से मुग़लिया सेना के बराबर को निकल कर अपने मार्ग में पड़ गया जहाँ से सीधा कोंकन को चला गया। शिवाजी ने दाऊदखाँ का मुकाबला किया और उसको भगा दिया। शत्रु की सेना में मरहठों का समूह एक स्त्री के आधीन युद्ध कर रहा था। वह मरहठा स्त्री शिवाजी के हाथ पड़ गई शिवाजी ने बड़े आदर व सत्कार के साथ अच्छे पुरस्कारों सहित उसको अपने घर पहुंचा दिया।

दिसम्बर मास में प्रतापराव को आज्ञा मिली कि खानदेश पर धावा करे खानदेश का इलाका बड़ा आबाद और धनवान् था। प्रतापराव ने बड़े बड़े नगरों को निष्कण्टक किया और मार्ग में ग्रामीणों से इस प्रकार के प्रतिज्ञापत्र लिखाये कि वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रति वर्ष पैदावार का चतुर्थांश शिवाजी को दिया करेंगे, जिसके बदले में शिवाजी की ओर उनके रक्षा करनेकी प्रतिज्ञाय हुईं। इस प्रकार से मुगलों का सूबा खानदेश भी शिवाजी के अधीन हो गया उधर जब औरङ्गजेब को यह समाचार मिला तो उसने राजा जसवन्तसिंह को लौटा दिया और ४०००० सेना के साथ महावतखां को शिवाजी से सामना करने के लिये भेजा औरङ्गजेब को सन्देह था कि सुलतान मुअज्जम शिवाजी से मेल रखना है और इसमें कुछभी सन्देह नहीं कि यदि सचमुच यह अवसर शिवाजी और जसवन्तसिंहजी के भी मध्य में हो तो भी जसवन्तसिंह जी ने शिवाजी को कष्ट देने के लिये उत्साह नहीं बढ़ाया।

महावतखाँ ने दक्षिण में पहुंचकर तत्काल ही किलों को घेरना आरम्भ कर दिया परन्तु १६७२ की वर्षा ऋतु तक औंडा और पटा केवल दो ही किले वापिस ले सका। अन्त को सेना के दो भाग होगये एक ने दिलेरखांकी आज्ञानुसार चाकन पर धावा किया और दूसरे ने इखलासखां के आज्ञानुसार साल्हेरको जा घेरा। शिवाजी सल्हरा को अपने हाथसे देना नहीं चाहता था इसलिये उसने प्रतापराव और पन्त दोनोंको आज्ञा दी कि २०००० सेना से लड़ाई करें और किले को बचावें क्योंकि शिवाजी को यह समाचार मिल चुका था कि किलों में सामग्री काफी नहीं है और किलोंके पास पठानोंने २००० घोड़े काट डाले थे। प्रतापराव जब सेनाको लेकर आगे बढ़ा तो उसने देखा कि इख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लासखां बड़े उत्साह व साहस से आक्रमण किये चला आता है प्रतापराव ठहर गया और जिस समय इख़लासखाँ आगे बढ़ा तो प्रतापरावने भागना आरम्भ कर दिया। मराठोंको भागता हुआ देखकर मुग़ल पीछा करने लगे और छिन्न भिन्न हो गये बस फिर क्या था प्रतापराव जी ने उलटकर लड़ाई की मुग़लों पर अत्यन्त ही तबाही पड़ी। बहुत सी मार काट हुई २२ अफ़सर मारे गये और सहस्रों मनुष्य कट गये कई अध्यक्ष घायल हुए और पकड़े गये। इस महती विजयका फल यह हुआ कि मुगलिया सेना साल्हेर दुर्गको छोड़ औरङ्गाबाद की ओर हट गई। इस वर्षाऋतु में शिवाजी छोटी २ विजय करता रहा ताकि सम्पूर्ण दक्षिणभर में एक ही राज्य हो जाय। पुर्तगाल वालों से भी कई बार थोड़ा २ मुकाबला होता रहा जिसमें किसी पक्षकी हानि नहीं हुई। अङ्ग रेज भी इस अवसर में प्रतिज्ञा विषयक पत्र व्यवहार करते रहे।

उधर मुगलियां दरबार ने इख़लासखां की पराज्य पर महावतखां और खान मुअज्जम दोनोंको दक्षिणसे बुला लिया और उसके स्थान पर खानजहां दक्षिणका सूबेदार नियत किया गया। खानजहाँ ने यह उचित समझा कि मराठों पर हमले न किये जांय। किन्तु घाटों और मार्गोंको रोककर उन्हें तंग किया जाय और मुगलिया मण्डलको सुरक्षित किया जाय। तथापि उसने एक बहादुरगढ़ नामी किला बनाया परन्तु उसे यह क्या मालूम था कि मराठों को घाटों व दरों से आनेकी आवश्यकता नही क्योंकि वह इस देश की ईंट २ से परिचित से थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहानखां जब इस प्रकार संलग्न था तो शिवाजी अवसर पाकर गोलकुंडा में जा निकला और वहाँ से बहुत सा माल व धन लाया। इस अवसर में २४ नवम्बर सन् १६८० को बीजापुराधीश अलीआदिलशाह द्वितीयकी मृत्यु हो गई। और इस के इलाके में बहुत अप्रबन्ध होगया। इस अवसर पर शिवाजी ने बीजापुर की ओर धावा करने का इरादा कर लिया। तथापि मार्च सन् १६७३ में विशालगढ़ के पास एक बड़ी सेना एकत्रित की। इस सेना के एक भाग ने पनाला के किलेको लौटा लिया परन्तु वास्तविक इच्छा यह थी कि हुगलीनगर जोकि उन दिनों बड़ा धनाढ्य था लूटा जाय। इस नगरको लूटने से मराठों को इतना धन मिला कि इससे पहिले कभी नहीं मिला था। अंग्रेज व्यापारियोंको भी इसमें बहुत सी हानि हुई। एक बार पहले भी राजपुर के स्थान पर लुट चुके थे। अब दूसरी बार हुगली में लुट गये।

शिवाजी ने अपने सामुद्रिक बेड़े से बीजापुर के उस मण्डल को तंग करना आरम्भ किया जो समुद्रके तट पर था और भीतरी मण्डलमें देशमुखों को राज-विद्रोहके लिये तैयार करके मुसलमानी थाने उठवा दिये।

राजा बदनूर ने भी हुगली लूट से भयभीत होकर शिवाजी को कर देना स्वीकार किया। मई मास से सेना के एक भाग ने 'परली' के किलेको विजय किया और सितम्बरके आरम्भमें सितारा भी प्राप्त हो गया और चन्दन पैंडूगढ़ तथा नन्दीगढ़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि किले भी सर हो गये। प्रतापराव ने अब्दुलकरीम बीजापुराध्यक्ष को इतना सताया कि उसे कुछ समय मांगना पड़ा और जिन शर्तों पर उसने सुलह की थी उन्हें शिवाजी ने पसन्द न किया और प्रतापराव से शिवाजी अप्रसन्न होगया।

प्रतापराव इस अप्रसन्नता के कारण बरार पांयघाट के प्रान्तों को चला गया जिससे फिर अब्दुलकरीम को साहस हुआ और उसने बहुतसी सेना एकत्रित करके पनाला को फिर विजय करना चाहा।

फरवरी सन् १६७३ में यह धावा आरम्भ हुआ अब्दुलकरीम की सेना किले के पास पहुंची ही थी कि प्रतापराव अपनी सेना सहित आ निकला। मालूम होने पर शिवाजी ने प्रतापराव को लिख भेजा कि जब तक तू मुसलमानी सेना का विध्वंस करके बहुत सी लूट लेकर न आवेगा तबतक मैं तेरा मुख देखना नहीं चाहता। प्रतापराव ने इस अनादर को दूर करने के लिये एक महती सेना के साथ बीजापुर पर धावा कर दिया। यद्यपि बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु मारा गया और उसकी सेना हताश होकर भागने लगी। मुसलमान सेना मराठा सेना की समाप्ति समझ कर पीछा करने लगी इतने में हंसाजी मोहिता पांच हजार सिपाही लेकर आन पड़ा और मुसलमानों को पीछा करने के स्थान प्राण बचाकर भागना पड़ा बेचारे अब्दुलकरीम को जीती हुई लड़ाई हारनी पड़ी और अपना सा मुँह लेकर बीजापुर चल दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी को प्रतापराव की मृत्यु से अत्यन्त खेद हुआ उसके बेटे को बहुत सी जागीर दी और उसकी बेटी से अपने बेटे राजा का विवाह करके राज-वंश से सम्बन्ध कर दिया। हंसाजी के काम से शिवाजी प्रसन्न हुआ और उसे हम्बीरराव की पदवी देकर सेनापति बनाया। इस प्रकार से लगभग सम्पूर्ण दक्षिण अपने हाथों में लेकर शिवाजी ने एक बड़ा यज्ञ रचा और जून सन् १६७६ तदनुसार १३ ज्येष्ठ संवत् १७३१ विक्रमी को सिंहासन पर बैठा। अपना सिक्का तो चला ही चुका था अब संवत् भी जारी किया इस अवसर पर अंगरेजों से भी प्रतिज्ञायें की गईं। इस वर्ष उसके सिंहासनारूढ़ होने के पन्द्रह दिन पश्चात् उसकी माता का भी देहान्त हो गया। अपने बेटे को सिंहासन पर बैठाकर लगभग सारे दक्षिण का शासक बनाकर एवं अपनी जाति को उच्च गौरव की सीढ़ी पर डाल कर जीजीबाई की आत्मा ने भी इस शरीर को छोड़ दिया। जिस शरीर से उसने शिवाजी क ; न किया था मानो उसका उद्देश्य समाप्त हो गया। अब यह महान् आत्मा किसी नये काम के लिये इस शरीर को त्याग गया। सन् १६७५ व ७६ में भी मुगलों से युद्ध रहा।

मुगलों का अध्यक्ष यद्यपि साहस से काम करता रहा तथापि शिवाजी और हम्बीर के साथ कुछ चारा न चला। शिवाजी ने कई नये किले भी प्राप्त किये। हम्बीर ने नरबदा एवं गोदावरी के पार जाकर मुगलिया-मण्डल को निष्कण्टक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया शिवाजी ने 'मुनवर' और 'पनाला' की भूमि को स्वाधीन करके उसके रक्षार्थ कई एक किले बनाये।

कर्नाटक पर धावा

दक्षिण का संक्षिप्त इतिहास हमने भूमिका में लिखा था इसके पश्चात् शिवाजी का वृत्तान्त लिखते हुये हमने दर्शाया था कि शिवाजी ने कर्नाटक का मण्डल जीत लिया था और वही मण्डल बीजापुराधीश की ओर से पुरस्कार में मिल गया था। सन् १६७६ तक हमने शिवाजी के कारनामों का वर्णन किया।

अब शिवाजी दक्षिण का एक बलवान् सम्राट् हो गया। अब शिवाजी को याद आया कि अपने पिता की जायदाद में से उसे कुछ न मिला और दक्षिण में हिन्दू राज्य को सुदृढ़ करने के लिये अत्यावश्यक है कि समस्त दक्षिण इस राजधानी में मिलाया जाय। इस लिये उसने पूर्वीय दक्षिण की ओर मुख किया। परन्तु पूर्व इसके कर्नाटक के वृत्तान्त लिखें हम यह दर्शाना उचित समझते हैं कि देहली, बीजापुर एवं गोलगुण्डा की क्या दशा थी। औरङ्गजेब का सदैव यह शोक बना रहा कि सारा दक्षिण यवन राज्य में मिल जाय। चाहे छोटे २ रजवाड़ों को विध्वंस करना पड़े परन्तु दक्षिण अवश्य हाथ आये। यदि औरङ्गजेब से सुलह करके बीजापुर एवं गोलकुण्डा ही ठीक रहते तो भी इसमें सन्देह न था कि सम्पूर्ण दक्षिण नाम मात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से तो उसकी राजधानी में आजाता। अथवा औरङ्गजेब ही सच्चे हृदय से बीजापुर एवं गोलकुण्डे से मेल करके शिवाजी को आधीन करने का यत्न करता तो भी शायद कृतकार्य होजाता, परन्तु उसे तो यह इच्छा रही कि ये तीनो शक्तियाँ क्षीण हो जायं और सारा दक्षिण यवन राज्य में मिल जाय। वह इन शक्तियों को एक दूसरे से लड़ाने आदि में अपनी बड़ी सफलता समझता था, जिसका फल यह हुआ कि किसी को भी उसकी बात अथवा नीति पर विश्वास न रहा ये तीनों राज्य जहाँ औरङ्गजेब का मुकाबला करते थे वहाँ परस्पर भी लड़ते झगड़ते रहते थे। इस झंझट में यदि चारों में से किसी ने लाभ उठाया तो वह केवल शिवाजी था। सन् १६७२ में अली आदिलशाह बीजापुराधीश मर गया। उसका पुत्र अभी ५ वर्ष का बालक था। सबने मिलकर ख्वासखाँ को प्रबन्धकर्त्ता स्वीकार एवं नियत किया। परन्तु कुछ काल पीछे अब्दुलकरीम ने जो कि बीजापुर राज्य का एक मान्य पुरुष था और जिसने लोगों से मिल मिलाकर ख्वासखाँ को मरवा डाला था स्वयं उसका स्थान संभाल लिया। यह महाशय दिलेरखाँ मुग़लिया सेनाध्यक्ष का सम्बन्धी था इस लिये मुग़लिया राज्य से बिगाड़ना नहीं चाहाता था। ख्वासखाँ इसलिये मारा गया था कि उसने मुग़लों की आधीनता स्वीकार करली थी और आदिलशाह की पुत्री 'बादशाहबीबी' को औरङ्गजेब के पुत्र से विवाह देने की प्रतिज्ञा करली थी, इसलिये अब्दुलकरीम इस समय विचित्र शिकंजे में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था भीतर मुगलों का शत्रु था और ऊपर से दिलेरखाँ के कारण उनसे बिगाड़ लेनेको भी साहस न था। इधर गोलकुण्डे में भी सन् १६७२ में कुतुबशाह के मरने पर कुछ २ अप्रबन्ध हो गया उसका जमाई अबदुसेन गद्दी पर बैठा, परन्तु वास्तविक बल और सारा अधिकार मदनपन्तऋ तथा खानापन्त दोनों ब्राह्मणों के हाथ में था शिवाजीने इस अवसर को उत्तम जाना और कर्नाटक के धावे की तैयारियाँ करने लगा। याद रखना चाहिये कि शिवाजीका एक और भाई था जिसका नाम व्यंकोजी उपनाम एकोजी था और वह अपने पिता के राज्यका स्वामी था। शाहजीके विश्वासपात्राधिकारियों में से रघुनाथनारायण नामी उसके पास था। रघुनाथ नारायण और काकोजी की परस्पर खटपट हो गई, कुछ काल तो रघुनाथ गोलकुण्डा में अबदुसेन के पास रह और उसने मदनपन्त से सम्बन्ध पैदा किया पश्चात शिवाजी के पास चला आया। उसका एक भाई सोमपन्त नामी शिवाजी के दरबार में प्रधान पद पर नियत था इसके अलावा शिवाजी जानता था कि उसका पिता रघुनाथ का सत्कार करता है और उसके वंश के पुराने एवं विश्वासपात्र कर्मचारियों में से था शिवाजी ने रघुनाथ नारायण का उचित सत्कार किया और उसे प्रधान वजीर की पदवी दी। इसने शिवाजी को सबसे पहले कर्नाटककी ओर जाने की सम्मति दी। इसकी सम्मति से शिवाजी ने सबसे पहले खानजहां से गांठी, कुछ रुपया उसकी भेंट किया और उससे प्रतिज्ञा ली कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह शिवाजी के राज्य पर हस्तक्षेप नहीं करेगा, फिर उसने अपने राज्य का प्रबन्ध किया, चुने २ कर्मचारियों को अच्छे २ स्थानों पर नियत करके सारा मण्डल मुरारपन्त के हवाले किया और सन् १६७७ के आरम्भ में दक्षिण की ओर चल दिया।

जब हैदराबाद समीप रह गया तो मदनपन्त स्वयं शिवाजी की अगवानी के वास्ते आया और बड़े आदर व सत्कार से उसे अपनी राजधानी में ले गया। अन्त को शिवाजी और गोलकुण्डाधीश के मध्य में यह प्रतिज्ञा हुई कि कर्नाटक में जितनी भी शाहजी की जागीर है उसके अतिरिक्त जितनी भूमि शिवाजी के हाथ आये वह शिवाजी और गोलकुन्डा के बीच में बांट दी जाय और यदि बीजापुर का दरबार अब्दुलकरीम को निकाल कर उसके स्थान मदनपन्त के भाई को नियत कर दे तो उसको भी उसमें कुछ भाग दिया जाय। हालांकि सारा कर्नाटक वास्तव में बीजापुर का था अपनी जागीर के बिना न तो कुछ शिवाजी का था और न गोलकुण्डाधीश का। ये भी परस्पर प्रतिज्ञा हुई कि दूसरों के मुकाबले में भी शिवाजी और गोलकुण्डाधीश एक दूसरे की सहायता करेंगे। इस प्रकार से यवन रजवाड़े गोलकुण्डा को दम देकर शिवाजी मार्च मास में कृष्ण नदी से पार उतरा कुछ दिन तो तीर्थ-यात्रा में लगाये और दानादि किया। तत्पश्चात् कर्नाटक में जा दाखिल हुआ। मई के प्रथम सप्ताह में मद्रास से निकला और जिजी प्रान्त में पहुंचा, जोकि उस समय बीजापुर के आधीन था। अमीरखाँ के बेटों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने जो उस राज्य के शासक थे स्वयं ही अपना इलाका शिवाजी के हवाले कर दिया। शिवाजी ने वही महाराष्ट्र का शासन और वही प्रबन्ध आदि जारी करके रावानी का हवलदार नियत किया और आगे बढ़ा। बीजापुर के एक अधिकारी शेरखां ने पांच हज़ार सिपाहियों से उसका मुकाबला किया परन्तु परास्त होकर कैद हो गया। इस अवसर में सेना के बाकी हिस्सों ने जिनको कि शिवाजी पीछे छोड़ आया था बेलूर पर धावा कर दिया। वह घेरा पांच दिसम्बर तक रहा अन्तको किला हाथ आ गया। इधर शिवाजीने अपने भाई व्यंकोजी से तिरुमलवाड़ी के स्थान पर मुलाक़ात की, और यह अभिलाषा प्रकट की, कि दोनों भाई बड़े उत्साह से मिल। शिवाजी पिताकी जायदाद में से आधा भाग मांगता था और व्यंको जी देता न था। निर्णय कुछ न हुआ और व्यंको जी तनजौर को लौट गया शिवाजीकी सेना विजय पर विजय प्राप्त करती गई। शिवाजी लगातार अपने भाईको कहता गया कि उचित है कि सुलह कर ली जाय क्योंकि मैं भूमि की इच्छा से यहाँ नहीं आया हूं किन्तु अपने पिता की जायदाद का छोड़ना उचित नहीं समझता। व्यंकोजी ने कुछ न सुनी इस अवसर में शिवाजी ने शाहजी के सम्पूर्ण प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया शिवाजी इन विजयों ही में संलग्न था कि उत्तरीय दक्षिणी दशाओं ने कुछ और ही पलटा खाया। औरङ्गजेब को जब यह समाचार मिला कि ख़ानजहाँ ने शिवाजी से रुपया ले लिया है और शिवाजी ने गोलकुण्डा से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेल कर लिया है तो उसने ख़ानजहांको वापिस बुला लिया और दिलेरखांको आज्ञा दी कि अब्दुलकरीम बीजापुरी के साथ मिल कर गोलकुण्डे पर धावा करे।

मनदपन्त ने खूब वीरता से मुकाबला किया जिसका फल यह हुआ कि बीजापुरकी सेना पराजित हुई। इस पराजय के पश्चात् अब्दुलकरीम बीमार होगया और जनवरी सन् १६७० में मर गया, दिलेरखां ने मसऊदखां को उसके स्थान पर नियत किया, जिसने दिलेरखांको बहुत सा रुपया देने की प्रतिज्ञा की और यह भी कहा कि वह कभी शिवाजी से सुलह न करेगा। जब अब्दुलकरीम मर गया तो सेना का बहुत कुछ वेतन बाकी था और बहुत सी सेना इसी कारण से बन्द होगई।

शिवाजी को जब इन घटनाओं की खबर पहुंची तो रघुनाथ-नारायण और सेनापति हम्बीरराव को कर्नाटक में छोड़ स्वयं लौट आया और मार्गमें भी बिजय करता आया। कई क़िले उस समय भी उसको मिले जब 'तगु'ल' पहुंचा तो पता लगा कि कर्नाटक में व्यंकोजी ने उसकी सेना पर धावा कर दिया परन्तु बहुत सी हानि उठाकर पीछे हट गया। यह समाचार सुनकर शिवाजी ने व्यंकोजी को एक पत्र लिखा, जिसमें इस बात पर अफसोस किया कि तुम्हारे तरीके ने मुझे धावा करने के लिए विवश कर दिया। उसमें यह भी लिखा कि मुझे इन बहुमूल्य जातीय वीरों के खोये जाने पर अत्यन्त कष्ट है जो मेरी और तुम्हारी लड़ाई में मारे जा रहे हैं। हमें मेल करना चाहिये ताकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत्रु पर विजय पा सकें। अन्त को इस चिट्ठी ने व्यंकोजी का दिल पिघला दिया। इसके बिना उसे यह भी परीक्षा हो चुकी थी कि शिवाजी से मुकाबला करना व्यर्थ है। उसका भाग्य चढ़ा हुआ है अन्त को पिता का धन एवं भूमि आदि देना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से विजयशील शिवाजी १८ मास के पश्चात् अपने रायगढ़ के किले में पहुंच गया। उधर व्यंकोजी के साथ सुलह हो जाने से हम्बीरराव वापिस चला और समीप पहुंच कर उसने जनार्दनपन्त की सम्मति से बीजापुर की सेना पर धावा किया। इसमें शत्रु की बहुत हानि हुई, पांच सौ घोड़े, पाँच हाथी और शत्रु का सेनाध्यक्ष उनके हाथ आया। बेचारा बीजापुर न इधर का रहा न उधर का। मुग़लिया सहायता के भरोसे पर शिवाजी से लड़ाई आरम्भ की थी उधर मुग़लिया सहायता की यह दशा हुई कि जिस समय औरङ्गजेब को उस प्रबन्ध का समाचार पहुंचा जोकि दिलेरखाँ ने मसऊदखां से किया था तो उसने इस प्रबन्ध को अस्वीकार किया और दिलेरखाँ को आज्ञा दी कि वह बीजापुर की सेना को अवशिष्ट वेतन देकर आधीन करले और बीजापुर पर राजकीय अधिकार जमाये अन्त को मसऊदखाँ शिवाजी से सहायता के लिये प्रार्थी हुआ शिवाजी बहुत सेना लेकर उसकी सहायता को बढ़ा इस धावे में शिवाजी ने दिल खोलकर मुग़लिया मण्डल को लूटा; यहां तक कि लुटवा २ कर गोदावरी पार निकल गया। स्वयं सुलतान मुअज्जम जिसको अभी सूबेदार दक्षिण नियत करके भेजा था। औरङ्ग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाद में विद्यमान था उसके विद्यमान होने पर भी शिवाजी की सेना तीन दिन तक निश्चिन्त होकर औरङ्गाबादको लूटती रही यहां तक कि उन्होंने अत्यन्त क्रुद्ध होकर मुसलमानोंके धार्मिक स्थानोंको भी न छोड़ा। शिवाजी के तमाम जीवन में यह पहला अवसर है कि जहां उसने एक धार्मिक पुजारी को कष्ट दिया, हम आगे चलकर मुसलमान इतिहासवेत्ताओं की साक्षीसे सिद्ध करेंगे कि शिवाजी धार्मिक स्थानों को अत्यन्त पवित्र समझता था। इस प्रकार के कामोंसे मुगलोंको अत्यन्त क्रोध आया और चारों ओर से मुगलिया सेनाने शिवाजीको घेर लिया शिवाजी का एक अफसर सदूजी मारा गया और उसकी सेना में घबराहट फैल गई परन्तु समय पर धैर्य रखना शिवाजी जैसे वीरों ही का काम है शिवाजीने अत्यन्त साहस से अपने प्राणों को संकट में डालकर धावा किया और अपनी सेना को दिखा दिया कि शिवाजी आवश्यकता के समय किस प्रकार से तलवार चला सकता है। फिर क्या था मराठों की तलवार बिजली के समान चमकने लगी और धुआँधार हो गया मराठे अपने सरदारको लेकर मुगलिया सेनाके बीच में से निकल गये। परन्तु अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि मुगलिया ने एकत्रित होकर राजा किशनसिंह (जो राजा जयसिंह का पोता था) के आज्ञानुसार धावा किया; यहां तक कि फिर शत्रु ने चारों ओर से घेर लिया और शिवाजीका रास्ता बन्द होगया। जब देखा कि इतनी बड़ी सेना से मुकाबला करना व्यर्थ है तो शिवाजी एक गुप्तचर को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ लेकर एक दुसरे रास्ते से निकल गया जो कि मुग़लों को मालूम न था और वह कुशलता पूर्वक पटना पहुंच गया वहाँ पहुंच कर उसे मसऊदखाँ का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि दिलेरखाँ क़िले की दीवारों के इतना समीप आगया है यदि सहायता न करोगे तो सब काम बिगड़ जायगा। शिवाजी इस चिट्ठी को पढ़कर फिर बीजापुर की ओर प्रस्थित हुआ। अभी थोड़ी ही दूर गया था कि समाचार मिला कि उसका बड़ा बेटा 'सम्भाजी' दिलेरखाँ से जा मिला। हम्बीरराव को तो बीजापुर की ओर भेजा और स्वयं सम्भाजी को लाने के लिये 'पनाला' की ओर आया। दिलेरखाँ ने अपनी सेना का एक भाग सम्भाजी को देकर उसे मराठों का राजा प्रसिद्ध कर दिया और उसे भूपाल-गढ़ पर धावा करने के लिये आज्ञा दी जिसको उसने ले लिया उधर हम्बीरराव ने दिलेरखाँ को तङ्ग करना आरम्भ किया अन्दर किले वाले भी बड़े धैर्य से डटे रहे हम्बीरराव ने दिलेरखाँ के सामग्री पहुंचाने के साधनों को काट डाला और उसको इतना तङ्ग किया कि उससे लाचार होकर किले को छोड़ तत्सम्बन्धी प्रान्तों को लूटना आरम्भ किया दिलेरखाँ कृष्णा पार होकर कर्नाटक को उजाड़ने लगा था। कि जनार्दन पन्त भी पहुंच गया और उसने दिलेरखाँ पर धावा करके उसे परास्त कर दिया।

इतने में जब औरङ्गजेब को दिलेरखाँ के काम मालूम हुए तो उसने सुलतान मुअज्जम और दिलेरखाँ दोनों को बुला लिया और उनकी जगह खानजहां को सुबेदार नियत करके भेजा सम्भाजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के विषय में औरङ्गजेब ने यह आज्ञा दी कि उसको कैद करके दरबार में भेजा जाय। परन्तु सम्भाजी किसी न किसी प्रकार से भाग निकला और शिवाजी के हाथ आ गया जिसने कि उसको पनाला के किले में कैद कर दिया ताकि कैद में उसका जोश शान्त हो जाय और अपने किये पर लज्जित हो।

मृत्यु

सन् १६८० शुरू हो गया शिवाजी बीजापुर के दरबार में अहद करने में संलग्न है सम्पूर्ण विजित भूमि अपने पिता की जागीर तथा तंजौर, गोपाल व बिलारी आदि प्रान्तों का स्वामी है। बीजापुराधीश ने लाचार होकर स्वीकार कर लिया कि यह सम्पूर्ण राज्य शिवाजी का समझा जाय। शिवाजी इन तमाम विजयों से आनन्द में मग्न हैं। उसको क्या मालूम कि उसके जीवन की घड़ी सम्पूर्ण हो चुकी उसकी आत्मा अपने काम समाप्त कर चुकी, अब उसको इस शरीर के छोड़ने की इच्छा है शिवाजी अभी राज्य-प्रबन्ध के ही चिन्तन में था कि मार्च सन् १६८० के अन्तिम दिनों में उसके घुटनों में सूजन पैदा हो गई यहाँ तक कि ज्वर भी आना आरम्भ होगया जिससे कि सात दिनमें ही शिवाजी इस संसारसे कूंच कर गया। शिवाजी की आत्मा ने ४ अप्रेल सन् १६८० को इस शरीर को छोड़ा। सच है मृत्यु सबसे बलवान् है वह मनुष्य जो लगभग ४० वर्ष तक भारतवर्ष के कई एक बादशाहों शूरवीरों और जवांमर्दों से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़ता रहा, जिसने लाखों मनुष्यों का मुकाबला किया जिसने साहसके सामने पर्वत, नाला, नदी, समुद्र, चोटी व घाटी, जंगल शेर व हाथी आदि कुछ न समझा था वह अब क्षण भर में मृत्यु का ग्रास हुआ। बीमारी ने उसे सात दिन में ही ऐसा लाचार कर दिया कि उसकी आत्माको वह शरीर छोड़ना पड़ा। जिस शरीर से उसने बड़े बड़े काम किए थे जिनसे कि भारतका इतिहास भर रहा है अफसोस कि वह शिवाजी अपनी थोड़ी ही सी अवस्था में कूंच कर गया और अपने देशियों को अपने से विमुक्त कर गया, कुछ आश्चर्य न था कि शिवाजी कुछ और दिन विमुक्त कर गया, कुछ आश्चयन था कि शिवाजी कुछ और दिन जीता रहता तो यवन राज्य की इमारत को और भी ठोकर लगाता परन्तु मृत्यु किसी आवश्कीय कार्य की प्रतीक्षा नहीं करती जगत् में यदि कोई ऐसा समय है कि जिससे किञ्चत मात्र भी समय नहीं मिल सकता तो वह मृत्यु का समय है शिवाजी के इस अवस्था में मर जाने का उसकी जाति को जितना भी शोक हो थोड़ा है।

शिवाजी का चालचलन

शिवाजी मर गया और मरना सच है परन्तु इसमें सन्देह नही कि शिवाजी जैसी महान् आत्मायें बहुत कम होती हैं। ऐसा लड़ाका, ऐसा वीर और शत्रु के मुकाबले में निर्दयी जिसने जातीय स्वतन्त्रता की लड़ाई में सहस्रों घर बेचिराग कर दिये, सैकड़ों ग्राम उजाड़ दिये, सैकड़ों माताओं को निस्सन्तान, सैकड़ों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रियों को विधवा, कई एक बच्चों को अनाथ कर दिया, जिसने शत्रु से बदला लेने के लिए धोके और चालबाजी से भी काम लिया, ऐसा मनुष्य और उसके प्राइवेट जीवन पर दृष्टि डालो तो चकित हो जाओगे। सच है इस प्रकार की अवस्थाओं को देखकर ही मनुष्य कह उठता है कि वह मनुष्य नहीं किन्तु अवतार है उसके देसी भाइयों ने भी उसकी इन विचित्र शक्तियों के प्रभाव से उसे अवतार बना दिया।

विचारणीय सवाल है कि शिवाजी ने अपना जीवन कहांसे आरम्भ किया और कहां समाप्त किया। जिस समय शिवाजी उत्पन्न हुआ था उसका पिता क्या था और जब उन्नीसवें वर्ष में पहिला धावा किया था तो क्या था और जब वह मरा तो क्या हो गया। बड़े बड़े इतिहास वेत्ताओं ने उसकी वीरता और साहस की प्रशंसा की है। औरङ्गजेब के जैसे निर्दयी समय में उत्पन्न होकर आर्यजाति के गौरव का जीता कर देना शिवाजी का ही काम था और अपने नौकर और सम्बन्धियों से प्रेम पूर्वक बर्ताव रखता था। मरने से कुछ दिन पहले उसे समाचार मिला कि व्यका उत्साह को छोड़ बैठा है। सम्पूर्ण कार्य छोड़ वैराग्य धारण कर लिया है। यह सुन शिवाजी ने एक पत्र लिखा जिस का विषय यह था "प्यारे भाई! बहुत दिन हुए तुम्हारा पता नहीं मिला चित्त उदास है 'रघुपन्त' के पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम बहुत उदास हो और अपने शरीर की परवाह नही करते तुम्हारी सेना सुस्त पड़ गई है परन्तु तुम्हें कुछ परवाह नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगों को सन्देह है कि तुम बैरागी न हो जाओ मैं हैरान हूँ कि तुम अपने पिता के सच्चे दृष्टान्त को क्यों भूल गये चिरकाल उनके साथ रहे और उनकी संगीत से लाभ उठाया। विदित हो कि उन्होंने कैसी गम्भीरता व वीरता से कठिनाइयों का सामना करते हुये बड़े २ कार्य्य किये और नाम पैदा किया सदैव अपने आपकों भयङ्कर आपत्तियों से बचाया तुमको उनकी विद्वत्ता एवं गम्भीरता से लाभ उटाने के अनेक अवसर मिलते रहे तथा च मुझको भी जैसा अवसर मिला मैंने भी उनका यथाशक्य अनुसरण किया और एक राज्य की बुनियाद डाली मैं नहीं समझता कि आपने क्यों सब राज-कार्यों को छोड़ कर समय के ऊपर वैराग्य धारण कर लिया! यह वैरागी पन आपको शोभित नहीं होता जोकि आपने राजकार्य तथा कोषादि ऐसे मनुष्यों के हाथमें दे दिये जो समय पड़े पर सबको पचा जाएँ क्या तुम को यह उचित है कि वैराग्य धारण करके अपनी शारीरिक अवस्था का नाश करदो यह कैसी बुद्धिमत्ता है। और इसका क्या फल होगा मैं तुम्हारा बड़ा हूँ मेरी तरफ से तो कुछ न कुछ डर होना चाहिये। बस उठो निद्रा को त्यागो और वैरागी होनेका विचार मन से बिल्कुल हटादो, अधीरता एवं शोक को दूर करदो, अपने नित्य कर्मों में चित लगाओ, अपनी शारीरिक अवस्था का ध्यन करो और आराम की इच्छा करो। अपनी प्रजा की रक्षा करो अपने सैनिकों पर अधिकार जमाओ और अपने सब प्रकार के कामों को बड़ी बुद्धिमत्ता से एवं अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मचारियों से यथा योग्य कार्य लेते हुये संसार में यश पैदा करो। जब ऐसा होगा तो सच जानिये आपकी कीर्ति एवं साहस को सुनकर मेरा चित्त शान्त होगा। आपकी इस दशा को देखते हुए मेरा चित्त महान् दुःख-सागर में डूबा हुआ है, इस वास्ते उठो! कमर बांधों, अपनी अवस्था पर ध्यान दो और मेरे चित्त के दुःख को दूर करो, यह आयु आपके वास्ते वैराग्य धारण के लिये नहीं वरन् बड़े बड़े काम करके यश पैदा करने के लिये है। हाँ वृद्धावस्था का समय तो वैराग्य धारण करने का होता है- परन्तु आपने अभी ही से धारण कर लिया न मालूम आपने कौनसे काम कर लिये हैं जो कि अभी से ही शान्त हुये जाते हैं, देखें आप क्या करके दिखाते हैं।

यह शिक्षा शिवाजी ने अत्यन्त शुद्ध भाव एवं सच्चे हृदय से की थी। एक बार उसके बेटे ने एक ब्राह्मण की लड़की के ऊपर कुदृष्टि डाली पिता को खबर मिली तत्काल अपने प्यारे पुत्र को भी पकड़कर कैद कर लिया और उसपर पहरा बिठा दिया, इसी नाराजी के कारण सम्भाजी दिलेरखाँ से जा मिला था। शत्रु की स्त्रियाँ जब उसको मिली तो उनके साथ यथायोग्य वर्ताव से पेश आया और आदर सहित उनको उन्हीं के घर भिजवा दिया। शिवाजी दूसरे के मत से विरोध न रखता था। खानखाँ अपनी पुस्तक के दूसरे भाग में पृष्ठ ११० पर लिखता है कि शिवाजी का साधारण नियम यह था कि कोई मनुष्य मस्जिदों को हानि न पहुंचाये, औरतों को न छेड़े एवं मुसलमानों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के धर्म की हंसी न करे तथाच उसको जब कभी कहीं कुरआन हाथ आता तो किसी न किसी मुसलमान को दे देता था। औरतों का अत्यन्त आदर करता था और उनको उनके रिश्तेदारों में पहुंचा देता था अगर कोई लड़की हाथ आती तो उसके बाप के पास भिजवा देता। लूट-खसोट में गरीबों और काश्तकारों की रक्षा करता था। गौ और ब्राह्मणों के लिये तो वह एक देवता था। यद्यपि बहुत से मनुष्य उसको लालची बताते हैं परन्तु उसके जीवन के कामों को देखने से विदित हो जाता है कि वह जुल्म और अन्याय से धन कमाकर इकट्ठा करना अत्यन्त नीच काम समझता था, यद्यपि शत्रु के धन को वा शत्रु के राज्य से दौलत लूटने को अच्छा समझता था। इसलिये दिलेरखाँ उसके राज्य से बहुत सा माल व धन लूटकर ले चला था शिवाजी को खबर मिली तत्काल उसका पीछा किया और माल वापिस लाकर मालिकों को दे दिया।

शिवाजी की सफलता उसकी वीरता पर निर्भर है और वह बुद्धिमान् ऐसा था कि मानों जादू का पुतला था जो मनुष्य एक बार उसके हाथ आगया वह कभी रुष्ट होकर नहीं गया। शत्रु की सेना से उसको अनेक बार हिन्दू व मुसलमान मिले परन्तु उसकी सेना से सम्भाजी को छोड़ और कोई शत्रु के साथ नहीं मिला। शिवाजी अपने धर्म पर अत्यन्त दृढ़ था रामायण महाभारत इत्यादि ऐतिहासिक व धर्म सम्बन्धी पुस्तकों के अवलोकन व श्रवण करने का अधिक प्रेमी था जो कि कभी २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युद्धस्थल से ही कथा श्रवण करने को चला जाता था। जहाँ कहीं दस बीस कोस पर धर्म-चर्चा एवं मत मतान्तरों के शास्त्रार्थ होते थे वहाँ अवश्य ही पहुंचता था। पूजा और नित्यकर्म में सदैव संलग्न रहता था।

पिछले पृष्ठों में शिवाजी का राज्यशासन और उसकी वीरता एवं दिलेरी का वर्णन कर चुके हैं पूर्व इसके कि हम शिवाजी के जीवन के सक्षिप्त इतिहास को समाप्त करें हम उचित समझते हैं कि कुछ उसके शासन का भी दिग्दर्शन कराएँ जिससे मालूम हो कि राज्य-प्रबन्ध से कैसे उत्तम दिमाग़ और बुद्धि का आदमी था यह भी मालूम हो कि शिवाजी न केवल उत्तम दर्जे का सिपाही ही था किन्तु नीतीज्ञ और राजशासक भी एक ही था।

शिवाजी का राज्य-प्रबन्ध

शिवाजी ने राज्य-प्रबन्ध के लिये एक राजसभा बना रखी थी जिसके आठ सभासद् थे जिसका नाम अष्टप्रधान था आठ राजविभागों के उत्तम २ प्रबन्धकर्त्ता उसके सभासद् थे।

१—मुख्यप्रधान—पेशवा राजमन्त्री था और राजा से उतर कर रियासत का सबसे उत्तम पदवीयुक्त था। दरबार में राज-सिंहासन से नीचे दाईं ओर इसका स्थान था।

२—सेनापति दरबार में बाईं ओर दूसरे स्थान पर बैठता था। गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया के कमाण्डर-इन-चीफ़ की जगह रखता था।

३—अमात्य—यह कोषाध्यक्ष का कार्य करता था।

४—सचिव—सरकारी चिट्ठी पत्री का अध्यक्ष था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५—मन्त्री जो राजा का प्राइवेट सेक्रेटरी था।

६—सुमन्त अर्थात् परराष्ट्र सचिव।

७—पंडितराव जो राजा का मुख्य पंडित था। शास्त्रों में उसकी व्यवस्था प्रमाणित समझी जाती थी।

८—व्यायाधीश।

शिवाजी का सम्पूर्ण इलाका दो प्रकार का था, यानी पहाड़ी और मैदान था। इलाके मैदान भिन्न-भिन्न प्रान्तों में बटा हुआ था। शिवाजी के राज्य में एक और भी रीति थी वह यह थी कि जो प्रान्त स्थाई रूप से उनके अधीन था वह शिवस्वराज कहलाता था और वह प्रान्त जो मुग़लों के अधीन था मगर उसका चतुर्थांश दिया करता था वह मुगलिया कहलाता था।

जहां केवल चौथ सम्बन्ध था वहां वह केवल मालगुजारी का प्रबन्ध रखता था और बाकी प्रबन्ध से कुछ सम्बन्ध न था। शिवाजी के पास २८० दुर्ग थे। प्रत्येक दुर्ग के प्रधान अफसर का नाम हवलदार था और उसके नीचे किले की दीवार के हरएक हिस्से के नाम से उसके असिस्टेन्ट थे। इनके अतिरिक्त एक ब्राह्मण क्लर्क किले में रहता था और एक कर्मचार. प्रबन्ध के लिये था। सम्पत्ति सम्बन्धी प्रबन्ध एक ब्राह्मण के सुपुद था। सैनिक तथा रसद आदि का प्रबन्ध कमसरियट वाले कर्मचारी के आधीन था। किले के चारों ओर सफ़ाई आदि के नियम नियन्त्रित थे और बनका प्रबन्ध भी उत्तम था।

मैदान का मण्डल जैसे कि हमने पूर्व वर्णन किया कई एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रान्तों में विभक्त था सामान्यतया प्रत्येक प्रान्त की आमदनी एक अथवा सवालाख के लगभग थी। प्रत्येक सूबेदार का वेतन १०० के लगभग होता था। कर-प्राप्ति आदि का प्रबन्ध ग्रामीणों एवं ग्रामाध्यक्षों के सुपुद होता था। अंग्रेजी सरकार के समान पृथ्वी का नाप सम्पूर्ण कागजों में लिखा रहता था, दुर्भिक्ष आदि के समय में तकावी दी जाती थी और क़िस्तों से कर लिया जाता था। दीवानी अभियोग ग्रामों की पंचायतों के सुपुर्दद होते थे!

फ़ौजदारी का काम सूबेदार किया करते थे। हिसाब किताब नितान्त स्वच्छ और उत्तम था। वर्ष की समाप्ति पर जांच हुआ करती थी बकाया निकाली जाया करती थी। जो कुछ भी राज्य की ओर निकलता तत्काल दे दिया जाता था।

पैदल सेना में १० सिपाहियों पर एक नायक नियत था १५ नायकों पर एक हवलदार नियत था। दो हवलदारों पर एक सहास्तक नामी अध्यक्ष तथा सात अध्यक्षों पर जमादार था १० जमादारों पर एक अधिकारी था। ये अधिकारी दो प्रकार के थे। १ वारगीदार २ सत जिलेदार। एक के पास राजकीय घोड़ा और दूसरे के पास अपना होता था। प्रत्येक उच्च सेनाध्यक्ष के पास एक क्लर्क रहता था प्रत्येक को वेतन नक़द मिलता था। शिक्षा के लिये मन्दिरों तथा पाठशालाओं एवं पण्डितों के नाम जागीर होती थी। शिवाजी उत्पन्न हुआ तो दक्षिण में संस्कृत का प्रचार बहुत कम था। परन्तु शिवाजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के उत्साह एवं पुरुषार्थ से अधिक होगया शिवाजी के समय में दशहरा का समारोह उत्तमतया मनाया जाता था। इस अवसर पर प्रत्येक सिपाही की सम्पत्ति की एक सूची बनाई जाया करती थी यदि किसी की कुछ कमी हो जाती तो राज की ओर से पूरी की जाती थी। परन्तु लूट में से किसी को कुछ रखना नहीं होता था। शिवाजी की रक्षा एवं गुप्त प्रबन्ध अत्यन्त उत्तम था। उसे प्रत्येक स्थान के समाचार सबसे पहले और सच्चे सच्चे मिल जाया करते थे शत्रु के सेना सम्बन्धी समाचार पूर्ण प्रकार से मिल जाया करते थे। रास्तों अथवा दर्रों पर बराबर कर्मचारी नियत्त थे जो क्षण क्षण का समाचार देते रहते थे। सम्पूर्ण इतिहास वेत्ता सहमत हैं कि शिवाजी के प्रबन्ध में किसी प्रकार की घूँस (रिशवत) आदि नही ली जाती थी क्योंकि शिवाजी न्यायी एवं विचारशील था।

॥ समाप्तम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने बालकों में

सच्ची राष्ट्र-भक्ति और स्वतन्त्र्य भावना

जागृत करने के लिये

हमारा प्रकाशित राष्ट्रीय साहित्य पढ़िये

१. छत्रपति शिवाजी	मूल्य १॥) सजिल्द
२. हरिसिंह नलवा	,, १।) ,,
३. महाराणा प्रताप	,, १॥) ,,

जयभारत साहित्य मंडल, नई सड़क, देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दू जाति के गौरव में चार चांद लगाने वाले

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप का नाम और हिन्दू जाति के प्रति की गई उनकी सेवाओं से भारतवर्ष का बच्चा २ परिचित है। उन्होंने २० वर्ष तक जंगलों और पहाड़ों की खाक छान कर भूखे और नंगे रहकर हिन्दू संस्कृति की रक्षा की है, अत्याचारियों से बदला लिया है और धर्म की मर्यादा अक्षुण्ण रक्खी है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं महाराणा प्रताप की अद्भुत जीवन घटनायें एकत्रित की गई हैं साथ ही इतिहास की ऐसी गुप्त और रोचक घटनाओं का वर्णन है कि पाठक चकित रह जाता है।

⊙

मूल्य १॥)

⊙

जय भारत साहित्य मण्डल लिमिटेड

नई सड़क देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi